

# श्रमण

## ŚRAMAṆA

(A Quarterly Research Journal of Jain Studies)



Vol. 49 No. 10 - 12

**OCTOBER - DECEMBER 1998**



पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी

PĀRŚVANĀTHA VIDYĀPĪṬHA, VARANASI



Pick a **PINKY**  
and  
let your writing sparkle

## LION **PINKY**

---

the Prettiest Pencil  
in town

Now from Lion Pencils  
here's another novelty....

The Pearl finished LION PINKY Pencil,  
a pretty pencil to behold.  
Superb in looks, super smooth in writing with its  
11B Lead strongly bonded to give you unbreakable  
points. -

Also available with rubber tip and hexagonal

Other popular brands of  
Lion Pencils are :  
Lion **MOTO**, Lion **TURBO**, Lion **SWEETY**,  
Lion **CONCORD**, Lion **EXECUTIVE** and  
Lion **GEEMATIC** Drawing Pencils

### **LION PENCILS LTD.**

101/102, 95 Marine Drive,  
BOMBAY - 400 002



# श्रमण

पार्श्वनाथ विद्यापीठ की त्रैमासिक शोध-पत्रिका

अंक १०-१२

अक्टूबर- दिसम्बर १९९८

---

प्रधान सम्पादक  
प्रोफेसर सागरमल जैन

---

सम्पादक

डॉ० शिवप्रसाद

प्रकाशनार्थ लेख-सामग्री, समाचार, विज्ञापन एवं सदस्यता आदि के लिए सम्पर्क करें

सम्पादक

श्रमण

पार्श्वनाथ विद्यापीठ

आई० टी० आई० मार्ग, करौंदी

पो० आ०- बी० एच० यू०

वाराणसी 221005 ( उ० प्र० )

दूरभाष : 316521, 318046

फैक्स : 0542- 318046

ISSN 0972-1002

वार्षिक सदस्यता शुल्क

संस्थाओं के लिए : रु० 150.00

व्यक्तियों के लिए : रु० 100.00

इस अंक का मूल्य : रु० 50.00

आजीवन सदस्यता शुल्क

संस्थाओं के लिए : रु० 1000.00

व्यक्तियों के लिए : रु० 500.00

---

नोट : सदस्यता शुल्क का चेक या ड्राफ्ट पार्श्वनाथ विद्यापीठ के नाम से ही भेजें।

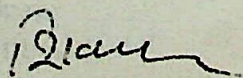


## सम्पादकीय

पार्श्वनाथ विद्यापीठ (पूर्व पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान) द्वारा गत ४९ वर्षों से निरन्तर श्रमण नामक शोध पत्रिका का प्रकाशन होता आ रहा है। इसमें जैनधर्म-दर्शन के विविध पक्षों के महत्त्वपूर्ण लेखों का विशाल संग्रह अब तक प्रकाशित हो चुका है। पहले यह शोध पत्रिका मासिक प्रकाशित होती रही परन्तु अब १९९० से यह त्रैमासिक रूप में प्रकाशित हो रही है। बहुत समय से सुधी पाठकों की मांग थी की श्रमण में प्रकाशित लेखों की सूची का प्रकाशन हो जिससे विद्वत्जन अपने अनुकूल विषयों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकें। पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पूर्व निदेशक और वर्तमान में मार्गदर्शक प्रो० सागरमल जैन की प्रेरणा से यह कार्य प्रारम्भ किया गया। प्रथम वर्ग में लेखों को वर्षक्रमानुसार रखा गया है। द्वितीय वर्ग में लेखकों का वर्ण क्रमानुसार वर्गीकरण करते हुए उनके लेखों की अकारादिक्रम से सूची दी गयी है जिसे श्रमण के अप्रैल-सितम्बर १९९८ के अंक में हम प्रकाशित कर चुके हैं। इस अंक में श्रमण में प्रकाशित लेखों को विषयानुक्रम से रखा गया है। इसके अन्तर्गत सात खण्ड हैं। प्रथम खण्ड में दर्शन-तत्त्वमीमांसा और ज्ञान मीमांसा; दूसरे खण्ड में धर्म, साधना, नीति एवं आचार, तीसरे खण्ड में आगम एवं साहित्य; चौथे खण्ड में इतिहास, जैन पुरातत्त्व एवं कला; पांचवें खण्ड में समाज एवं संस्कृति; छठे खण्ड में तुलनात्मक विषयों और अन्तिम खण्ड में शेष विविध विषयों को रखा गया है।


इस सूची को तैयार करने में मुझे विद्यापीठ के प्रवक्ता डॉ० विजय कुमार जैन, डॉ० सुधा जैन और डॉ० असीम कुमार मिश्र से सहयोग प्राप्त हुआ है। अक्षर सज्जा राजेश कम्प्यूटर्स एवं मुद्रण कार्य डिवाइन प्रिंटर्स ने पूर्ण किया है। मैं इन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

इस सूची को तैयार करने में जो भी त्रुटियां रह गयी हैं उनके लिए पाठक क्षमा करने की कृपा करेंगे ऐसी प्रार्थना है।



सम्पादक





# श्रमण

---

विषयानुसार लेख सूची

---





# श्रमण

श्रमण अतीत के झरोखे में

संकलनकर्ता

डॉ० शिवप्रसाद

डॉ० विजय कुमार जैन

डॉ० सुधा जैन

डॉ० असीम कुमार मिश्र

## प्रस्तुत अङ्क में

पृष्ठ

१. श्रमण : विषयानुसार लेख सूची

(१) दर्शन-तत्त्व मीमांसा और ज्ञान मीमांसा	३४९-३६७
(२) धर्म, साधना, नीति एवं आचार	३६८-३८९
(३) आगम और साहित्य	३९०-४१९
(४) इतिहास, पुरातत्त्व एवं कला	४१९-४३९
(५) समाज एवं संस्कृति	४३९-४७६
(६) तुलनात्मक	४७७-४८२
(७) विविध	४८२-४९२

२. साहित्य सत्कार

१-९

३. जैन जगत्

९-१८



लेख

लेखक

वर्ष

ई० सन्

पृष्ठ

## १. दर्शन-तत्त्व मीमांसा और ज्ञान मीमांसा

अकलंकदेव की दार्शनिक कृतियाँ

अजीवद्रव्य

अध्यात्मवाद और भौतिकवाद

अध्यात्मवाद : एक अध्ययन

अध्यात्मवादियों से

अन्तः प्रज्ञाशक्ति

अन्तर्गता

अन्तरालगति

अनेकान्त : अहिंसा

अनेकान्त अहिंसा का व्यापक रूप

अनेकान्त एक दृष्टि

अनेकान्त दर्शन

अनेकान्तवाद

अनेकान्तवाद और उसकी व्यावहारिकता

अनेकान्तवाद की व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता

डॉ० मोहनलाल मेहता

श्री हुकुमचन्द्र संगवे

डॉ० सागरमल जैन

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

पं० उदय जैन

दर्शनाचार्य मुनि योगेश कुमार

मुनि राजेन्द्रकुमार 'रत्नेश'

डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा

डॉ० जगदीशचन्द्र जैन

”

श्री ऋषभचंद जैन 'फौजदार'

मुनिश्री नगराज जी

डॉ० प्रतिभा जैन

डॉ० विजय कुमार

शीतलचंद जैन

२८	३	१९७७	३१-३४
२२	९	१९७१	१७-२२
३१	६	१९८०	१-६
१९	१-२	१९६७	५४-६४
२२	३	१९७१	१८-२४
३६	५	१९८५	२-४
३९	१२	१९८८	१९-२१
२८	५	१९७७	८-१३
१४	२	१९६२	७-८
१३	७-८	१९६२	५१-५२
३१	७	१९८०	१०-१२
४०	३	१९८९	१-१०
३४	५	१९८३	२-९
४७	१०-१२	१९९६	१३-३५
३१	१०	१९८०	२३-२७

## लेख

अनेकान्तवाद की व्यावहारिक जीवन में उपयोगिता अपने को जानिये  
 अभव्यजीव नवग्रैवेयक तक कैसे जाता है ?  
 अरविन्द का अनेकान्त दर्शन  
 अहं परमात्मने नमः  
 अशोक के अभिलेखों में अनेकांतवादी चिन्तन : एक समीक्षा  
 असंयत जीव का जीना चाहना राग है आकाश  
 आगम साहित्य में कर्मवाद  
 आचार्य दिवाकर का प्रमाण : एक अनुशीलन  
 आचार्य हरिभद्रसूरि का दार्शनिक दृष्टिकोण  
 आचारांग का दार्शनिक पक्ष  
 आचारांग की दार्शनिक मान्यतायें  
 आचारांग में उल्लेखित 'परमत'  
 आचारांग में सोऽहम् की अवधारणा का अर्थ  
 आत्म-अनात्म द्वन्द्ववैयर्थ्य

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३२	१	१९८१	१८-१९
५	७	१९५४	३१-३३
१९	८	१९६८	७-११
१३	१२	१९६२	६-८
४२	४-६	१९९१	१-१०
४४	१०-१२	१९९३	८-१३
४	३	१९५३	३-६
२०	६	१९६९	५-७
२२	७	१९७१	४-१२
१७	१-२	१९६५	३-६
२३	१	१९७१	१९-२३
३८	१२	१९८७	१-११
४	१०	१९५३	१-६
१७	७	१९६६	२१-२४
३५	७	१९८४	१-१०
३८	११	१९८७	९-१९



लेख	श्रमण : अतीत के झरोखे में	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आत्म परिमाण (विस्तार क्षेत्र) जैन दर्शन के सन्दर्भ में	मुनि योगेश कुमार	३५	१२	१९८४	२८-३६
आत्मबोध का क्षण	आचार्य आनन्द ऋषि	३४	४	१९८३	१०-११
आत्म विज्ञान	श्री गोपीचन्द धारीवाल	१६	९	१९६५	३१-३८
आत्मा और परमात्मा	डॉ० सागरमल जैन	३१	५	१९८०	१
आत्मा का बल	श्री किशोरीलाल मशरूवाला	५	३	१९५४	१-२
आत्मा की महिमा	श्री जयभगवान जी एडवोकेट	३	७-८	१९५२	३०
आधुनिक सन्दर्भ में जैन दर्शन	श्री बृजकिशोर पाण्डेय	३०	१२	१९७९	१८-२२
आप सम्यग् दृष्टि है या मिथ्या दृष्टि	प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	२	८	१९५१	३२-३६
आस्रव व बन्ध	श्री गोपीचन्द धारीवाल	१७	१-२	१९६५	१९-२५
आस्तिक और नास्तिक	डॉ० इन्द्र	५	७	१९५४	२७-३०
इन्द्रिय नियंत्रण से मोक्ष-प्राप्ति	श्री कृष्ण 'जुगनू'	३७	११	१९८६	५-७
ईश्वर और आत्मा : जैन दृष्टि	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	३१	६	१९८०	१०-१४
ईश्वरत्व; जैन और योग-एक तुलनात्मक अध्ययन	डॉ० ललितकिशोरलाल श्रीवास्तव	४१	१०-१२	१९९०	७१-८४
उच्चगोत्र और नीचगोत्र	डॉ० मोहनलाल मेहता	२२	१२	१९७१	३-४
उत्तराध्ययन का अनेकान्तिक पक्ष	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	२८	१२	१९७७	३-१०
उत्तराध्ययन में मोक्ष की अवधारणा	डॉ० महेन्द्रनाथ सिंह	४०	७	१९८९	३५-३८
उपासकदशांगसूत्र का आलोचनात्मक अध्ययन	डॉ० सुभाष कोठारी	३८	२	१९८६	८-१३

## लेख

एक सद्धिग्रा बहुधा वदन्ति

कर्म और अनीश्वरवाद

कर्म और कर्मबन्ध

कर्म का स्वरूप

कर्म का स्वरूप

कर्म की नैतिकता का आधार-तत्त्वार्थसूत्र के प्रसंग में

कर्मवाद व अन्यवाद

क्या जैन दर्शन नास्तिक दर्शन है ?

क्या जैनधर्म रहस्यवादी है ?

क्या धन-सम्पत्ति आदि कर्म के फल हैं

काल

कालचक्र

केवलज्ञान सम्बन्धी कुछ बातें

कर्म की विचित्रता- मनोविज्ञान की भाषा में

षड्द्रव्य : एक परिचय

गणधरवाद

गाँधी सिद्धान्त

गुणस्थान : मनोदशाओं का आध्यात्मिक विश्लेषण

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

पं० सुखलाल जी

श्री श्रीप्रकाश दुबे

डॉ० नन्दलाल जैन

डॉ० मोहनलाल मेहता

श्री रवीन्द्रनाथ मिश्र

डॉ० रत्ना श्रीवास्तव

डॉ० मोहनलाल मेहता

डॉ० लालचन्द जैन

डॉ० प्रद्युम्नकुमार जैन

पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

डॉ० मोहनलाल मेहता

डॉ० धूपनाथ

प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

डॉ० रत्नलाल जैन

श्री रमेश मुनि

डॉ० मोहनलाल मेहता

प्रो० रामचन्द्र मेहेन्द्र

श्री अभयकुमार जैन

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
४	७-८	१९५३	३-१०
१४	८	१९६३	९-१२
४५	१०-१२	१९९४	१०-२२
२२	३	१९७१	३-११
३५	३	१९८४	५-७
४५	७-९	१९९४	१-९
२२	५	१९७१	११-२०
३०	६	१९७९	३-१५
२८	८	१९७७	११-१७
२	९	१९५१	३०-३९
२०	७	१९६९	७-९
४६	१०-१२	१९९५	४२-४३
३	४	१९५२	१९-२२
४०	४	१९८९	३५-४१
२४	१२	१९७२	१४-१५
१०	२	१९५८	३-६
९	११-१२	१९५८	२८-२९
२८	३	१९७७	३-१४





जैन कर्म सिद्धान्तः एक विश्लेषण  
 जैन कर्म सिद्धान्त और मनोविज्ञान  
 जैन कर्म सिद्धान्त का उद्भव एवं विकास  
 जैन कर्म सिद्धान्त का क्रमिक विकास  
 जैन तर्कशास्त्र में बौद्ध प्रत्यक्ष प्रमाणवाद

”

”

”

जैन तर्कशास्त्र में ‘सन्निकर्ष-प्रमाणवाद’

जैनदर्शन

जैनदर्शन और अराविन्द दर्शन में एकत्व

और अनेकत्व सम्बन्धी विचार

जैनदर्शन और भक्ति : एक थीसिस

जैन दर्शन और मार्क्सवाद

जैनदर्शन का शब्द विज्ञान

जैनदर्शन का स्याद्वाद सिद्धान्त

जैनदर्शन की देन

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

डॉ० सागरमल जैन

डॉ० रत्नलाल जैन

श्री रवीन्द्रनाथ मिश्र

”

श्री लालचन्द जैन

”

”

”

”

सुश्री हीरा कुमारी

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
४५	१-३	१९९४	९४-१२७
४३	७-९	१९९२	६५-७०
३६	१०	१९८५	१९-२६
३६	९	१९८५	१६-२१
२७	३	१९७६	३-८
२७	४	१९७६	१०-१५
२७	५	१९७६	१५-१९
२७	६	१९७६	१२-२०
२३	१२	१९७२	८-१५
३	३	१९५२	९-१५
३५	७	१९८४	१६-२०
१६	४	१९६५	३-८
३२	१०	१९८१	१६-२०
१२	८	१९६१	२८-३१
२७	१	१९७५	३-१४
७	४	१९५६	१३-१४



## लेख

जैनदर्शन की पृष्ठभूमि में ईश्वर का अस्तित्व  
जैनदर्शन के अन्तर्गत जीव तत्त्व का स्वरूप  
जैनदर्शन में कर्म का स्वरूप  
जैनदर्शन के सन्दर्भ में भाषा की उत्पत्ति  
जैनदर्शन में अजीव तत्त्व का स्थान  
जैनदर्शन में अनेकान्तवाद का स्वरूप  
जैनदर्शन में आत्मस्वरूप  
जैनदर्शन में कथन की सत्यता  
जैनदर्शन में कर्मवाद की अवधारणा  
जैनदर्शन में ज्ञान का स्वरूप  
जैनदर्शन में नैतिकता की सापेक्षता  
जैन तत्त्वविद्या में 'पुद्गल' की अवधारणा  
जैन तर्क शास्त्र के सप्तभंगी नय की आगमिक व्याख्या  
जैन दर्शन  
जैन दर्शन में जन्म और मृत्यु की प्रक्रिया  
जैन दर्शन में जीव का स्वरूप  
जैन दर्शन में परीषह जय का स्वरूप एवं महत्त्व

## लेखक

डॉ० विनोदकुमार तिवारी  
“  
डॉ० राधेश्याम श्रीवास्तव  
कु० अर्चना पाण्डेय  
डॉ० विनोदकुमार तिवारी  
श्री भिखारीराम यादव  
डॉ० उदयचन्द जैन  
सुश्री अर्चना पाण्डेय  
कु० प्रमिला पाण्डेय  
डॉ० रामजी सिंह  
डॉ० सागरमल जैन  
श्री अम्बिकादत्त शर्मा  
डॉ० भिखारीराम यादव  
श्री उदय मुनि  
श्री अम्बिकादत्त शर्मा  
श्री विजय कुमार  
कु० कमला जोशी

## वर्ष

३६  
३३  
२४  
३७  
३४  
३२  
३६  
३६  
२३  
२४  
४६  
३९  
३९  
२९  
३८  
३७  
४०

## अंक

७  
१२  
५  
५  
७  
१०  
१०  
५  
३  
३  
४-६  
१  
१०  
२  
९  
११  
११

## ई० सन्

१९८५  
१९८२  
१९७३  
१९८६  
१९८३  
१९८१  
१९८५  
१९८५  
१९७२  
१९७३  
१९९५  
१९८७  
१९८८  
१९७७  
१९८७  
१९८६  
१९८९

## पृष्ठ

९-११  
१२-१५  
३१-३५  
११-१८  
१८-२१  
१-९  
१-११  
६-९  
२२-२७  
२७-३२  
१२३-१३३  
६-१५  
१-२६  
१४-१७  
२-९  
९-१५  
४१-४५

## लेख

जैन दर्शन में प्रत्यक्ष का स्वरूप (विशेष शोध निबन्ध)

जैनदर्शन में प्रमाण (विशेष शोध निबन्ध)

जैनदर्शन में पुद्गल द्रव्य

जैनदर्शन में पुद्गल स्कन्ध

जैनदर्शन में प्रमाण का स्वरूप

”

”

”

”

”

जैनदर्शन में बन्ध और मुक्ति

जैनदर्शन में बन्ध का स्वरूप: वैज्ञानिक

अवधारणाओं के सन्दर्भ में

जैनदर्शन में बंधन मोक्ष

जैन दर्शन में ब्रह्माद्वैतवाद

जैन दर्शन में मुक्ति की अवधारणा

जैन दर्शन में शब्दार्थ सम्बन्ध

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा

”

डॉ० रमेशचन्द्र जैन

श्री रमेशमुनि शास्त्री

श्री रमेशमुनि शास्त्री

”

”

”

”

”

श्री हरeram सिंह

श्री अनिलकुमार गुप्त

श्री विजय कुमार

डॉ० लालचन्द जैन

श्री पाण्डेय रामदास ‘गंभीर’

डॉ० सुदर्शनलाल जैन

अंक

३

८

४

११

३

४

५

६

७

८

४

ई० सन्

१९८२

१९८१

१९७४

१९७७

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७६

पृष्ठ

१-२४

१-३४

८-१५

१०-१२

९-१३

९-१३

१६-२२

७-९

१५-१८

२३-२९

२५-३०

३-९

१०-१९

११-२६

२-१२

२७-३९

१९७५

१९८६

१९७९

१९८०

१९९२

५

६

९

१०

४-६

२६

३७

३०

३१

४३



## लेख

जैन दर्शन में सर्वज्ञता का स्वरूप  
जैन दर्शन में स्याद्वाद और उसका महत्व  
जैन दार्शनिक साहित्य में अभाव प्रमाण :  
एक मीमांसा  
जैन दार्शनिक साहित्य में ईश्वरवाद की समालोचना  
जैन दृष्टि से ज्ञान-निरूपण  
जैनधर्म का लेश्या-सिद्धान्त : एक विमर्श  
जैनधर्म की प्रसंगिकता  
जैनधर्म-दर्शन का सारतत्त्व  
जैनधर्म : मानवतावादी दृष्टिकोण : एक मूल्यांकन  
जैनधर्म में आत्मतत्त्व निरूपण  
जैनधर्म में 'एकान्त नियतिवाद' और  
'सम्यक् नियति' का भेद  
जैनधर्म में कर्मयोग का स्वरूप  
जैनधर्म में मानव  
जैनधर्म में मानवतावाद

## श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री ललितकिशोरलाल श्रीवास्तव	२५	७	१९७४	२३-२८
श्री रामजी	२३	१०	१९७२	१८-२२
श्री रमेशमुनि शास्त्री	३०	४	१९७९	२३-३५
श्रीमती मंजुला भट्टाचार्या	४३	१०-१२	१९९२	६७-६९
श्री रमेशमुनि शास्त्री	२९	११	१९७८	२९-३५
डॉ० सागरमल जैन	४६	४-६	१९९५	१५०-१६५
डॉ० निजामुद्दीन	३१	८	१९८०	१९-२५
डॉ० सागरमल जैन	४५	१-३	१९९४	१-१३
डॉ० ललितकिशोरलाल श्रीवास्तव	४०	३	१९८९	३४-४५
प्रो० रामदेव राम	३३	४	१९८२	१-९
पं० फूलचन्द सिद्धान्तशास्त्री	१३	७-८	१९६२	६-८
श्री कन्हैयालाल सरावगी	३०	११	१९७९	१५-२०
डॉ० रज्जन कुमार/डॉ० सुनीता कुमारी	४१	१-३	१९९०	१०५-११२
श्री कस्तूरमल बाँठिया	१७	३	१९६६	२५-३२

जैनधर्म में शुभ और अशुभ की अवधारणा  
 जैनधर्मानुसार जीव, प्राण और हिंसा  
 जैन नीति-दर्शन एवं उसका व्यावहारिक पक्ष  
 जैन न्यायदर्शन : समन्वय का मार्ग  
 जैन पुराणों में पुनर्जन्म की कथायें-

”  
 जैनभाषादर्शन की समस्याएँ

जैन महाकवि पं० बनारसीदास का रहस्यवाद  
 जैन मिस्टीसिज्म

”  
 जैन वाङ्मय में आयुर्वेद

जैन श्रमण साधना: एक परिचय

जैन संस्कृति और मिथ्यात्व

जैन संस्कृति का दिव्य सन्देश-अनेकान्त

जैन संस्कृति में सत्य की अवधारणा

जैन सिद्धान्त

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री सुभाषचन्द्र जैन  
 डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा  
 डॉ० डी० आर० भंडारी  
 डॉ० रमेशचन्द्र जैन  
 श्री धन्यकुमार राजेश

”

श्रीमती अर्चनारानी पाण्डेय  
 श्री गणेशप्रसाद जैन  
 प्रो० यू० ए० आसराणी

”

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव  
 डॉ० सुभाष कोठारी  
 पं० बेचरदास देशी  
 मुनि ज्योतिर्धर  
 डॉ० राजदेव दुबे एवं प्रमोदकुमार सिंह  
 डॉ० मोहनलाल मेहता

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३०	६	१९७९	२३-३२
१९	७	१९६८	१८-२२
३६	७	१९८५	१-८
२६	५	१९७५	२३-२७
२२	५	१९७१	२३-३१
२२	६	१९७१	१०-१५
४२	१-३	१९९१	९३-९६
२०	२	१९६८	१८-२२
२४	६	१९७३	२७-३८
२४	७	१९७३	३२-४१
२०	१	१९६८	१४-२२
४२	१-३	१९९१	३३-५०
५	३	१९५४	४०
३७	१	१९८५	२-७
३५	४	१९८४	१२-१५
२९	८	१९७८	३-१३



## लेख

## लेखक

## ई० सन्

## अंक

## वर्ष

## पृष्ठ

जैनागमों में ज्ञानवाद

डॉ० मोहनलाल मेहता

ज्ञान भी सम्पदा है

मुनिश्री रामकृष्ण

ज्ञान की खोज में

मुनिश्री जयन्तीलाल जी

ज्ञान-प्रमाण और जैन दर्शन

श्री भिखारीराम यादव

ज्ञान सापेक्ष है

प्रो० विमलदास

डॉ० गोविन्द त्रिगुणायक का “जैन दर्शन

व संत-कवि” सम्बन्धी वक्तव्य

श्री अगरचन्द नाहटा

तत्त्वसूत्र

संन्यासी राम

तत्त्वार्थराजवार्तिक में वर्णित बौद्धादिमत

डॉ० उदयचन्द जैन

तर्क का क्षेत्र

प्रो० विमलदास जैन

तीर्थंकर और दुःखवाद

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

तीर्थंकरवाद

श्री कस्तूरमल बाँठिया

त्याग का मनोविज्ञान

श्री माँ अरविन्दाश्रम

तीर्थंकर, बुद्ध और अवतार की अवधारणा का

श्री रमेशचन्द्र गुप्त

तुलनात्मक अध्ययन

डॉ० सुरेन्द्र वर्मा

द्वन्द्व और द्वन्द्व निवारण (जैन दर्शन के विशेष-प्रसंग में)

१०-१२

१९९६

४७

१-१३

५-९

७-११

१७-२१

३४-३६

५-११

२८-३६

१-८

३७-४८

३१-३६

२६-२८

९-१६

२९-३३

२७-३७

१९५४

१९८१

१९५२

१९८२

१९५२

१९६४

१९८८

१९८४

१९५२

१९७३

१९५६

१९६५

१९८५

## लेख

दर्शन और धर्म  
दर्शन और ज्ञान जब चरित्र में आया  
दर्शन और धर्म  
दर्शन और विज्ञान : एक चिन्तन  
द्वादशारनयचक्र का दार्शनिक अध्ययन  
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र का अवदान  
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र का अवदान  
धर्म एवं दर्शन-एक गवेषणात्मक विवेचन  
धर्म और दर्शन  
”

नय और निक्षेप-एक विश्लेषण

नयवाद: एक दृष्टि

निक्षेप में नय योजना

निक्षेपवाद : एक परिदृष्टि

निह्यववाद

निश्चय और व्यवहार

निश्चय और व्यवहार : पुण्य और पाप

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री  
श्री महेन्द्रसागर प्रचण्डिया  
पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री  
श्री गणेशमुनि शास्त्री  
श्री जितेन्द्र बी० शाह  
डॉ० सागरमल जैन  
संगीता झा  
मुनि राजेन्द्रकुमार रत्नेश  
मुनिश्री सुशीलकुमार जी  
”  
डॉ० कृपाशंकर व्यास  
श्री कन्हैयालाल सरावगी  
श्री उदयचंद जैन  
श्री रमेशमुनि शास्त्री  
श्री मोहनलाल मेहता  
पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री  
पं० दलसुख मालवणिया

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१६	७	१९६५	३-७
३६	७	१९८५	१८-१९
१४	२	१९६२	९-१३
१६	९	१९६५	८-१२
४३	७-९	१९९२	५९-६३
३७	१२	१९८६	१-२०
४०	११	१९८९	३०-४०
३६	१०	१९८५	१६-१८
८	१	१९५६	२०-२३
८	२	१९५६	२३-२८
३२	१२	१९८१	३५-४८
२९	१०	१९७८	१४-१८
२३	४	१९७२	१३-१७
२५	५	१९७४	१०-१५
७	३	१९५६	५-१२
२५	१२	१९७४	३-८
२५	१०	१९७४	३-१०



लेख	श्रमण : अतीत के झरोखे में	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
त्याय सम्पन्न विभव		२	१	१९५०	९-१२
पंचकारण समवाय		४८	१०-१२	१९९७	७३-८०
परमतत्त्व : आचार्य विनोबा भावे की दृष्टि में		३६	४	१९८५	२२-२६
परमाणु		२०	११	१९६९	५-७
परिग्रह मीमांसा		२	५	१९५१	९-१४
पुद्गल		२०	९	१९६९	२०-२२
पुद्गल : एक विवेचन		२५	१०	१९७४	१४-१८
पुनर्जन्म सिद्धान्त की व्यापकता		२४	४	१९७३	३-१०
प्रातिभज्ञानात्मक चिन्तन : सापेक्ष चिन्तन		३४	२	१९८२	५-१७
प्रत्येक आत्मा परमात्मा है		१५	२	१९६३	३१-३२
प्रमाणवाद : एक पर्यवेक्षण - क्रमशः		२५	६	१९७४	३-१३
”		२५	७	१९७४	७-१८
”		२५	८	१९७४	१३-२२
प्रमाण-लक्षण-निरूपण में प्रमाण मीमांसा का अवदान		४८	४-६	१९९७	१३३-१४०
प्रमाण स्वरूप विमर्श - क्रमशः		२४	२	१९७२	३-१५
”		२४	३	१९७३	३-११
प्रमेय : एक अनुचिन्तन		२३	३	१९७२	११-१४

प्रलय से एकलय की ओर  
प्रवर्तक एवं निवर्तक धर्मों का मनोवैज्ञानिक  
विकास एव उनके दार्शनिक एवं सांस्कृतिक प्रदेश  
प्राचीन जैन आगमों में चार्वाक दर्शन का प्रस्तुतीकरण  
प्राचीन जैन ग्रंथों में कर्म सिद्धान्त का विकासक्रम  
बंधन से अलंकार  
बन्ध के कार्य में मिथ्यात्व और कषाय की भूमिकाएं  
ब्रह्माद्वैतवाद का समालोचनात्मक परिशीलन

”

भगवान् महावीर का अध्यात्म दर्शन  
भगवान् महावीर का ईश्वरवाद  
भगवान् महावीर का तत्त्वज्ञान  
भारतीय दर्शनों की आत्मा  
भारतीय दर्शनों की समन्वय परम्परा  
भारतीय दर्शनों में आत्मा  
भारतीय संस्कृति में दान का महत्त्व  
भारतीय समाज का आध्यात्मिक दर्शन

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

मुनि राजेन्द्र कुमार 'रत्नेश'

डॉ० सागरमल जैन

”

डॉ० अशोक सिंह  
सुश्री मोहिनी शर्मा  
डॉ० रतनचन्द्र जैन  
डॉ० लालचन्द जैन

”

उपाध्याय श्री अमरमुनि  
डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा  
कु० मंजुला मेहता  
उपाध्याय श्री अमरमुनि जी  
डॉ० एन० के० देवराज  
श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा  
श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री  
श्री देवेन्द्र कुमार

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३९	५	१९८८	२-४
३०	८	१९७९	१४-२०
४६	१-३	१९९५	४६-५८
४३	१०-१२	१९९३	१९-२८
४	४	१९५३	३-५
३४	६	१९८३	२-८
३०	१०	१९७९	३-१३
३१	२	१९७९	९-२२
१४	६-७	१९६३	१-५
२६	१०	१९७५	९-१२
२६	१-२	१९७४	६३-६७
१२	९	१९६१	९-११
१२	९	१९६१	२१-२४
१०	४	१९५९	१९-२६
२०	७	१९६९	१०-२०
१	१२	१९५०	२७-२९



## लेख

भेद में अभेद का सर्जक स्याद्वाद  
 भेद विज्ञान : मुक्ति का सिंहद्वार  
 भौतिकवाद एवं समयसार की सप्तभंगी व्याख्या  
 मन और संज्ञा  
 मन की शक्ति बनाम सामायिक  
 मन-निग्रह  
 मन, शक्ति, स्वरूप और साधना : एक विश्लेषण  
 महाकवि स्वयंभू का प्रकृति दर्शन  
 महावीर के समकालीन विभिन्न आत्मवाद एवं  
 उसमें जैन आत्मवाद का वैशिष्ट्य  
 महावीर संदेश-दार्शनिक दृष्टि  
 महापण्डित राहुल सांकृत्यायन के जैनधर्म  
 सम्बन्धी मन्तव्यों की समालोचना  
 मानव  
 मानवतावादी समाज का आधार अहिंसा  
 मानवव्यक्तित्व का वर्गीकरण  
 मुनिराम सिंह का उग्र अध्यात्मवाद

## लेखक

श्री छगनलाल शास्त्री  
 डॉ० सागरमल जैन  
 डॉ० केवलकृष्ण मित्तल  
 श्री रमेशमुनि शास्त्री  
 युवाचार्य श्री महाप्रज्ञ  
 श्री अभयमुनि जी महाराज  
 डॉ० सागरमल जैन  
 डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन  
 डॉ० सागरमल जैन  
 श्री हरिओम् सिंह  
 डॉ० सागरमल जैन  
 पुष्पा धारीवाल  
 मुनिश्री सुशीलकुमार जी  
 डॉ० त्रिवेणीप्रसाद सिंह  
 डॉ० देवेन्द्र कुमार

## वर्ष

१४  
 ३१  
 २९  
 २८  
 ३४  
 ६  
 ४६  
 २४  
 ४६  
 ३१  
 ४५  
 ६  
 ११  
 ४१  
 १९

## अंक

२  
 ९  
 ८  
 ९  
 २  
 १२  
 ४-६  
 १२  
 १-३  
 ५  
 ४-६  
 ५  
 २  
 ४-६  
 ६

## ई० सन्

१९६२  
 १९८०  
 १९७८  
 १९७७  
 १९८२  
 १९५५  
 १९९५  
 १९७३  
 १९९५  
 १९८०  
 १९९४  
 १९५५  
 १९५९  
 १९९०  
 १९६८

## पृष्ठ

२६-२८  
 ३-११  
 १४-२०  
 २५-२८  
 १८-२२  
 ३६-३७  
 ९७-१२२  
 ३-५  
 ५९-६८  
 १८-२१  
 १७९-१८४  
 २४-३६  
 ७-११  
 ४१-५०  
 १२-२२

## लेख

मुनि वारिषेण का सम्यक्त्व  
मूल्य और मूल्यबोध की सापेक्षता का सिद्धांत  
मूल्यों का संकट और आध्यात्मिकता  
मोक्ष मीमांसा में जैन दर्शन का योगदान  
यज्ञ : एक अनुचिन्तन - क्रमशः

”  
रूपी और अरूपी

लब्धिफल

लब्धियां

लेश्या : एक विश्लेषण

वनस्पति की गतिशीलता

वनस्पति विज्ञान

वास्तविकतावाद और जैन दर्शन

विग्रहगति एवं अन्तराभाव

विश्व का निर्माण तत्त्व : द्रव्य

विश्व विज्ञान

वृत्ति : बोध और विरोध

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

डॉ० सागरमल जैन

डॉ० देवेन्द्र कुमार

श्री धन्यकुमार राजेश

श्री सुदर्शनलाल जैन

”

डॉ० मोहनलाल मेहता

पं० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह

”

श्री रमेशमुनि शास्त्री

श्री कोमलचन्द शास्त्री

श्री पं० बेचरदास दोशी

मुनिश्री महेन्द्रकुमार 'द्वितीय'

डॉ० कोमलचंद जैन

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

पं० बेचरदास जी दोशी

महोपाध्याय चन्द्रप्रभासागर

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१५	५-६	१९६४	४२-४७
४३	१-३	१९९२	१-२२
१६	८	१९६५	२०-२३
२२	९	१९७१	३-९
१७	११	१९६६	३१-३८
१७	१२	१९६६	१५-२७
२०	४	१९६९	५-७
१७	४	१९६६	२९-३९
१७	१-२	१९६५	७३-८४
२७	८	१९७६	१४-१७
१२	३	१९६१	१२-१५
१२	३	१९६१	१०-११
१९	१२	१९६७	५-१७
२०	१२	१९६९	२२-२५
१८	३	१९६७	३२-३६
१२	२	१९६०	१६-१९
४४	४-९	१९९३	११-१६



## लेख

व्युत्सर्ग आवश्यक  
शब्द का वाच्यार्थ जाति या व्यक्ति  
शब्दों की अर्थ मीमांसा  
षड्जीविनिकाय में त्रस एवं स्थावर के  
वर्गीकरण की समस्या  
षड्वाश्यक में सामायिक  
श्रोतेन्द्रिय की प्राप्यकारिता : एक समीक्षा  
संवर और निर्जरा

संसार का अन्तरंग प्रदेश  
संस्कृत साहित्य में कर्मवाद  
सत्य के आवरण या मूच्छाएं  
'सत्यं स्वर्गस्य सोपानम्'  
सम्यग् ज्ञान और मिथ्या ज्ञान  
सम्यक् दृष्टि और मिथ्या दृष्टि  
”  
सबसे बड़ा प्रश्न - मैं कौन हूँ

समन्तभद्र द्वारा क्षणिकवाद की समीक्षा

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	६	१९७७	१७-२०
कु० अर्चना पाण्डेय	३६	९	१९८५	९-१३
श्री रमेशमुनि शास्त्री	२८	४	१९७७	२२-२६
डॉ० सागरमल जैन	४४	४-६	१९९३	१३-२१
श्री हुकुमचंद संगवे	२२	११	१९७१	११-१६
श्री नंदलाल जैन	३३	३	१९८२	२५-३२
श्री गोपीचंद धारीवाल	१८	५	१९६७	१०-१७
”	१९	७	१९६८	२३-२५
डा० रत्नलाल जैन	३८	९	१९८७	१०-१६
डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१६	१	१९६४	१२-१९
डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	६	१	१९५४	३-४
प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	२	४	१९५१	११-१४
डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	५	३	१९५४	३-१०
”	५	४	१९५४	४-११
मुनिश्री रामकृष्ण जी महाराज	२	११	१९५१	९-१४
श्री नरेन्द्रकुमार जैन	३०	१	१९७९	११-२२

समराइच्चकहा में चार्वाक दर्शन  
समयसार के अनुसार आत्मा का कर्तृत्व  
अकर्तृत्व एवं भोक्तृत्व-अभोक्तृत्व  
समयसार सप्तदशांगी टीका में गणितिय

## साम्यकत्व की कसौटी

सम्यक् दृष्टिकोण सत्य पारखी दृष्टि

## सत्रक्रतांग में वर्णित दार्शनिक विचार

### स्वप्न : एक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

स्याद्वा

## स्यादवाद-एक पर्यवेक्षण

स्याद्वादः एक भाषायी पद्धति

क

”  
श्री ज्ञानक यादव

डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय

डॉ० लक्ष्मीचंद जैन

डॉ० मोहनलाल मेहता

श्री गोपीचंद धारीवाल

मनिश्री श्रीमल्लजी

डॉ० मोहनलाल मेहता

डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

श्री मोहनलाल मेहता

पं० सुखलाल जी संघवी

कु० कुसुम जैन

श्री रमेशमुनि शास्त्री

श्री भिखारीराम यादव

१९७९

१९७३

2992

7628

2222

632

2930

२९७०

2990

2948

2943

2943

0788

298

१९८३



## लेख

स्याद्वाद और अनेकान्तवाद  
स्याद्वाद और सप्तभंगी-एक चिन्तन  
स्याद्वाद एक परिशीलन -क्रमशः

”

”

स्याद्वाद की अवधारणा : उद्भव एवं विकास

स्याद्वाद की सर्वप्रियता

सूत्रकृतांग में प्रस्तुत तज्जीव तच्छरीवाद

सौन्दर्य का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

हम अनेकान्तवादी हैं या एकान्तवादी ?

हर क्षेत्र में अनेकान्तवाद का प्रयोग हो

हरिभद्र की क्रान्तदर्शी दृष्टि, धूर्ताख्यान

के सन्दर्भ में

हरिभद्र के धर्म-दर्शन में क्रान्तिकारी तत्त्व :

सम्बोधप्रकरण के सन्दर्भ में

हिन्दी जैन कवियों का आत्म-स्वातंत्र्य

हिंसा-अहिंसा का जैन दर्शन

## लेखक

पं० दरबारीलाल कोठिया

प्रो० सागरमल जैन

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

”

”

डॉ० सीताराम दुबे

श्री चन्द्रशंकर शुक्ल

श्रीमती मंजू सिंह

डॉ० मोहनलाल मेहता

श्री कस्तूरमल बांठिया

मुनिश्री नैमिचन्द्र जी

प्रो० सागरमल जैन

”

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

डॉ० मोहनलाल मेहता

अंक

ई० सन्

पृष्ठ

३६७

१५

४१

२०

२०

२०

४८

४

३५

२

९

१०

३९

३९

१४

३१

५-६

१-३

१०

११

१२

७-९

१

८

२

१०

६

४

४

५

४

१९६४

१९९०

१९६९

१९६९

१९६९

१९९७

१९५२

१९८४

१९५०

१९५८

१९५९

१९८८

१९८८

१९६३

१९८०

१७-२०

३-४४

१५-२०

८-१५

१३-२१

१-१३

३-८

१५-२३

२५-२८

१७-२०

२४-२८

२१-२५

१-२०

२७-३०

१२-१४

## २- धर्म, साधना, नीति एवं आचार

अक्षय तृतीया : एक चिन्तन  
अतीत धर्म और साधु संस्था  
अधिमास और पर्युषणा  
अध्यात्म-आवास/पर्युषण  
अनासक्ति

अर्धमागधी आगम साहित्य में  
समाधिमरण की अवधारणा  
अध्यात्म साधना कैसी हो  
अष्टपाहुड़ की प्राचीन टीकाएँ  
अस्वाद व्रत भी तप है  
अहिंसक शक्तियों का ऐक्य  
अहिंसा

”

अहिंसा

अहिंसा : एक विश्लेषण

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

वर्ष अंक ई० सन् पृष्ठ

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१८	८	१९६७	७-१२
बरट्रेन्ड रसल	२	३	१९५१	३१-३४
श्री कस्तूरमल बांठिया	७	१	१९५५	१७-२३
मुनि योगेशकुमार	३५	११	१९८४	७-१६
अजित शुक्देव शर्मा	२३	१०	१९७२	२३-२६
डॉ० सागरमल जैन	४५	१-३	१९९४	८०-९३
आचार्य विनोबा	११	११	१९६०	१०-१२
डॉ० महेन्द्रकुमार जैन 'मनुज'	४३	१०-१२	१९९२	४५-४८
श्री अगरचन्द नाहटा	१२	१२	१९६१	२५-३१
सतीश कुमार	९	९	१९५८	२०-२५
श्री मदनलाल जैन	६	६-७	१९५५	५५-५६
श्री राजकुमार जैन 'अखिल'	७	१२	१९५६	२४-२९
श्री गोपीचंद धारीवाल	१६	७	१९६५	२०-२८
”	१८	८	१९६७	१८-१९



## लेख

अहिंसा : एक विश्लेषण

”

”

अहिंसा और शास्त्रबल

अहिंसा और शिशु

अहिंसा का जैन दृष्टि से विश्लेषण

अहिंसा का अर्थ विस्तार, संभावना और

अहिंसा की कसौटी का क्षण

सीमा क्षेत्र

अहिंसा का व्यावहारिक रूप

अहिंसा का महान् नियम

अहिंसा का विराट रूप

अहिंसा का व्यापक अर्थ

अहिंसा की तीन धारयें

अहिंसा की प्रतिष्ठा का मार्ग

अहिंसा की महानता

अहिंसा की युगवाणी

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा	१८	१-२	१९६६	७३-७७
”	१८	६	१९६७	१०-१५
श्री नन्दलाल मारु	१८	११	१९६७	३३-३७
आचार्य विनोबा भावे	१	२	१९४९	२४-२६
श्री ए० एम० योस्तन	८	३-४	१९५७	३-९
श्री नन्दलाल मारु	१८	५	१९६७	११-१४
श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१०	६	१९५९	७८, ४४-४६
डॉ० सागरमल जैन	३१	३	१९८०	३-२१
पं० श्री मल्ल जी	११	६	१९६०	२८-३१
श्री वासुदेवशरण अग्रवाल	४	९	१९५३	१-२
श्री उदय जैन	२१	९	१९७०	२८-३१
श्री लालजी राम शुक्ल	१	२	१९४९	३३-३६
पं० मुनिश्री मल्लजी म०सा०	९	३	१९५८	३४-३७
श्री हस्तिमल जी 'साधक'	१०	७-८	१९५९	४३-४५
श्री नारायण सक्सेना	१६	१०	१९६५	१२-१५
डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	६	६-७	१९५५	३-४

## लेख

अहिंसा की परिणति-समन्वय और सत्याग्रह  
 अहिंसा की लोकप्रियता  
 अहिंसा की समस्याएँ  
 अहिंसा की साधना  
 अहिंसा की साधना  
 अहिंसा की सार्थकता  
 अहिंसा के इतिहास में निरापिषता  
 अहिंसा के तीन क्षेत्र (क्रमशः)

”

अहिंसा निडणा दिट्ठा  
 अहिंसा परमोधर्मः  
 अहिंसा, संयम और तप  
 अहिंसा से कोई विरोध नहीं  
 आगम मर्यादा और संतों के वर्षावास  
 आचार्य हरिभद्र एवं उनका योग  
 आचार्य हरिभद्र का योगदर्शन

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

काका कालेलकर  
 श्री ज्ञानमुनि  
 युवाचार्य महाप्रज्ञ  
 काका कालेलकर  
 श्री गोपीचंद धारीवाल  
 श्री सौभाग्यमल जैन  
 श्री गणेशमुनि शास्त्री  
 काका कालेलकर

”

श्री कस्तूरमल बांठिया  
 श्री रविशंकर मिश्र  
 श्री जमनालाल जैन  
 श्री शरदकुमार 'साधक'  
 मुनिश्री आईदानजी  
 डॉ० कमल जैन  
 श्री धनंजय मिश्र

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१७	९	१९६६	१८-२१
१५	१२	१९६४	१९-२४
३४	९	१९८३	२-४
१	७	१९५०	११-१३
१८	१-२	१९६६	४३-६०
३५	२	१९८३	८-१२
१९	११	१९६८	९-१४
१५	९	१९६४	१६-१९
१५	१०	१९६४	१६-१७
१४	६-७	१९६३	३४-४३
३३	५	१९८२	१७-१९
११	६	१९६०	३५-३८
१४	९	१९६३	३६-३९
८	१०	१९५७	२६-३३
४४	१-३	१९९३	८-२७
४१	७-९	१९९०	३५-४४



## लेख

आचारांग के शस्त्र परिज्ञा अध्ययन में प्रतिपादित

षड्जीवनिकाय सम्बन्धी अहिंसा

आचारांग में अनासक्ति

आचेलक्य कल्प-एक चिन्तन

आत्मशुद्धि और साधना का पर्व

आत्मशुद्धि का पर्व - पर्युषण

आत्मशीघ्रन का महान् पर्व : पर्युषण

आत्मोपलब्धि की कला : ध्यान

आध्यात्मिक खोज

आध्यात्मिक साधना और उसकी परम्पराएँ

आहार दर्शन

आहार-विहार में उत्सर्ग-अपवाद मार्ग का समन्वय

आहार शुद्धि के लिए क्या करें ?

ईर्यापथ-प्रतिक्रमण

ईश्वरलालकृत "जैन निर्वाण : परम्परा और परिवृत" लेख में आत्मा की माप-जोख शीर्षक-के अन्तर्गत उठाये गये प्रश्नों के उत्तर उतार-चढ़ाव के बीच उभरती अहिंसा

## लेखक

वर्ष

अंक

ई० सन्

पृष्ठ

डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी'

डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय

श्री रमेशमुनि शास्त्री

श्री माईदयाल जैन

श्री सरदारमल जैन

श्री अगरचन्द नाहटा

महोपाध्याय मुनि चन्द्रभसागर

पं० श्री बेचरदास दोशी

कुमारी इन्दुला

डॉ० कस्तूरनाथ गोस्वामी

डॉ० सुदर्शनलाल जैन

मुनिश्री निर्मल कुमार

श्री धीरजलाल टोकरशीशाह

श्री पुखराज भण्डारी

श्री शरदकुमार साधक

१९८८

१२

१९८८

८-१५

१९९१

४-६

७३-८८

१९७७

२

१८-२०

१९५९

१२

२०-२१

१९६५

११

३४-३५

१९५१

११

७-१३

१९९३

१-३

१-७

१९६०

११

१३-१५

१९५९

१०

९-१६

१९८७

८

२१-२२

१९८९

९

११-१५

१९६०

१०

१९-२०

१९५०

७

३४-३६

१९९३

१-३

२८-३४

१९८०

४

१५-१८

उपशमन का आध्यात्मिक पर्व

उदायन का पुर्यषण

“ॐ”

ऋग्वेद में अहिंसा के सन्दर्भ

एकान्तपाप और एकान्तपुण्य

कलचुरी नरेश और जैन धर्म

कालिदास के काव्यों में अहिंसा और जैनत्व

कृतिकर्म के बारह प्रकार

कीर्ति के शत्रु- क्रोध और कुशील

क्षमा का आदर्श

क्षमापना का आदर्श

क्षमा का पर्व

क्षमापना दिन

क्षमा पहला धर्म है

क्षमा से विश्व बन्धुत्व

गांधीजी और अहिंसा

गांधी जी की दृष्टि में अहिंसा का अर्थ

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

पं० दलसुख मालवणिया

उपाध्याय श्री अमरमुनि

महात्मा भगवानदीन

डॉ० प्रतिभा त्रिपाठी

पं० दलसुख मालवणिया

श्री शिवकुमार नामदेव

श्री प्रेमचन्द्र रांवका

मुनिश्री नथमल जी

आचार्य आनन्द ऋषि जी

पं० रत्न श्री ज्ञानमुनि जी

पं० श्री विजयमुनि शास्त्री

मुनिश्री समदर्शी जी

श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय

डॉ० कोमलचन्द जैन

श्री सौभाग्यमल जैन

श्री रामप्रवेश शास्त्री

अनु० नरेन्द्र गुप्त

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
५	११	१९५४	३-५
३१	११	१९८०	७-११
१४	८	१९६३	२६-२९
४२	४-६	१९९१	४४-६२
६	१२	१९५५	११-१६
२५	७	१९७४	१९-२२
२७	७	१९७६	२३-२६
२१	१	१९६९	२६-३३
३२	४	१९८१	१-९
१०	११	१९५९	२९-३१
८	११	१९५७	१५-१६
१०	११	१९५९	३८-३९
१३	११	१९६२	१-४
१०	११	१९५९	३२-३४
३७	११	१९८५	२-४
१२	१२	१९६१	९-१३
४	१	१९५२	११-१२



लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
गुजरात का जैनधर्म	स्व० मुनिश्री जिनविजय जी	३९	३	१९८७	१-३९
गुणव्रत	डॉ० मोहनलाल मेहता	१७	९	१९६६	२२-२७
ग्यारह प्रतिमा (व्रत) और एकादशी	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२९	१२	१९७८	१८-२३
चरित्र के मापदण्ड	श्री इन्द्र	१	६	१९५०	२१-२२
चातुर्मास	पं० दलसुख मालवणिया	१	१०	१९५०	२८-३०
चातुर्मास: स्वरूप और परम्पराएँ	पं० कलानाथ शास्त्री	४६	७-९	१९९५	७०-७३
जैन साहित्य और शिल्प में रामकथा	श्री मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी	२८	४	१९७७	१९-२१
जैन त्यागी वर्ग के सामने एक विकट समस्या	पं० बेचरदास जी दोशी	१०	११	१९५९	४०-४५
जैनधर्म की देन	श्री पी० एस० कुमारस्वामी राजा	१	४	१९५०	३३-३५
जैन दर्शन में अहिंसा	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२२	८	१९७१	१३-२२
जैन दर्शन में आवश्यक साधना	कु० कमला जोशी	४०	४	१९८९	२७-३४
जैन दर्शन में योग का प्रत्यय	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२४	७	१९७३	८-१२
जैनधर्म	श्री सिद्धराज ढड्डा	९	११-१२	१९५८	६०-६३
जैनधर्म	श्री दिनकर	११	६	१९६०	१७-२३
जैनधर्म का दृष्टिकोण	मुनिश्री नन्दीबेण विजय	१४	१०	१९६३	१९-२१
जैनधर्म : निर्जरा एवं तप	डॉ० मुकुलराज मेहता	३८	११	१९८७	४-८
जैनधर्म में उपासना	श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२३	२	१९७१	१२-१७

## लेख

जैनधर्म में शक्तिपूजा का स्वरूप  
 जैनेतर दर्शनों में अहिंसा  
 जैनधर्म में भक्ति का स्थान  
 जैन दर्शन में मोक्ष का स्वरूप  
 जैनधर्म एक सम्प्रदायातीत धर्म  
 जैनधर्म में समाधिमरण की अवधारणा  
 जैनधर्म विषयक भ्रान्तियाँ  
 जैन साधना पद्धति में ध्यान योग  
 जैन साधना में चैतन्य केन्द्रों का निरूपण  
 जैन स्तोत्रों में नवधा भक्ति  
 जैन आचार शास्त्र की गतिशीलता का समाज-  
 शास्त्रीय अध्ययन  
 जैन परम्परा में ध्यान योग  
 जैन और वैदिक साहित्य में पराविद्या  
 जैनधर्म आस्तिक या नास्तिक (क्रमशः)  
 ”  
 जैनधर्म में भावना

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री प्रेमकुमार अग्रवाल

”

कु० प्रमिला पाण्डेय

डॉ० प्रमोद कुमार

डॉ० निजामुद्दीन

श्री रञ्जन कुमार

पं० बेचरदासजी दोशी

साध्वी प्रियदर्शना जी

युवाचार्य महाप्रज्ञ

श्री धर्मचन्द्र जैन

श्री धन्यकुमार राजेश

”

”

श्री कन्हैयालाल सरावगी

”

डॉ० अजित शुक्देव

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२२	१२	१९७१	९-१२
२२	१०	१९७१	२०-२८
२३	५	१९७२	२८-३३
२६	४	१९७५	१४-२०
३३	८	१९८२	३-७
३९	८	१९८८	३-८
८	१२	१९५९	१९-२७
३७	१०	१९८६	१८-२७
३८	४	१९८७	२-५
३४	१०	१९८३	२५-२९
२१	१०	१९७०	३-१२
२४	६	१९७३	९-१६
२१	५	१९७०	५-१५
२६	३	१९७५	१९-२५
२६	४	१९७५	२१-२५
२४	१०	१९७३	१२-१७



## लेखक

जैन सिद्धान्त में योग और आसुरव

जिनधर्म का तमाशा

जैनधर्म और भक्ति

जैनधर्म दर्शन में आराधना का महत्व

जैनधर्म एवं बौद्धधर्म-परस्पर पूरक

जैनधर्म : एक अवलोकन

जैनधर्म और प्रयाग

जिनमार्ग

जैन दर्शन में मोक्षोपाय

जैनधर्म में मोक्ष का स्वरूप

जैनधर्म का वैशिष्ट्य

जीवन की अंतिम साधना

जैन साधना के मनोवैज्ञानिक आधार

जैनधर्म में अचेलकत्व और सचेलकत्व का प्रश्न

जैनधर्म में आध्यात्मिक विकास

जैनधर्म में तीर्थ की अवधारणा

जैनधर्म में भक्ति का स्थान

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आचार्य अनन्तप्रसाद जैन	२५	३	१९७४	११-१९
श्री अगरचंद नाहटा	५	७	१९५४	९-११
श्री गुलाबचन्द जैन	३०	७	१९७९	२४-३१
”	३५	३	१९८४	११-१४
डॉ० कोमलचन्द्र जैन	२७	६	१९७६	८-११
डॉ० के० एच० त्रिवेदी	२३	८	१९७२	२४-२८
डॉ० कृष्णलाल त्रिपाठी	४७	७-९	१९९६	१५-२२
श्री कस्तूरमल बांठिया	२१	११	१९७०	३-१५
डॉ० रामजी सिंह	२४	१०	१९७३	३२-३६
श्री विनोदकुमार तिवारी	३३	९	१९८२	७-१०
प्रो० विमलदास कौदिया	५	९	१९५४	३-१०
श्री सत्यदेव विद्यालंकार	७	१	१९५५	३१-३३
डॉ० सागरमल जैन	३०	११	१९७९	८-१४
”	४८	४-६	१९९७	७७-११२
”	४८	४-६	१९९७	१५७-१६०
”	४१	४-६	१९९०	१-२८
”	३१	५	१९८०	१४-१७

## लेख

जैनधर्म में भक्ति की अवधारणा  
जैनधर्म में स्वाध्याय का अर्थ एवं स्थान  
जैन साधना में ध्यान  
जैन साधु की भिक्षा विधि  
जैन दर्शन में पुरुषार्थ चतुष्टय  
जैन साधना  
जैन दर्शन में मोक्ष का स्वरूप : भारतीय दर्शनों  
के परिपेक्ष्य में

जैन आचार पद्धति में अहिंसा  
चारित्र निर्माण में आचार पद्धति का योगदान  
जैन साधना पद्धति में साम्यदर्शन

“  
जैनधर्म में अहिंसा  
जैनागमों में वर्णित नागपूजा  
जैनधर्म की आचार संहिता  
जैनधर्म में तांत्रिक साधना का प्रवेश  
जैनधर्म में तप का स्वरूप और महत्त्व

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

डॉ० सागरमल जैन

”

”

श्री सतीश कुमार

प्रो० सुरेन्द्र वर्मा

पं० सुखलाल जी संघवी

डॉ० सुदर्शनलाल जैन

डॉ० राजदेव दुबे

”

श्री रमेशमुनि शास्त्री

”

श्री रामदेव यादव

श्री रामहंस चतुर्वेदी

श्री रिखबचंद लहरी

डॉ० रतिलाल म० शाह

श्री रामजी सिंह

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
४५	१-३	१९९४	१८-३६
४५	१-३	१९९४	३७-४३
४५	१-३	१९९४	४४-७९
९	११-१२	१९५८	६४-६५
४७	१-३	१९९६	२१-४६
१	८	१९५०	९-११
३५	१	१९८३	१८-२४
३५	२	१९८३	१३-२०
३४	७	१९८३	२६-३२
२६	११	१९७५	९-१२
२६	१२	१९७५	३-६
३३	२	१९८१	१६-२२
३७	१०	१९८६	१-७
१६	२	१९६४	२६-२८
२४	१२	१९७३	२५-३०
२५	११	१९७४	२२-२७



लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैनधर्म में नीतिधर्म और साधना	श्री रामजी सिंह	२५	५	१९७४	२५-३०
जैनधर्म में भक्ति का स्वरूप	मुनि ललितप्रभ सागर	३४	९	१९८३	५-७
जैनधर्म भगवान् महावीर की कसौटी पर	श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'	१४	६-७	१९६३	६-८
जैन दृष्टि में चारित्र	डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	३४	४	१९८३	१७-२१
जैनधर्म : एक निर्वचन	"	७	२	१९५५	३-६
जैनधर्म और बिहार	"	२०	९	१९६९	५-१९
जैन आचार में इन्द्रियदमन की मनोवैज्ञानिकता	श्री रतनचन्द जैन	३२	८	१९८१	१-१६
जैनधर्म में अरिहन्त और तीर्थंकर की अवधारणा	श्री रमेशचन्द्र गुप्त	३४	४	१९८३	५-९
जैन दृष्टि से चारित्र विकास-क्रमशः	डॉ० मोहनलाल मेहता	१५	११	१९६४	१७-२३
"	"	१५	१२	१९६४	१३-१८
जैन श्रावकाचार - क्रमशः	"	३०	६	१९७९	१६-२२
"	"	३०	७	१९७९	१६-२३
"	"	३०	८	१९७९	२१-३२
जैनों में साध्वी प्रतिमा की प्रतिष्ठा-पूजा व वन्दन	श्री महेन्द्रकुमार जैन 'मस्त'	४८	७-९	१९९७	८२-८५
ज्ञानीजनों का मरण: भक्त प्रत्याख्यान मरण	श्री रज्जन कुमार	३८	७	१९८७	१४-१९
तनाव: कारण एवं निवारण	डॉ० सुधा जैन	४८	१-३	१९९७	१-२०
तप का उपादेय : कर्मों की निर्जरा	डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीप्ति'	३५	११	१९८४	११-२०

## लेख

तप के प्रतीक महावीर

तप क्या है ?

तपश्चर्या-उपवास

तपोधन महावीर

तृष्णा और उसका अंत

तीर्थकर

त्रित्तन : मोक्ष के सोपान

दयामूर्ति : धर्मरुचि अनगार

दशधर्म योग साधना है

दशलक्षण/दशलक्षण धर्म के

दान, शील, तप, भाव के स्वयिता और

दानकुलक का पाठ

दिगम्बर परम्परा में श्रावक के गुण और भेद

दिवाभोजन ही क्यों ?

धर्म और अधर्म

धर्म और धार्मिक

धर्म और पुरुषार्थ

धर्म और सहिष्णुता

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

पं० बेचरदास दोशी

श्री चिमनलाल चकुभाई शाह

श्री वृजनन्दन मिश्र

श्री ज्ञानमुनि जी महाराज

डॉ० बी० सी० जैन

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

उपाध्याय श्री अमरमुनि

श्री अर्हददास दिगो

डॉ० सागरमल जैन

श्री अगरचंद नाहटा

श्री कस्तूरमल बांठिया

डॉ० महेशदान सिंह चौहान

डॉ० मोहनलाल मेहता

डॉ० आदित्य प्रचण्डिया

पं० सुखलाल जी

डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन

वर्ष अंक ई० सन् पृष्ठ

३ ६ १९५२ ८

१९ १-२ १९६७ १४-१९

३५ ९ १९८४ २०-२२

१२ ६-७ १९६१ ५६-५७

७ ३ १९५६ १९-२०

३२ ७ १९८१ ८-१०

२४ ३ १९७३ २२-२६

३२ ७ १९८१ ५-७

१९ १० १९६८ ३१-३६

३४ ११ १९८३ १३-२८

२४ १० १९७३ १८-२४

१७ १-२ १९६५ ५६-६६

६ १० १९५५ ३३-३४

२० ५ १९६९ ५-७

३४ १० १९८३ २०-२१

११ १० १९६० १४-१७

१५ ५-६ १९६४ ३३-३४



लेखक	श्रमण : अतीत के झरोखे में	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धर्म-कल्याण का मार्ग	पं० मुनिश्री रामकृष्ण जी महाराज	९	१	१९५७	१६-१९
धर्म का बीज और उसका विकास	पं० सुखलालजी संधवी	२	१२	१९५१	९-१४
धर्म का तत्त्व	टॉलस्टॉय	३	१२	१९५२	२२-२६
धर्म का बहिष्कार या परिष्कार	श्री अजातशत्रु	११	४	१९६०	१९-२२
धर्म का मूल आधार-अहिंसा	श्री शिवनारायण सक्सेना	१६	१२	१९६५	२०-२३
धर्म का मर्म	श्री सुबोधकुमार जैन	४	९	१९५३	२४-२९
धर्म का स्वरूप	भंडारी सरदारचंद जैन	३६	२	१९८४	५-७
धर्म क्या है ?	डॉ० सागरमल जैन	३१	४	१९८०	१-८
"	"	३१	५	१९८०	२-५
"	"	३१	७	१९८०	२-७
"	"	३४	४	१९८३	२-४
धर्म करते पाप तो होता ही है!	श्री प्रवाही	३	१२	१९५२	३५-३७
धर्म की उत्पत्ति और उसका अर्थ	श्री मोहनलाल मेहता	३	४	१९५२	९-१४
धर्म को छानने की आवश्यकता	श्री रतिलाल म० शाह	२८	१०	१९७७	२९-३५
धर्म क्षेत्र-हिम क्षेत्र	श्री कानजी भाई पटेल	१४	३	१९६३	१९-२८
धर्म निरपेक्ष या ईश्वर निरपेक्ष	श्री प्रभाकर गुप्त	८	१०	१९५७	४-८
धर्म परिवर्तन-श्रमण धर्मों की भूमिका और निदान	श्री महेन्द्रकुमार फुसकेले	३३	७	१९८२	५-११
धर्म : मेरी दृष्टि में	मुनिश्री नेमिचंद	१८	४	१९६७	२४-२८

धार्मिक एकता

धार्मिक जीवन की प्रेरणा

ध्यान योग की जैन परम्परा

नैतिक आचरण विधि : सोरेन

कीर्केगार्ड और जैन दर्शन

ध्यान साधना का दिशाबोध

नई पीढ़ी और धर्म

निर्वाण : उपनिषद् से जैन दर्शन तक

निःशस्त्रीकरण

नैतिकता का आधार

पंचयाम धर्म-एक पर्यवेक्षण

पंचपरमेष्ठि मंत्र का कर्तृत्व और दशवैकालिक

पर्युषण

पर्युषण: आत्म चिन्तन से सामाजिक

चिन्तन की ओर

पर्युषण : आत्म संक्रान्ति का अद्वितीय अध्याय

पर्युषण : आत्मा की उपासना का पर्व

पर्युषण और नई प्रतिमाएँ

## लेखक

”

उपाध्याय अमरमुनि

श्री सूरजचन्द्र 'सत्यप्रेमी'

पाण्डेय रामदास 'गम्भीर'

श्री सौभाग्य मुनि जी 'कुमुद'

श्री सागरमल जैन 'साथी'

डॉ० शान्ति जैन

मुनि आईदान

श्री जगदीश सहाय

श्री ब्रजनन्दन

साध्वी (डॉ०) सुरेखाश्री

श्री मधुकर मुनि

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

डॉ० नरेन्द्र भानावत

मुनिश्री रामकृष्ण

श्री लक्ष्मीनारायण

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१५	५-६	१९६४	६५-६८
११	१०	१९५९	९-१२
१०	९	१९५८	१७-१८
३३	५	१९८१	३-१२
३५	७	१९८४	११-१४
१३	१	१९६१	३१-३४
२७	११	१९७६	२५-२९
९	६-७	१९५८	१७-२२
३३	१	१९८१	१-१८
१५	९	१९६४	२०-२३
४२	७-१२	१९९१	१-१०
३१	११	१९८०	२-६
१२	११	१९६१	१५-१७
३२	११	१९८१	२-५
३२	११	१९८१	२६-३०
१२	११	१९६१	२४-२५



लेख	श्रमण : अतीत के झरोखे में	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पर्युषण और पश्चाताप	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	१२	११	१९६१	२८
पर्युषण और बौद्ध धर्म	श्री उदयचन्द जैन	१२	११	१९६१	२७-३०
पर्युषण और सामाजिक शुद्धि	मुनिश्री नेमिचन्द जी	१२	११	१९६१	१९-२२
पर्युषण और हमारा कर्तव्य	श्री अगरचन्द नाहटा	८	११	१९५७	९-१४
	"	३६	११	१९८५	६-१२
पर्युषण एक चिन्तन	श्री लक्ष्मीनारायण भारतीय	१०	११	१९५९	९-१०
पर्युषण की सही आराधना	श्री हीराचन्द्र सूरि विद्यालंकार	१०	११	१९५९	६-८
पर्युषण : परिचय और व्याख्या	सुश्री शरवती जैन	१२	११	१९६१	९-११
पर्युषण : दस लक्षण	श्री गुलाबचंद जैन	१२	१२	१९६१	१४-१५
पर्युषण पर्व	श्री विमलदास जैन	१	११	१९५०	३१-४०
पर्युषण का पावन संदेश	श्री अगरचंद नाहटा	१०	११	१९५९	२५-२६
पर्युषण पर्व का मतलब	भाई बंशीधर	१२	११	१९६१	१३-१४
	"	१०	११	१९८९	४-५
पर्युषण पर्व : क्या, कब और कैसे	डॉ० सागरमल जैन	३३	१०	१९८२	१-१९
पर्युषण : संभावनाओं की खोज	डॉ० नेमिचंद जैन	३०	११	१९७९	३-७
पर्वराज-दस लक्षणी पर्युषण पर्व	श्री गणेशप्रसाद जैन	३१	११	१९८०	१९-२५
परिनिर्वाण	श्री जय भिक्खु	३	१२	१९५२	१७-२१

पर्व की आराधना

पर्वराज पर्युषण

पर्वराधन की एक रूपता का प्रश्न

पाश्चाताप

”

पार्श्वकालीन जैनधर्म

पुण्य और पाप

पुराण प्रतिपादित शीलव्रत

प्रतिक्रमण

प्रत्यालोचना-महावीर का अन्तस्तल

प्राकृत जैनागम परम्परा में गृहस्थाचार तथा

उसकी पारिभाषिक शब्दावली

प्राणातिपात विरमणः अहिंसा की उपादेयता

प्राचीन मथुरा में जैन धर्म का वैभव

प्राचीन भारतीय श्रमण एवं श्रमणचर्या

प्रेम की सरिता प्रवाहित करने वाला पर्व

बारहभावना : एक अनुशीलन

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

उपाध्याय अमरमुनि

पं० अमृतलाल शास्त्री

श्री सौभाग्य मुनि 'कुमुद'

श्री भंवरलाल नाहटा

”

डॉ० विनोदकुमार तिवारी

डॉ० मोहनलाल मेहता

श्री सनतकुमार जैन

स्वामी सत्यभक्त जी

श्री कस्तूरमल बांठिया

डॉ० कमलेश जैन

डॉ० ब्रजनारायण शर्मा

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

डॉ० झिनकू यादव

मुनि मणिप्रभ सागर

डॉ० कमलेशकुमार जैन

वर्ष

१०

१०

३६

३९

३९

४०

२२

३०

६

६

४३

३८

४

२४

३५

४५

ई० सन्

१९५९

१९५९

१९८५

१९८८

१९८८

१९८९

१९७१

१९७९

१९५५

१९५५

१९९२

१९८७

१९५३

१९७३

१९८४

१९९४

पृष्ठ

१७-१९

१५-१६

१४-१५

२३-२४

२२-२४

३-९

३-७

१५-११

३-१२

३३-३६

४७-६८

६-१५

७-११

६-१२

४-६

५६-६१



लेख

बाल संन्यास दीक्षा प्रतिबन्धक बिल उचित है !  
 बौद्ध एवं जैन अहिंसा का तुलनात्मक अध्ययन  
 बौद्ध ग्रन्थों में जैन धर्म  
 बौद्धधर्म  
 बौद्ध धर्म का छठा संगायन  
 ब्रह्मचर्य की गुप्ति  
 भगवान् महावीर और अहिंसा  
 भगवान् महावीर और उनके द्वारा प्रतिपादित धर्म  
 भगवान् महावीर और धर्मक्रांति  
 भगवान् महावीर का अचेलधर्म  
 भगवान् महावीर का मार्ग  
 भगवान् महावीर की अहिंसा  
 भगवान् महावीर की जीवन साधना  
 भगवान् महावीर की धर्म क्रांति  
 भगवान् महावीर की साधना  
 भगवान् महावीर की साधना एवं देशना  
 भक्तारस्तोत्र के पादपूरि रूप स्तवकाव्य

लेखक

श्री प्रभुदास बालूभाई पटावरी  
 डॉ० भागचन्द जैन  
 डॉ० गुलाबचंद जैन  
 पं० दलसुख मालवणिया  
 भिक्षु धर्मरक्षित  
 उपाध्याय श्री हस्तिमल जी  
 सुश्री शरबती जैन  
 श्री ऋषभचन्द 'फौजदार'  
 मुनिश्री नेमिचन्द जी  
 पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री  
 पं० दलसुख मालवणिया  
 श्री नरेन्द्र जैन  
 प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन  
 प्रो० पृथ्वीराज जैन  
 उपाध्याय अमरमुनि  
 श्री भूरचंद जैन  
 श्री अगरचंद नाहटा

वर्ष

७  
 ३२  
 ८  
 १  
 ५  
 १७  
 ७  
 ३२  
 १४  
 २८  
 ६  
 १५  
 ६  
 ८  
 ३५  
 २९  
 २१

अंक

४  
 ९  
 ७-८  
 ७  
 ९  
 १-२  
 ६-७  
 ७  
 ८  
 ८  
 ६-७  
 ११  
 ६-७  
 ६  
 १२  
 ७  
 ११

ई० सन्

१९५६  
 १९८१  
 १९५७  
 १९५०  
 १९५४  
 १९६५  
 १९५६  
 १९८१  
 १९६३  
 १९७७  
 १९५५  
 १९६४  
 १९५५  
 १९५७  
 १९८४  
 १९७८  
 १९७०

पृष्ठ

१८-२३  
 १-१६  
 १८-२८  
 १९-२२  
 १२-१८  
 ७-१३  
 ४०-४५  
 २-४  
 २१-२५  
 ३-१०  
 २०-२२  
 २४-२६  
 ६२-६४  
 २६-३०  
 १-१०  
 २१-२७  
 २५-२९

## लेख

भक्तिमार्ग का सिंहावलोकन  
भारतीय दर्शनों में अहिंसा  
भारतीय दर्शन में मोक्ष की अवधारणा  
भारतीय चिन्तन में मोक्ष और मोक्षमार्ग -क्रमशः

”

मरण के विविध प्रकार

महाकवि पुष्पदन्त की भक्ति चेतना

महापर्व पर्युषण का पावन सन्देश :

अपने आप को परखें

महाभारत का आचार दर्शन

महापर्व संवत्सरी

महाभिनिष्क्रमण

महावीर का तपः कर्म

महावीर का धर्म : सर्वोदय तीर्थ

महावीर का संयम और उनका साधनामय जीवन

”

महावीर की साधना और सिद्धान्त

महावीर स्तुति

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

पं० दलसुख मालवणिया

श्री रत्नलाल जैन

डॉ० राजीव प्रचण्डिया

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

”

”

श्री रज्जन कुमार

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

आचार्य आनन्दद्विषि जी

श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा

ज्ञान मुनि महाराज

रसिक त्रिवेदी

डॉ० मोहनलाल मेहता

आचार्य राजकुमार जैन

कु० सविता जैन

”

कु० विजया जैन

श्री अगरचंद नाहटा

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२	९	१९५१	९-१५
३६	११	१९८५	२३-३१
४५	१०-१२	१९९४	१-९
२७	९	१९७६	३-१०
२७	१०	१९७६	३-७
२७	११	१९७६	३-८
३८	१२	१९८७	२५-३१
२७	३	१९७६	९-१४
३६	११	१९८५	१४-१५
१४	१	१९६२	२७-३६
६	११	१९५५	२४-२८
३	५	१९५२	१९-२२
१५	५-६	१९६४	३७-४१
२५	५	१९७४	१६-२०
३२	६	१९८१	२७-३०
३३	७	१९८२	१९-२३
१३	२	१९६१	२४-२६
१०	१	१९५८	१३-१५



## लेख

महावीरोपदिष्ट परिग्रह परिमाण व्रत  
मानतुंगसूरिचित पंचपरमोष्ठिस्तोत्र  
मानव साध्य है या साधन  
मुनियों का आदर्श त्याग  
मूलाचार में मुनि की आहार-चर्या  
मूलाधार की समाधिभरण  
मैं मुक्ति चाहता हूँ

## मोक्ष

मृत्यु एवं सल्लेखना  
यशस्तिलक चम्पू और जैन धर्म  
युवाचित धर्म से विमुख क्यों  
योग और भोग

योग का जनतन्त्रीकरण

लेश्या-एक विश्लेषण

वर्षा ऋतु का आहार-विहार

”

वसन्त ऋतु का आहार-विहार

व्रत का मूल्य

वीतराग की उपासना

## लेखक

श्री जमनालाल जैन  
श्री अगरचन्द नाहटा  
प्रो० नेमिचरण मित्तल  
मुनिश्री आईदान जी महाराज  
डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी'  
श्री उदयचंद जैन  
श्री भैरमलाल सिंघी  
श्री गोपीचंद धारीवाल  
डॉ० हुकुमचन्द संगवे  
डॉ० (कु०) सत्यभामा  
दर्शनार्थ मुनि योगेश  
विजयमुनि शास्त्री  
प्रो० श्रीरंजन सूरिदेव  
कुमारी सुशीला जैन  
वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन

”

डॉ० नेमिचन्द शास्त्री

श्री ज्ञानमुनि जी

अंक

पृष्ठ

ई० सन्

२६	१-२	१९७४	५७-६२
२६	१२	१९७५	१४-१७
११	९	१९६०	९-११
३	७	१९५२	७-८
२६	९	१९७५	३-१३
२३	२	१९७१	२१-३०
७	२	१९५५	१३
१७	६	१९६६	१४-१९
२५	३	१९७४	३२-३९
३५	३	१९८४	१५-२८
३८	७	१९८७	२०-२२
९	४	१९५८	७-८
२९	४	१९७८	३-७
२३	५	१९७२	२०-२४
५	१०	१९५४	१६-१९
७	१०	१९५६	२३-२५
६	४	१९५५	१९-२०
१३	१२	१९६२	२९-३४
१३	११	१९६२	२६-३०

## लेख

वीर हनुमानः स्वयंभू कवि की दृष्टि में

वीरों का शृंगार : अहिंसा

वैराग्य क्या है ?

वैदिक धर्म तथा जैन धर्म

शांति का अमोघ अस्त्र-क्षमा

शीतऋतु का आहार-विहार

शीलव्रतः एक विवेचन

शीलव्रत ग्रहण

शुद्ध-अशुद्ध भावधारा

शुद्धि, चिकित्सा और सिद्धि का महान् पर्व-संवत्सरी

शुद्धि प्रयोग का झांकी

शुद्ध व्यवहार का आन्दोलन

क्षेताम्बर पण्डित परम्परा

क्षेताम्बर-परम्परा में श्रावक के गुण और भेद

श्रद्धा का क्षेत्र

श्रमण-आचार : एक परिचय

श्रमण : एक व्याख्या

श्रमण जीवन का बदलता हुआ इतिहास

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्रीरंजन सूरिदेव

श्रीनारायण संक्सेना

स्व० छोटालाल हरजीवन सुशील

पं० के० भुजबली शास्त्री

मुनि ललितप्रभ सागर

वैद्यराज पं० सुंदरलाल जैन

श्री सनतकुमार जैन

श्री रघुवीरशरण दिवाकर

युवाचार्य महाप्रज्ञ

युवाचार्य महाप्रज्ञ

मुनिश्री नेमिचन्द्र जी

श्री किशोरीलाल मशरूवाला

श्री अगरचन्द नाहटा

श्री कस्तूरमल बांठिया

पं० दलसुख मालवणिया

श्री रमेशमुनि शास्त्री

श्री महेन्द्रकुमार जैन

मुनिश्री आईदान जी

वर्ष

२५

१६

१५

२९

३४

६

३०

२

३८

३५

१५

२

३८

१७

३

२७

१३

७

अंक

१२

६

१०

१०

११

२

३

८

३

११

४

११

७

४

५

६

२

९

ई० सन्

१९७४

१९६५

१९६४

१९७८

१९८३

१९५४

१९७९

१९५१

१९८७

१९८४

१९६४

१९५१

१९८७

१९६६

१९५२

१९७६

१९६१

१९५६

पृष्ठ

९-१५

३-८

२२-२९

९-१३

२९-३१

१९-२०

१०-१८

१२-१३

२-६

२-३

९-१३

१४-१८

१०-१३

३-१४

९-१२

३-७

११-१३

२९-३४



## लेख

श्रमण-धर्म  
श्रमण-धर्म : एक विश्लेषण  
श्रमण परम्परा में धर्म और उसका महत्व  
श्रमण संस्कृति में अहिंसा के प्राचीन संदर्भ-क्रमशः

”  
श्रमण संस्कृति में मोक्ष की अवधारणा  
श्रमणों का युगधर्म  
श्रावक के गुण एवं भेद- क्रमशः

”

”  
श्रावक में षट्कर्म  
संन्यास आत्महत्या नहीं  
संन्यास का आधार अन्तर्मुखी प्रवृत्ति  
संन्यास की मर्यादा  
संन्यासमार्ग और महावीर  
संन्यास जीवन का सम्यक् दृष्टिकोण  
संवत्सरी  
संवत्सरी  
संवत्सरी की सर्वमान्य तारीख

## लेखक

डॉ० मोहनलाल मेहता  
श्री रमेशमुनि शास्त्री  
श्री कानजीभाई पटेल  
डॉ० भागचंद जैन ‘भास्कर’  
”  
श्री प्रेमकुमार अग्रवाल  
मुनिश्री नेमिचन्द्र जी  
श्री कस्तूरमल बांठिया  
”  
”  
डॉ० रमेशचन्द्र जैन  
श्री दलसुख मालवणिया  
डॉ० मोहनलाल मेहता  
आचार्य विनोबा  
पं० दलसुख मालवणिया  
डॉ० सागरमल जैन  
श्री समीर मुनि ‘सुधाकर’  
डॉ० गोकुलचन्द्र जैन  
दिलीप सुराणा

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२५	७	१९७४	३३-३८
२७	३	१९७६	१५-१८
१५	५-६	१९६४	२३-२७
२१	७	१९७०	३-९
२१	८	१९७०	१०-१७
२३	६	१९७२	३-९
१२	३	१९६१	८-९
१७	६	१९६६	३-११
१७	७	१९६६	३-११
१७	८	१९६६	३-१०
२६	१२	१९७५	७-१३
१३	१२	१९६२	३५-३९
२	३	१९५१	२३-२६
११	२	१९५९	१३-१४
४	५	१९५३	७-११
३१	८	१९८०	२-१३
१२	११	१९६१	३१-३५
४०	११	१९८९	३
३६	११	१९८५	१६-२२

## लेख

संवत्सरी महापर्व : स्वरूप और अपेक्षाएं  
 सकारात्मक अहिंसा की भूमिका  
 सच्ची साधना का प्रभाव  
 सचेल-अचेल  
 सदाचार का महत्व  
 सदाचार के शाश्वत मानदण्ड  
 सदाचार-मानदण्ड और जैनधर्म  
 समाधिमरण  
 समाधिमरण का स्वरूप  
 समाधिमरण की अवधारणा: उत्तराध्ययन-  
 सूत्र के परिप्रेक्ष्य में  
 समाधिमरण की अवधारणा की आधुनिक  
 परिप्रेक्ष्य में समीक्षा  
 साधना की अमर ज्योति  
 साधना में श्रद्धा का स्थान  
 साधु मर्यादा क्या ? कितनी ?  
 साधु समाज और निवृत्ति  
 साधुओं का शिथिलाचार  
 सामायिक का मूल्य

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनि नगराज जी	११	१९८२	६-९
डॉ० सागरमल जैन	१-३	१९९५	६९-८६
श्री राजाराम जैन	५	१९५३	२८-२९
मुनि दुलहराज	८	१९६५	११-१५
आचार्य आनन्द ऋषि	५	१९८३	११-१२
डॉ० सागरमल जैन	४-६	१९९५	१३४-१४९
''	४	१९८१	२२-२७
श्री गणेशप्रसाद जैन	९	१९८३	९-१३
श्री रज्जन कुमार	५	१९८८	१२-१७
''	३	१९८७	१३-१८
डॉ० सागरमल जैन	४-६	१९९१	९९-१०१
मुनि समदर्शी	५	१९६३	४१-४७
आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी	११	१९८०	१२-१८
श्री सौभाग्यमल जैन	७	१९८२	१५-१८
पं० दलसुख मालवणिया	२	१९५१	९-१२
श्री सौभाग्यमल जैन	३	१९६४	९-१३
उपाध्याय श्री अमरमुनि	५	१९८०	६-८



## लेख

सामायिक की सार्थकता

सामायिक : सौ सयाने एकमत

सिद्धिर्षिणिपूत उपमितिभवप्रपंचाकथा से संकलित

“धर्म की महिमा”

सिद्धि का पथ : आर्जवधर्म

सिद्धि योग का महत्त्व

सिरोही जिले में जैनधर्म

सेवा : स्वरूप और दर्शन

सोमदेवकृत उपासकाध्ययन में शीलव्रत(क्रमशः)

”

स्वाध्याय : एक आत्म चिन्तन

हजरत मुहम्मद और इस्लाम

हमारी भक्ति निष्ठा कैसी हो ?

हरिभद्र की श्रावकप्रज्ञप्ति में वर्णित अहिंसा : -

आधुनिक संदर्भ में

हिंसक और अहिंसक युद्ध

हिंसा का बोलबाला

Ahimsa in the Ancient East

## लेखक

महासती उज्जवल कुमारी

श्री कन्हैयालाल सरावगी

श्री गोपीचंद धारवाल

श्रीमती अलका प्रचण्डिया ‘दीप्ति’

पं० के० भुजबली शास्त्री

डॉ० सोहनलाल पाटनी

श्री रमेशमुनि शास्त्री

श्री सनतकुमार जैन

”

श्री राजकुमार छाजेड

पृथ्वीराज जैन

श्री अगरचंद नाहटा

डॉ० अरुणप्रताप सिंह

अशोक कुमार सिंह

श्री ताराचन्द्र मेहता

Shri Ram Chandra Jain

वर्ष

१

२९

१८

३५

२९

३३

२८

३०

३०

३२

१

६

४१

३८

१४

१६

अंक

१२

५

११

११

६

१०

१

११

१२

६

८

१०

१०-१२

११

१

५

ई० सन्

१९५०

१९७८

१९६७

१९८४

१९७८

१९८२

१९७६

१९७९

१९७९

१९८१

१९५०

१९५५

१९९०

१९८७

१९६२

१९६५

पृष्ठ

२६

१०-१७

१८-२३

१७-१८

२८-२९

३२-३७

३-४

३४-३८

२३-२८

३५-३६

२५-३१

८-९

५७-७०

१-३

६-७

२३-३८

## ३. आगम और साहित्य

अंग ग्रंथों का बाह्य रूप  
अंगविज्जा  
अखिल भारतीय प्राच्यविद्या महासम्मेलन  
अज्ञात कविकृत शीलसंधि  
अणगार वन्दना बत्तीसी  
अद्धमागहाए भाषाए भासंति अरिहा  
अपने को परखिए  
अपभ्रंश और देशी तत्त्व  
अपभ्रंश कथाकाव्यों का हिन्दी प्रेमाख्यानों के शिल्प पर प्रभाव

अपभ्रंश का काव्य सौन्दर्य  
अपभ्रंश का विकास कार्य तथा जैन साहित्यकारों की देन  
अपभ्रंश की शोध कहानी  
अपभ्रंश के जैनपुराण और पुराणकार

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

वर्ष

अंक

ई० सन्

पृष्ठ

पं० बेचरदास दोशी	१६	२	१९६४	१५-२२
श्री नारायण शास्त्री	२१	८	१९७०	२८-३२
श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	३	१	१९५१	३८-४४
डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	२०	७	१९६९	२१-२६
डॉ० (श्रीमती) मुन्नी जैन	४८	१-३	१९९७	६०-७०
श्री नंदलाल मारु	२४	९	१९७३	१३-१५
मुनिश्री सुरेशचन्द्र जी शास्त्री	६	११	१९५५	३९-४१
डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२५	११	१९७४	३-८
श्री प्रेमचंद जैन	१९	१-२	१९६७	४३-५३
प्रो० सुरेशचन्द्र गुप्त	५	८	१९५४	२३-३०
श्रीमती मीना भारती	२३	८	१९७२	२९-३४
डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	१८	१-२	१९६६	३-७
रीता विश्वनोई	४२	७-१२	१९९१	४५-५६



## लेख

अपभ्रंश के जैन साहित्य का महत्व  
अपभ्रंश चरितकाव्य तथा कथाकाव्य  
अपभ्रंश जैन साहित्य

”

अपभ्रंश साहित्य : उपलब्धियाँ और प्रभाव  
अभयकुमार श्रेणिकरास

”

अर्धमागधी आगम साहित्य

अर्धमागधी भाषा में सम्बोधन का एक विस्मृत  
शब्द-प्रयोग 'आउसन्ते'

अललित जैन साहित्य का अनुवाद-कुछ समस्याएँ

अष्टलक्षी: संसार का एक अद्भुत ग्रन्थ

अष्टलक्षी में उल्लिखित अप्राप्य रचनाएँ

असाम्प्रदायिक जैन साहित्य

चौथी आगमवाचना का सवाल

आगम साहित्य में प्रकीर्णकों का स्थान, महत्व,

रचना-काल एवं रचयिता

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी	४	११	१९५३	१-३
डॉ० देवेन्द्र कुमार	२३	३	१९७२	३-१०
श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	४	१९७१	१८-१२
”	२२	३	१९७१	१२-१७
डॉ० देवेन्द्र कुमार	१२	१	१९६०	२१-२५
डॉ० सनतकुमार रंगाटिया	१९	१०	१९६८	२५-३०
”	१९	११	१९६८	२२-२८
डॉ० सागरमल जैन	४६	१-३	१९९५	१-४५
डॉ० के० आर० चन्द्र	४६	७-९	१९९५	६६-६९
डॉ० नंदलाल जैन	३२	१२	१९८१	२१-२६
महोपाध्याय चन्द्रप्रभ सागर	४०	३	१९८९	२-८
श्री अगरचंद नाहटा	१८	७	१९६७	९-११
डॉ० पी० एल० वैद्य	४	७-८	१९५३	१७-२४
श्री कस्तूरमल बांठिया	९	११-१२	१९५८	६८-७०
डॉ० सागरमल जैन	४८	४-६	१९९७	१४७-१५६

आगमिक प्रकरण  
 आगमिक व्याख्याएँ  
 आगमों का आनुयोगिक-वर्गीकरण  
 आगमों के सम्पादन में कुछ विचार योग्य प्रश्न  
 आचार्य कुन्दकुन्द और उनका साहित्य  
 आचार्य भद्रबाहु और हरिभद्र की अज्ञात रचनाएँ  
 आचार्य मानतुंगसूरिविरचित भक्तामरकाव्य  
 आचार्य वादिराजसूरि  
 आचार्य सिद्धसेन दिवाकर की साहित्य साधना  
 आचार्य हरिभद्र और उनका साहित्य  
 आचार्य हरिभद्र और धर्मसंग्रहणी - क्रमशः

”  
 आचार्य हेमचन्द्र और कुमारपालचरित  
 आचार्य हेमचन्द्र के पट्टधर आचार्य रामचन्द्र के  
 अनुपलब्ध नाटकों की खोज अत्यावश्यक  
 आचार्य हेमचन्द्र के योगशास्त्र पर एक  
 प्राचीन टीका

श्रमण : अतीत के झरोखे में

### लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२९	२	१९७७	३-१३
३०	१२	१९७९	३-१७
१३	१०	१९६२	९-१२
४	७-८	१९५३	२५-२९
१९	११	१९६८	१५-२१
२५	३	१९७४	२५-३१
३३	७	१९८२	१-४
१९	८	१९६८	२६-२९
२०	२	१९६८	५-१४
४४	४-६	१९९३	१-१२
२०	१०	१९६९	२१-२९
२०	११	१९६८	१६-२२
२२	११	१९७१	३-१०
१८	४	१९६७	२१-२५
१८	११	१९६७	२-१७

श्री जुगलकिशोर मुख्तार



लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आचारांग का परिचय	मुनिश्री कन्हैयालाल जी 'कमल'	१२	५	१९६१	२७-३५
आचारांग के कुछ महत्वपूर्ण शब्द	साध्वी श्री कनकप्रभा	१८	१-२	१९६६	६१-६४
आचारांगसूत्र -क्रमशः	पं० दलसुख मालवणिया	८	१२	१९५७	४-७
"	"	९	१	१९५७	७-९
"	"	९	२	१९५७	१०-२
"	"	९	३	१९५८	२३-२५
"	"	९	४	१९५८	३-६
"	"	९	५	१९५८	३-६
"	"	९	६-७	१९५८	३४-३७
"	"	९	८	१९५८	९-१५
"	"	९	९	१९५८	२६-२९
"	"	९	१०	१९५८	२५-२७
"	"	३९	२	१९८७	१-१९
आचारांगसूत्र- एक विश्लेषण	डॉ० सागरमल जैन	१७	८	१९६६	१९-२६
आर्षाप्रकृत का व्याकरण -क्रमशः	पं० बेचरदास दोशी	१७	९	१९६६	१२-१४
"	"	१८	३	१९६७	२९-३१
"	"	१८	८	१९६७	३-६

एक अज्ञात ग्रन्थ की उपलब्धि  
 एक अज्ञात जैनमुनि का संस्कृत दूत काव्य "हंसदूत"  
 एक अप्रकाशित प्राचीन प्राकृत सूत्र का अध्ययन  
 एक आश्चर्यमय ग्रन्थ  
 उत्तराध्ययनः नामकरण व कर्तृत्व  
 उत्तराध्ययनसूत्र  
 उत्तराध्ययनसूत्र : धार्मिक काव्य  
 उपदेशमाला (धर्मदासगणि) एक समीक्षा  
 उपा० भक्तिलाभरचित न्यायसारअवचूर्णि  
 ऋग्वेद में अर्हत और ऋषभवाची  
 ऋचायें : एक- अध्ययन  
 ऋषिभाषित का अन्तस्तल  
 ऋषिभाषित का परीक्षण  
 ऋषिभाषित का सामाजिक दर्शन  
 कर्मप्राभृत अथवा षट्खण्डागमः एक परिचय  
 कर्मयोगी कृष्ण के आगामी भव  
 कतिपय जैनैतर ग्रंथों की अज्ञात जैन टीकाएं

श्री अगरचंद नाहटा  
 श्री अगरचन्द नाहटा  
 ,,  
 डॉ० सूर्यदेव शर्मा  
 श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री  
 श्री मिश्रीलाल जैन  
 प्रो० कानजी भाई पटेल  
 दीनानाथ शर्मा  
 श्री अगरचंद नाहटा  
 डॉ० सागरमल जैन  
 श्री मनोहर मुनि  
 ,,  
 साध्वी (डॉ०) प्रमोद कुमारी  
 डॉ० मोहनलाल मेहता  
 श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री  
 श्री अगरचंद नाहटा

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१२	१०	१९६१	२९-३०
१२	५	१९६१	१७-२१
२२	८	१९७१	२३-२५
६	४	१९५५	२९-३२
२९	३	१९७८	३-११
३५	५	१९८४	२-२६
१५	७-८	१९६४	४८-५७
४२	१-३	१९९१	९७-१००
२१	४	१९७०	१९-२१
४५	४-६	१९९४	१८५-२०२
११	३	१९६०	७-८
१५	४	१९६४	२६-३१
४३	१-३	१९९२	६९-७९
१६	१	१९६४	२०-२७
२३	९	१९७२	३-९
३०	२	१९७८	२६-३१



## लेख

कन्नड़ में जैन साहित्य  
कवि छल्लकृत अरुडकमल्ल का  
चार भाषाओं में वर्णन  
कवि देपाल की अन्य रचनायें  
कवि रत्नाकर और रत्नाकरशतक  
कविवीर और उनका जंबूसामिचरित  
कल्पसूत्र का हिन्दी पद्यानुवाद  
कल्याणसागरसूरि को प्रेषित सचित्र विशप्ति-लेख  
कषायप्राभृत

”  
कषायप्राभृत की व्याख्यायें

क्या 'सपकमाला' नामक रचनाएँ अलंकार

शास्त्र सम्बन्धी हैं?

क्या व्याख्याप्रज्ञप्ति का १५वां शतक प्रक्षिप्त है?

काव्यकल्पलतावृत्ति

कीर्तिवर्द्धनकृत सदयवत्स-सावलिंगाचउपई

कुन्दकुन्दाचार्य की साहित्यिक उद्भावनाएँ

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

पं० के० भुजबली शास्त्री

श्री भैरवलाल नाहटा

श्री अगरचंद नाहटा

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

डॉ० देवेन्द्र कुमार

श्री अगरचंद नाहटा

”

डॉ० मोहनलाल मेहता

”

”

श्री अगरचन्द नाहटा

”

श्री अशोककुमार मिश्र

श्री रमेशमुनि शास्त्री

वर्ष	अंक	ई० सम्	पृष्ठ
२४	७	१९७३	१३-२०
४३	७-९	१९९२	५३-५८
३४	१	१९८२	२९-३३
१९	१०	१९६८	१७-२४
२०	४	१९६९	८-१७
६	१२	१९५५	२-८
१६	९	१९६५	२९-३०
१६	१०	१९६५	१६-२१
१६	११	१९६५	२२-२६
१८	५	१९६७	१५-२२
२९	३	१९७८	१२-१७
२९	९	१९७०	१२-१९
९	५	१९५८	१२-१५
२८	२	१९७६	२२-२६
२७	१२	१९७६	३०-३२

कुंभारियके जैन अभिलेखों का सांस्कृतिक-अध्ययन

”

कुरलकाव्य

कुवलयमालाकहा का कथा-स्थापत्य-संयोजन

कुवलयमाला की मुख्य कथा और अवान्तर -

कथाएँ (क्रमशः)

”

”

”

”

”

”

“कुवलयमाला” मध्ययुग के आदिकाल की एक -

जैन कथा

कुवलयमालाकहा में उल्लिखित कडंग, चन्द्र -

और तार द्वीप

गीतासंज्ञक जैन रचनाएँ

क्षेत्रज्ञ शब्द का स्वीकार्य प्राचीनतम अर्धमागधी रूप

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

डॉ० हरिहर सिंह

”

श्री फूलचंद जैन ‘प्रेमी’

श्री प्रेमसुमन जैन

वर्ष

२८

२८

२३

१८

अंक

११

१२

१

१०

ई० सन्

१९७७

१९७७

१९७१

१९६७

पृष्ठ

३०-३६

२५-३८

२४-२९

३-८

२६

२६

२६

२६

२६

२६

३

४

६

७

८

९

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

३-८

३-८

१०-११

१९-२१

१९-२२

२१-२५

१८

श्री कस्तूरमल बांठिया

१९६७

४

२-१७

२३

श्री प्रेमसुमन जैन

१९७२

८

१३-८

२

श्री अगरचन्द नाहटा

१९५१

९

२५-२७

४३

डॉ० के० आर० चन्द्र

१९९२

१०-१२

४१-४४



## लेख

क्षेत्रज्ञ शब्द के विविध रूपों की कथा और उसका-  
अर्धमागधी रूपान्तर  
चतुर्विंशतिस्तव का पाठ भेद और एक अतिरिक्त गाथा  
चन्द्रवेध्यक आदि-सूत्र अनुपलब्ध नहीं हैं ।  
चन्द्रवेध्यक (प्रकीर्णक) एक आलोचनात्मक -  
परिचय  
चन्दन-मलयागिरि  
चूर्णियाँ और चूर्णिकार  
छीहल की एक दुर्लभ प्रबन्ध कृति  
जयप्रभसूरिरचित कुमारसंभवटीका  
जयसिंहसूरिरचित अप्रसिद्ध ऋषभदेव और वीर-  
चरित्र युगल काव्य  
जिनचन्द्रसूरिकृत क्षपक शिक्षा का विषय  
जिनराजसूरिकृत नैषधमहाकाव्यवृत्ति  
जिनसेन का पार्श्वभ्युदय : मेघदूत का माखौल  
जीवित साहित्य की वाणी  
जैकोबी और वासी-चन्दन-कल्प -क्रमशः

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
४१	१०-१२	१९९०	४९-५६
२२	१२	१९७१	१३-१७
५	६	१९५४	१६-१७
४३	१-३	१९९२	४५-५३
२७	५	१९७६	२०-२५
६	१०	१९५५	१०-१४
२७	९	१९७६	२२-२८
२१	७	१९७०	३१-३३
३०	३	१९७९	१९-२३
२२	९	१९७१	३४-३५
२०	८	१९६९	१५-१८
१८	११	१९६७	२८-३२
२	९	१९५१	३६-३७
१७	५	१९६६	२७-३४

”

श्री अगरचंद नाहटा

”

श्री सुरेश सिसोदिया

श्री अशोक कुमार मिश्र

डॉ० मोहनलाल मेहता

श्री अशोककुमार मिश्र

श्री अगरचंद नाहटा

श्री अगरचंद भंवरलाल नाहटा

”

”

श्री श्रीरंजन सूरिदेव

श्री विजय मुनि

मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी 'द्वितीय'

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१७	६	१९६६	२३-२८
१७	७	१९६६	१४-२०
१७	८	१९६६	१३-१८
४२	४-६	१९९१	८९-९२
१२	११	१९६१	३६-४०
४	१०	१९५३	३५-३७
४	१२	१९५३	२९-३०
१	९	१९५०	९-१४
४८	१०-१२	१९९७	१-२८
३५	८	१९८४	६-९
७	५	१९५६	९-१२
४५	४-६	१९९४	२३९-२५३
२९	६	१९७८	१४-२४
२९	३	१९७८	१८-२१
४	७-८	१९५३	४७-५१

”

”

”

जैन अभिलेखों की भाषाओं का स्वरूप एवं -

विविधताएँ

जैन आगम और विज्ञान

जैन आगमों का मन्थन -क्रमशः

”

जैन आगमों का महत्त्व और कर्तव्य

जैन आगमों की मूल भाषा : अर्धमागधी या शौरसेनी

जैन आगमों में विद्वत् गोष्ठी

जैन आगमों में निर्युक्तियाँ

जैन आगमों में हुआ भाषिक स्वरूप परिवर्तन -

एक विमर्श

जैन आलंकारिकों की रसविषयक मन्यताएँ

जैन कला विषयक साहित्य

जैन कन्नड़ वाङ्मय

श्रीनारायण दुबे

श्री कस्तूरमल बाँठिया

डॉ० इन्द्र

”

श्री अगरचन्द नाहटा

डॉ० सागरमल जैन

श्री सौभाग्यमल जैन

श्री मोहनलाल मेहता

डॉ० सागरमल जैन

डॉ० कमलेशकुमार जैन

डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन

श्री के० भुजबली शास्त्री



लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन कवि जटमलकृत प्रेमविलासकथा	श्री अशोककुमार मिश्र	२६	११	१९७५	२०-२३
जैन कवि विक्रम और उनका नेमिदूत काव्य	श्री रविशंकर मिश्र	३२	१०	१९८१	९-१४
जैन कृष्ण साहित्य -क्रमशः	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	२२	९	१९७१	१०-१६
“जैनचम्पूकाव्य” - एक परिचय	डॉ० रामप्रवेश कुमार	२२	१०	१९७१	१४-१९
जैन धर्म दर्शन का स्रोत-साहित्य	डॉ० मोहनलाल मेहता	४८	१-३	१९९७	७१-७५
जैन पुराण साहित्य	पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री	३०	५	१९७८	३-१४
जैन, बौद्ध और वैदिक साहित्य-एक तुलनात्मक - अध्ययन	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	४	७-८	१९५३	३५-३८
जैन महापुराण : एक कलापरक अध्ययन	डॉ० कुमुद गिरि	३२	५	१९८१	१-२८
जैनरत्नशास्त्र	पं० अम्बालाल प्रेमचंद शाह	४५	१०-१२	१९९४	३३-३६
जैन रास की दुर्लभ हस्तलिखित प्रति : विक्रम - लीलावतीचौपाई	डॉ० सुरेन्द्रकुमार आर्य	२१	४	१९७०	२९-३२
जैन रास साहित्य	श्री अगरचंद नाहटा	२६	११	१९७५	१३-१४
जैन लोककथा साहित्य : एक अध्ययन	श्री महेन्द्र राजा	७	४	१९५६	१५-१६
जैन विद्या के अध्ययन एवं संशोधन	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	४	११	१९५३	१३-२८
केन्द्रों की -स्थापना	डॉ० के० ऋषभचन्द्र	३४	७	१९८३	२२-२५

## लेख

जैन विद्वानों के कुछ हिन्दी वैद्यक ग्रन्थ  
 जैन व्याकरणशास्त्रों में शोध की संभावनाएँ  
 जैन व्याख्या और विचार  
 जैन व्याख्या पद्धति  
 जैन शास्त्रों में वर्णित १८ श्रेणियों का उल्लेख  
 जैन साहित्य और अनुसंधान की दिशा  
 जैन साहित्य और सांस्कृतिक संवेदना  
 जैन साहित्य का इतिहास और इसकी प्रगति  
 जैन साहित्य का नवीन अनुशीलन  
 जैन साहित्य का नवीन संस्करण  
 जैन साहित्य का सिंहावलोकन  
 जैन कथा साहित्य का सार्वजनीन महत्त्व  
 जैन साहित्य का विहंगावलोकन  
 जैन साहित्य का बृहद इतिहास, भाग ५  
 के कतिपय संशोधन  
 जैन साहित्य की प्रतिष्ठा  
 जैन साहित्य के विषय में अजैन विद्वानों की दृष्टियाँ

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२७	११	१९७६	१५-२४
३०	४	१९७९	१३-२२
११	१२	१९६०	२१-२४
४	७-८	१९५३	७१-७३
२७	२	१९७५	१८-२१
११	१	१९५९	३३-३५
२७	९	१९७६	११-२१
६	२	१९५४	३०-३९
४	७-८	१९५३	११-१२
४	७-८	१९५३	१३-१४
९	५	१९५८	३०-४०
५	५	१९५४	२९-३८
५	२	१९५३	८-१४
२१	९	१९७०	२०-२३
११	६	१९६०	३२-३४
५	१	१९५३	२५-२८

आचार्य राजकुमार जैन

श्री रामकृष्ण पुरोहित

डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा

पं० सुखलाल जी

श्री ज्ञानचन्द

श्री गोकुलचंद

श्री गुरुचरणसिंह मोंगिया

पं० दलसुख मालवणिया

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

वाल्टर शूबिंग

पं० दलसुख मालवणिया

मुनि जिनविजय जी

डॉ० इन्द्र

श्री अगरचंद नाहटा

श्री गोकुलचंद्र जैन

डॉ० इन्द्र



लेख

जैन साहित्य निर्माण की नवीन योजना

जैन साहित्य के संकेत चिन्ह

जैन साहित्य में कृष्ण-कथा

जैन साहित्य सेवा

जैन हरिवंशपुराण-एक सांस्कृतिक अध्ययन

जैनागम-पदानुक्रम -क्रमशः

लेखक

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

डॉ० इन्द्र

श्रीमती रीता सिंह

डॉ० इन्द्र

लल्लू पाठक

डॉ० मोहनलाल मेहता

श्री जमनालाल जैन

” ” ” ” ” ” ” ” ” ”

वर्ष

३

५

३९

९

३३

२६

२६

२६

२६

२६

२६

२७

२७

२७

२७

२७

अंक

७-८

२

१०

१०

११

३

४

५

६

७

८

१

२

३

४

५

ई० सन्

१९५२

१९५३

१९८८

१९५८

१९८२

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७५

१९७६

१९७६

१९७६

पृष्ठ

९-१२

३०-३८

२७-३२

१३-१५

१५-२२

२६-३३

२६-३०

२८-३१

२१-२५

२२-२६

३०-३२

२९-३१

२४-२७

२७-३०

३१-३३

३१-३४

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१७	६	१९७६	२९-३१
१७	७	१९७६	२७-३०
१७	८	१९७७	२९-३०
१७	९	१९७६	३७-३८
१७	१०	१९७५	२९-३१
१७	११	१९७६	३०-३२
१७	१२	१९७६	३३-३४
४	७-८	१९५३	११-१२
३२	५	१९८१	७८-८६
२३	३	१९७२	२०-२१
२९	१२	१९७८	३-११
११	६	१९६०	५९-६२
४६	१०-१२	१९९५	१५-२३
२५	१-२	१९७३	४३-५२
४७	१०-१२	१९९६	५३-६४

जैन साहित्य का नवीन अनुशीलन

जैनचार्यों द्वारा आयुर्वेद साहित्य में योगदान

जैनों में सती प्रथा

ज्योतिषशास्त्र और सन्मति वर्धमान महावीर

ज्ञानार्णव (ग्रन्थ परिचय)

तरंगलोला और उसके रचयिता से सम्बन्धित -

भ्रान्तियों का निवारण

तीर्थंकर प्रतिमाओं का उद्भव और विकास

तित्योगाली (तिथ्योद्गालिक) प्रकीर्णक की गाथा -

संख्या का निर्धारण

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल .

आचार्य राजकुमार जैन

श्री चम्पालाल सिंघई

डॉ० भूपसिंह राजपूत

श्री अगरचंद नाहटा

पं० विश्वनाथ पाठक

डॉ० हरिहर सिंह

अतुलकुमार प्रसाद सिंह



## लेख

तेरापंथ सम्प्रदाय के हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रहालय  
 शुल्लवंश की एक अपूर्ण प्रशस्ति  
 तेलगूभाषा के अवधानी विद्वानों की परम्परा  
 दशरूपक एक अपभ्रंश दोहा : कुछ तथ्य  
 दशरूपक की एक अव्याख्यात्मक गाथा  
 दशरूपकावलोक में उद्धृत अपभ्रंश उदाहरण  
 दशाश्रुतस्कन्ध की बृहद् टीका और टीकाकार मतिकीर्ति  
 दशाश्रुतस्कन्ध के विविध संस्करण एवं टीकाएँ  
 दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति : अन्तरावलोकन  
 दशाश्रुतस्कन्ध निर्युक्ति में इङ्कित दृष्टांत  
 द्वीपसागरप्रज्ञप्ति  
 धम्मपद और उत्तराध्ययन का एक तुलनात्मक अध्ययन  
 ध्वन्यालोक एवं दशरूपक की दो प्राकृत गाथाएं-  
 एक चिन्तन  
 धूम्रावली-प्रकरणम्  
 नन्दीसूत्र की एक जैनैतर टीका  
 निर्युक्ति साहित्य : एक पुनर्विन्तन

## लेखक

श्री अगरचंद नाहटा  
 श्री भैरवलाल नाहटा  
 श्री अगरचंद नाहटा  
 डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन  
 पं० विश्वनाथ पाठक  
 डॉ० हविल्लभ भयाणी  
 श्री अगरचंद नाहटा  
 ”  
 डॉ० अशोककुमार सिंह  
 ”  
 श्री अगरचंद नाहटा  
 महेन्द्रनाथ सिंह  
 श्री विश्वनाथ पाठक  
 साध्वी अतुलप्रभा  
 श्री अगरचंद नाहटा-  
 डॉ० सागरमल जैन

## वर्ष

११  
 १८  
 ११  
 ३३  
 ३३  
 ३३  
 २९  
 २९  
 ४८  
 ४८  
 १६  
 ३७  
 ३०  
 ४७  
 १६  
 ४५

## अंक

५  
 १-२  
 २  
 ७  
 ५  
 १०  
 ५  
 २  
 १०-१२  
 १-३  
 ३  
 ८-९  
 ७  
 १-३  
 ७  
 ४-६

## ई० सन्

१९६०  
 १९६६  
 १९५९  
 १९८२  
 १९८२  
 १९८२  
 १९७८  
 १९७७  
 १९९७  
 १९९७  
 १९६५  
 १९८६  
 १९७९  
 १९९६  
 १९६५  
 १९९४

## पृष्ठ

२३-२५  
 २१-१५  
 २४-२७  
 २४-२६  
 २०-२१  
 ३८  
 ३-९  
 २१-२४  
 ३१-४४  
 ४७-५९  
 १८-१९  
 १-९  
 ३२-३६  
 ६०-६४  
 १३-१४  
 २०३-२३३

निर्युक्तियाँ और निर्युक्तिकार

निशीथचूर्णि पर एक दृष्टि

नेमिचन्द्रजी शास्त्री और 'अरिहा' शब्द

पंचास्तिकाय के टीकाकार और टीकाएं

पंचेन्द्रिय संवाद : एक आध्यात्मिक रूपक काव्य

पंजाबी में जैन साहित्य की आवश्यकता

पं० जोधराज कासलीवाल और उनका सुखविलास डॉ० रमेशचन्द्र जैन

पं० मुनि विनयचन्द्रकृत ग्रहदीपिका

पं० रामचंद्र गणिरचित सुमुखनृपतिकाव्य

पउमचरित-परम्परा, संदर्भ और शिल्प

पउमचरियं : संक्षिप्त कथावस्तु

”

”

”

पउमसिरीचरित के मूल स्रोत

”

पञ्चीसवीं निर्वाण-शताब्दी के आयोजनों में -

आगम-वाचना भी हो

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री मोहनलाल मेहता

श्री विजय मुनि

पं० बेचरदास दोशी

डॉ० लालचन्द जैन

डॉ० मुन्नी जैन

श्री माईदयाल जैन

रमेशचन्द्र जैन

श्री अग्रचंद नाहटा

”

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

डॉ० के० ऋषभ चन्द्र

”

”

”

”

”

श्री नन्दलाल मारु

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
५	११	१९५४	९-१५
११	६	१९६०	५४-५८
२०	३	१९६९	३२-३६
३०	४	१९७९	३-१२
४८	७-९	१९९७	५१-६७
१२	५	१९६१	२२-२३
२५	६	१९७४	१४-१७
२१	३	१९७०	१५-१७
१९	८	१९६८	३०-३१
२३	१२	१९७२	३-७
१७	९	१९६६	८-११
१७	१०	१९६६	२२-२७
१७	११	१९६६	२६-३०
१७	१२	१९६६	३-८
१७	३	१९६६	३-८
१७	४	१९६६	१६-२३
२५	६	१९७४	३२-३५



लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
पद्मचरित : एक महाकाव्य				
पद्मचरित की भाषा और शैली	२५	७	१९७४	३-६
पद्ममंदिरचित बालावबोध प्रवचनसार का नहीं प्रवचनसारोद्धार का है	२३	११	१९७२	१०-१८
परमानन्दविलास : एक परिचय				
पश्चिम भारत का जैन संस्कृत साहित्य को योगदान	२१	५	१९७०	३०-३१
पाणिनीय व्याकरण का सरलीकरण और आचार्य हेमचन्द्र	२८	११	१९७७	१३-१७
पालि क्या बोलचाल की भाषा थी ?	२४	८	१९७३	३-१६
पार्श्वभ्युदय में शृंगाररस				
पार्श्वभ्युदय में प्रकृति-चित्रण	४७	४-६	१९९६	३-१०
पिण्डनिर्युक्ति	२०	६	१९६९	१७-२१
पुण्डरीक का दृष्टांत	२८	७	१९७७	९-१५
पुराणों में ऋषभदेव	२८	३	१९७७	२५-३०
पुरुरवेवचम्पू का आलोचनात्मक परिशीलन	१७	९	१९६६	२८-३१
पुष्पदन्त और सूर का कृष्ण लीलाचित्रण	१५	५-६	१९६४	१२-१४
पुष्पदन्त का कृष्ण काव्य	२५	९	१९७४	११-१४
	३८	८	१९८७	७-१३
	२२	११	१९७०	३-११
	१९	१-२	१९६७	३-१३

पुष्पदन्त का कृष्ण-काव्य : एक अनुशीलन

”

पुष्पदन्त की रामकथा

पुष्पदन्त की रामकथा की विशेषताएँ

पैतालीस और बत्तीस सूत्रों की मान्यता पर विचार

४५ आगम और मूलसूत्र की मान्यता पर विचार

प्रबन्धकोश का ऐतिहासिक वैभव

प्रसिद्धिप्राप्त श्वेताम्बर जैनों की कुछ कृत्रिम कृतियाँ

प्राकृत का अध्ययन

प्राकृत और उसका विकास स्रोत

प्राकृत और उसका साहित्य

प्राकृत की बृहत्कथा “वसुदेवहिण्डी” में वर्णित कृष्ण

प्राकृत के विकास में बिहार की देन-क्रमशः

”

प्राकृत जैन कथा साहित्य-क्रमशः

”

प्राकृत ‘पठमचरिय’ रामचरित

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

कु० प्रेमलता जैन

”

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

कु० प्रेमलता जैन

श्री अगरचन्द नाहटा

”

डॉ० प्रवेश भारद्वाज

श्री कस्तूरमल बांठिया

डॉ० सुनीतकुमार चांटुर्ज्या

श्री श्रीरंजन सूरिदेव

श्री अगरचन्द नाहटा

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

”

”

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

”

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२७	४	१९७६	३-९
२७	५	१९७६	३-९
१७	१-२	१९६५	१४-१८
२८	१	१९७६	५-१२
१	११	१९५०	२४-२९
३३	६	१९८२	६१-६३
४१	४-६	१९९०	८९-१००
१९	४	१९६८	९-३०
१९	९	१९६८	१०-१२
२२	६	१९७१	३-९
१०	३	१९५९	१३-१९
४५	७-९	१९९४	२३-३०
२१	९	१९७०	४-१४
२१	१०	१९७०	२०-३६
२२	५	१९७१	३-१०
२२	६	१९७१	१६-२१
२२	२	१९७०	१४-१९



## लेख

प्राकृत भद्रबाहुसंहिता का अर्धकाण्ड  
प्राकृत भाषा के कुछ ध्वनि-परिवर्तनों की ध्वनि -  
वैज्ञानिक व्याख्या  
प्राकृत भाषा और जैन आगम  
प्राकृत भाषा के चार कर्मग्रन्थ  
प्राकृत व्याकरण और भोजपुरी का 'केर' प्रत्यय-क्रमशः

”

प्राकृत व्याकरण : वररुचि बनाम हेमचन्द्र -  
अंधानुकरण या विशिष्ट प्रदान  
प्राकृत साहित्य के इतिहास के प्रकाशन की -  
आवश्यकता

प्राकृत साहित्य में श्रीदेवी की लोक-परम्परा  
पार्श्वभ्युदयकाव्य : विचार-वितर्क  
प्रज्ञाचक्षु राजकवि श्रीपाल की एक अज्ञात रचना-शतांश  
प्रद्युम्नचरित में प्रयुक्त छन्द-एक अध्ययन  
प्राचीन जैन कथा साहित्य का उद्भव, विकास -  
और वसुदेवहिंदा

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री अगरचन्द नाहटा	२७	५	१९७६	१०-१४
डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२८	५	१९७७	३-७
डॉ० रमेशचन्द्र जैन	३८	५	१९८७	१६-२२
श्री अगरचन्द नाहटा	१३	१०	१९६२	२४-२५
पं० कपिलदेव गिरि	२२	१०	१९७१	२९-३८
”	२२	११	१९७१	२४-३८
डॉ० के० आर० चन्द्र	४२	४-६	१९९१	११-१९
श्री अगरचन्द नाहटा	४	६	१९५३	२१-२७
श्री रमेश जैन	२८	६	१९७७	२१-२५
डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१९	१-२	१९६७	३९-४२
श्री अगरचन्द नाहटा	१८	५	१९६७	६-८
कु० भारती	४८	७-९	१९९७	६८-८०
डॉ० (श्रीमती) कमल जैन	४६	१०-१२	१९९५	५२-६३

## लेख

प्राचीन जैन राजस्थानी गद्य साहित्य  
प्राचीन जैन साहित्य के प्रारम्भिक निष्ठासूत्र  
प्राचीन पांडुलिपियों का संपादन : कुछ प्रश्न और हल  
प्राचीन भारतीय वाङ्मय में पार्श्वचरित  
प्राणप्रिय काव्य का रचनाकाल, श्लोक संख्या -  
और सम्प्रदाय

बंगला आदि भाषाओं के सम्बन्धवाची प्रत्यय  
ब्राह्मी लिपि और ऋषभनाथ  
बुन्देलखण्डी भाषा में प्राकृत के देशीशब्द  
बीसवीं शती का जैन इतिहास  
भक्तामर की एक और सचित्रप्रति  
भक्तामरस्त्रोत की सचित्रप्रतियाँ  
भक्तामरस्त्रोत के श्लोकों की संख्या ४४ या ४८

भगवान् महावीर की २५वीं निवार्णशती कैसे-मनाये?  
भगवान् महावीर की मंगल विरासत  
भट्टअकलंककृत लघीयश्रव्य : एक दार्शनिक-अध्ययन  
भट्टारक सकलकीर्ति और उनकी सद्भाषितावली

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री अगरचंद नाहटा	७	१०	१९५६	११-१८
पं० दलसुखभाई मालवणिया	४०	११	१९८९	११-२०
डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२९	११	१९७८	१९-२३
डॉ० जयकुमार जैन	३२	५	१९८०	२९-४५
श्री अगरचंद नाहटा	३३	७	१९८२	२७-२९
पं० कपिलदेव गिरि	२२	१२	१९७१	१८-२९
डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२७	१	१९७५	२५-२८
डॉ० कोमलचंद जैन	२१	७	१९७०	२०-२३
श्री अगरचन्द नाहटा	५	३	१९५४	२०-२४
"	२४	७	१९७३	२१-२४
"	२२	४	१९७१	१३-१९
"	२१	१०	१९७०	२७-३१
श्री नन्दलाल मारु	१९	१-२	१९६७	३२-३६
पं० सुखलाल संघवी	४०	६	१९८९	१-८
हेमन्तकुमार जैन	४१	७-९	१९९०	८३-९०
डॉ० रमेशचन्द्र जैन	२५	१-२	१९७३	२९-३४



## लेख

भद्रबाहु का कालमान

भरतमुनि द्वारा प्राकृत को संस्कृत के साथ प्रदत्त-  
सम्मान और गौरवपूर्ण स्थान

भविसयत्तकहा तथा अपभ्रंश कथाकाव्य; कुछ -  
प्रतिस्थापनायें

भारतीय आर्यभाषा और अपभ्रंश

भारतीय आचार्यों की दृष्टि में काव्य के हेतु

भारतीय कथा साहित्य में पद्मचरित का स्थान

भारतीय प्रतीक परम्परा में जैन साहित्य का योगदान

भारतीय वाङ्मय में प्राकृत भाषा का महत्व

भारतीय साहित्य की रमणीय काव्य रचना : -

गड्डवहो

भाषा और साहित्य

भाष्य और भाष्यकार

मंगलकलशकथा

मल्लिषेण और उनकी स्याद्वादमंजरी

## लेखक

मुनिश्री फूलचन्द जी

डॉ० के०आर०चन्द्र

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

”

डॉ० गंगासागर राय

श्री रमेशचन्द्र जैन

डॉ० प्रेमचंद जैन

पं० बेचरदास दोशी

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

श्री कन्हैयालाल सरावगी

श्री मोहनलाल मेहता

श्री भैरवलाल नाहटा

डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा

वर्ष

६

४२

२३

२७

१४

२४

२१

१९

२४

२७

६

१९

२६

ई० सन्

१९५४

१९९१

१९७१

१९७६

१९६३

१९७३

१९७०

१९६८

१९७३

१९७६

१९५५

१९६८

१९७५

अंक

१

१-३

२

११

९

१०

५

१०

७

१२

४

७

६

पृष्ठ

६-८

७१-७४

६-११

९-१२

२४-२७

३-११

३२-३७

६-१६

३-७

३-१४

४-१२

२६-३४

३-६

महाकथा कुवलयमाला के रचनाकार का उद्देश्य -

और पात्रों का आयोजन

महाकवि बनारसीदास का रसदर्शन

महाकवि जिनहर्ष और उनकी कविता

महाकवि स्वयंभू के काव्यविचार

महान् साहित्यकार आचार्य हरिभद्रसूरि

महाराष्ट्री प्राकृत

महावीर-सम्बन्धी एक अज्ञात संस्कृत चरित्र

महावीर-सम्बन्धी साहित्य

महावीर से पहले का जैन इतिहास

महेन्द्रकुमार 'न्यायाचार्य' द्वारा सम्पादित एवं -

अनूदित षड्दर्शनसमुच्चय की समीक्षा

महो० समयसुन्दर का एक संग्रहग्रंथ 'गाथासहस्री'

महोपाध्याय समयसुन्दर-रचित कथाकोश

माणिक्यनन्दीविरचित परीक्षामुख

मानवमूर्त्यों की काव्यकथा भविसयत्तकहा

मुनिमेघकुमाररचित किरातमहाकाव्य की अवचूरि

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२४	११	१९७३	१०-१३
२३	६	१९७२	३१-४१
२९	५	१९७८	२४-२६
२४	१०	१९७३	२५-२७
१७	१-२	१९६५	५३-५५
१९	११	१९६८	५-८
२६	१-२	१९७४	५२-५६
२५	४	१९७४	२७-३२
४	७-८	१९५३	३०-३४
४८	४-६	१९९७	१४१-१४६
२३	११	१९७२	२३-२८
२८	१	१९७६	२४-२७
२८	५	१९७७	२३-२४
१९	९	१९६८	५-९
२०	२	१९६८	१५-१७

डॉ० के०आर० चन्द्र

श्री गणेशप्रसाद जैन

श्री मोहन 'रत्नेश'

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन

पं० बेचरदास दोशी

श्री अगरचन्द नाहटा

कु० मंजुला मेहता

डॉ० इन्दु

डॉ० सागरमल जैन

श्री अगरचंद नाहटा

श्री भैरवलाल नाहटा

डॉ० मोहनलाल मेहता

डॉ० देवेन्द्र कुमार

श्री अगरचंद नाहटा



लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मुनिरामसिंहकृत 'पाहुडदोहा' एक अध्ययन	श्री प्रेमचंद जैन	१८	६	१९६७	२-९
मूक साहित्यसेवी : श्री पन्नालालजी	श्री माईदयाल जैन	४	९	१९५३	७-११
मूलअर्धमागधी के स्वरूप की पुनर्रचना	डॉ० के० आर० चन्द्र	४२	७-१२	१९९१	११-१५
मूलाचार	श्री प्रेमचंद जैन	२१	३	१९७०	९८-२४
मेघदूत की एक अज्ञात बालबोधिका पंजिका	श्री अगरचंद नाहटा	१५	७-८	१९६४	६३-६४
मेघविजय के समस्यापूर्ति काव्य	श्री श्रेयांसकुमार जैन	२९	१	१९७७	१७-२२
मेरुतुंग के जैनमेघदूत का एक समीक्षात्मक अध्ययन	श्री रविशंकर मिश्र	३२	५	१९८०	७०-७७
मेवाड़ में चित्रित कल्पसूत्र की एक	डॉ० कमलेश कुमार जैन				
विशिष्ट प्रति	श्री अगरचन्द नाहटा	२८	८	१९७७	२४-२६
योगनिधान	श्री कुन्दनलाल जैन	४८	१-३	१९९७	२१-३२
रघुवंश की अज्ञात जैन टीका	श्री अगरचंद नाहटा	१५	१	१९६३	३१-३२
रस-विवेचन : अनुयोगद्वार सूत्र में		२७	१२	१९७६	२३-२९
रहस्यवादी जैन अपभ्रंशकाव्य का हिन्दी साहित्य		१६	४	१९६५	२६-३१
पर प्रभाव -क्रमशः	श्री प्रेमचन्द्र जैन	१६	५	१९६५	१२-१७
"	"	१६	६	१९६५	१२-१७
"	"	१६	७	१९६५	१५-१९
राजस्थानी के विकास में अपभ्रंश का योगदान	श्री रमेशचन्द्र जैन	२०	३	१९६९	२३-३१

राजस्थानी जैन साहित्य

”

राजस्थानी एवं हिन्दी जैन साहित्य

राजस्थानी लोक-कथाओं सम्बन्धी साहित्य -

निर्माण में जैनों का योगदान

रामचन्द्रसूरि और उनका साहित्य

रायपसेणइ उपांग और उसका रचनाकाल-क्रमशः

”

”

”

”

‘रायपसेणइउपांग और उसका रचनाकाल की समीक्षा

लंदन में कतिपय अग्राप्य जैन ग्रन्थ

लोक साहित्य के आदिसर्जक-जैन विद्वान्

लौकागच्छीय विद्वानों के तीन संस्कृत ग्रन्थ

वचन-कोष

वज्जालग की कुछ गाथाओं के अर्थ पर

पुनर्विचार (क्रमशः)

लेखक

श्री अगरचन्द्र नाहटा

”

श्री भूवरलाल नाहटा

श्री अगरचन्द्र नाहटा

डॉ० कृष्णपाल त्रिपाठी

श्री कस्तूरमल बाठिया

”

”

”

”

मुनि कल्याणविजय

श्री अगरचन्द्र नाहटा

”

”

श्री भागचन्द्र जैन

पं० विश्वनाथ पाठक

वर्ष

६

६

३९

१०

४५

१५

१५

१५

१६

१६

१६

२

७

११

१२

३१

अंक

५

८

६-७

९

७-९

१०

११

१२

१

२

४

५

२

१०

३

७

ई० सन्

१९५५

१९५५

१९८८

१९५९

१९९४

१९६४

१९६४

१९६४

१९६४

१९६४

१९६४

१९५१

१९५५

१९६०

१९६१

१९८०

पृष्ठ

१५-२२

४-९

२-४

२९-३१

१०-२२

९-१६

२-८

३-१०

३-११

३-११

३८

२७-२९

९-१२

२४-२८

३४-३६

३-७



लेख

”  
वसन्तविलासमहाकाव्य का काव्य-सौन्दर्य  
वसुदेवहिण्डी का समीक्षात्मक अध्ययन  
वसुदेवहिण्डी में रामकथा  
वसुमतीमहाकाव्य  
वाग्भट्टालंकार

”  
वाचक श्रीवल्लभरचित 'विदग्धमुखमण्डन' की  
दर्पण टीका की पूरी प्रति अन्वेषणीय है  
वासुपूज्यचरितम् : एक अध्ययन - क्रमशः

”  
विक्रमलीलावतीचौपाईविषयक विशेष ज्ञातव्य  
विद्याविलासरास  
विदेशों में जैन साहित्य : अध्ययन और अनुसंधान  
विनयप्रभकृत जैन व्याकरण ग्रंथ शब्ददीपिका  
विपाकसूत्र की कथायें  
विपाकसूत्र के आख्यान : एक विहंगावलोकन

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
”	३१	२	१९७९	३-८
डॉ० केशवप्रसाद गुप्त	४४	४-६	१९९३	३६-५८
डॉ० कमल जैन	४७	४-६	१९९६	११-३५
श्री गणेशप्रसाद जैन	३६	१२	१९८५	७-१३
श्री अगरचन्द नाहटा	१२	८	१९६१	१७-२०
पं० अमृतलाल शास्त्री	८	१	१९५६	४-७
”	२२	२	१९७०	२०-२८
स्व० अगरचन्द नाहटा	४६	७-९	१९९५	७४-७५
श्री उदयचंद प्रभाकर	२३	५	१९७२	३-१०
”	२३	६	१९७२	१०-१७
श्री अगरचन्द नाहटा	२७	२.	१९७५	२२-२३
श्री सनत्कुमार रंगाटिया	१९	८	१९६८	१२-२५
डॉ० भागरचन्द भास्कर	३३	६	१९८२	१६-२८
श्री अगरचंद नाहटा	३०	१०	१९७९	१७-२१
डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव	१०	२	१९५८	१७-२०
श्री जमनालाल जैन	२९	१	१९७७	९-१४

विलासकीर्तिरचित प्रक्रियासारकौमुदी

विश्वेश्वरकृत शृंगारमंजरीसट्टक का अनुवाद-क्रमशः

”

”

”

”

”

”

”

”

”

”

वीरनन्दी और उनका चन्द्रप्रभचरित

वीरवर्धमानचरित में शान्तरस विमर्श

वैराग्यमूलक एक ऐतिहासिक प्रेमकाव्य : तरंगवती

वैराग्यशतक

वैशाली और भगवान् महावीर का दिव्य संदेश

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री अगरचंद नाहटा

डॉ० के० ऋषभचन्द्र

”

”

”

”

”

”

”

”

”

”

पं० अमृतलाल शास्त्री

श्रीमती उर्मिला जैन

श्री गणेशप्रसाद जैन

श्री अगरचन्द नाहटा

श्री महावीरप्रसाद प्रेमी

पृष्ठ

ई० सन्

अंक

वर्ष

२४-२८

१९७८

११

२९

३४-३८

१९७२

११

२३

२०-२३

१९७२

१२

२३

२८-३२

१९७२

१

२४

३०-३४

१९७२

२

२४

३३-३५

१९७३

३

२४

३२-३७

१९७३

४

२४

३६-३८

१९७३

५

२४

२२-२६

१९७३

६

२४

२५-३०

१९७३

७

२४

२९-३४

१९७३

८

२४

१६-१९

१९७३

९

२४

१८-२५

१९६६

११

१७

२५-२८

१९८३

१

३५

१४-२४

१९८३

६

३४

३२-३३

१९६०

२

१२

१४-२३

१९५४

४

५



## लेख

शब्दरत्न-महोदधि नामक संस्कृत गुजराती जैन कोश  
शान्बूक आख्यान (जैन तथा जैनैतर) सामग्री का -

तुलनात्मक अध्ययन

शान्त रस : मान्यता और स्थान

शान्त रस : जैन काव्यों का प्रमुख रस

शास्त्र की मर्यादा

शास्त्र रचना का उद्देश्य

शास्त्र वाचना की आज फिर आवश्यकता है

शास्त्रों की प्रामाणिकता

शिवशर्मसूक्त कर्मप्रकृति

श्वेताम्बर साहित्य में रामकथा

श्वेताम्बर साहित्य में रामकथा का स्वरूप

श्रमण भगवान् महावीर

श्रमण-साहित्य में वर्णित विविध सम्प्रदाय

श्रावकप्रज्ञप्ति के रचयिता कौन ?

श्री आत्मारामजी और हिन्दी भाषा

श्री किशनदास जी कृत-‘उपदेशबानी’

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री अगरचन्द नाहटा

श्री विमलचन्द्र शुक्ल

श्री जयकुमार जैन

डॉ० मंगलप्रकाश मेहता

पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य

पं० सुखलाल जी

श्री कस्तूरमल बांठिया

डॉ० मोहनलाल मेहता

”

डॉ० सागरमल जैन

”

पं० बेचरदास दोशी

डॉ० भागचन्द्र जैन ‘भास्कर’

पं० बालचन्द्र शास्त्री

श्री पृथ्वीराज जैन

श्री अम्बाशंकर नागर

श्री जयभिक्षू के ग्रन्थों का हिन्दी अनुवाद  
श्रीमद्देवचन्द्ररचित कर्म साहित्य  
श्रीपालचरित की कथा

षट्दर्शनसमुच्चय के लघुटीकाकार सोमतिलकसूरि  
षट्प्राभृत के रचनाकार और उसका रचनाकाल  
संडेरगच्छीय ईश्वरसूरि की प्राप्त एवं अप्राप्त-रचनायें  
संदेशरासक में उल्लिखित (वनस्पतियों के नाम)  
पर्यावरण के तत्त्व

”

संवेगरंगशाला-एक स्पर्शिकरण

संयुक्तनिकाय में जैन सन्दर्भ

संवेगरंगशाला देवभद्रसूरि रचित और अनुपलब्ध है ?

संवेगरंगशाला नामक दो ग्रन्थ नहीं एक ही है

संस्कृत काव्य शास्त्र के विकास में प्राकृत की भूमिका

संस्कृत दूत काव्यों के निर्माण में जैन कवियों

का योगदान

संस्कृत व्याकरण शास्त्र में जैनाचार्यों का योगदान

संस्कृत साहित्य के इतिहास के जैन सम्बन्धित संशोधन

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री कस्तूरमल बाँठिया

श्री अगरचन्द नाहटा

डॉ० देवेन्द्र कुमार जैन

श्री अगरचंद नाहटा

डॉ० के० आर० चन्द्र

श्री अगरचन्द नाहटा

श्री श्रीरंजन सूरिदेव

”

प्रो० हीरालाल रसिकलाल कापड़िया

विजयकुमार जैन

श्री अगरचन्द नाहटा

”

श्री धनीराम अवस्थी

श्री रविशंकर मिश्र

श्रीराम यादव

श्री अगरचन्द नाहटा

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१९	१२	१९६८	२५-३४
१७	१-२	१९६५	३३-३७
२२	४	१९७१	३-७
२४	१	१९७२	२०-२३
४८	१०-१२	१९९७	४५-५२
२५	७	१९७४	२९-३२
२८	२	१९७६	२७-२९
४६	१०-१२	१९९५	२४-२७
२०	१२	१९६९	३२
३३	१२	१९८१	१६-२३
२०	११	१९६९	२३-२६
२१	१	१९६९	३४
३७	५	१९८६	२-९
३३	६	१९८२	१-१५
३३	८	१९८२	११-२०
१७	५	१९६६	२२-२६



# लेख

संस्कृत साहित्य में अभ्युदय नामान्त जैन काव्य  
सन्दर्भ एवं भाषायी दृष्टि से आचारांग के  
उपोद्धात में प्रयुक्त प्रथम वाक्य के पाठ की  
प्राचीनता पर कुछ विचार  
सप्तशेत्रासु  
सप्तसन्धानमहाकाव्य में ज्योतिष  
समयसार  
समणसुतं  
समयसार : आचार-मीमांसा  
समयसार सप्तदशी टीका : एक साहित्यिक-मूल्यांकन  
समराइच्चकहा का अविकलगुर्जरानुवाद  
समराइच्चकहा की संक्षिप्त कथावस्तु और उसका-  
सांस्कृतिक महत्व  
समवायांगसूत्र में विसंगति  
सर्वांगसुन्दरी-कथानक  
सात लाख श्लोक परिमित संस्कृत साहित्य के  
निर्माता जैनचार्य विजयलावण्यसूरि  
साधुवन्दना के रचयिता  
सावयपण्णति : एक तुलनात्मक अध्ययन -क्रमशः

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री जयकुमार जैन	२९	१	१९७७	३-८
डॉ० के० आर० चन्द्र	४५	७-९	१९९४	५२-५९
डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	१९	६	१९६८	२३-२८
श्री श्रेयांसकुमार जैन	२८	१२	१९७७	१७-२१
श्री मिश्रीलाल जैन	३५	५	१९८४	४२-५९
"	३५	५	१९८४	२७-४१
डॉ० दयानन्द भार्गव	२९	७	१९७८	३-११
डॉ० नेमिचन्द्र जैन	२९	१०	१९७८	३-८
श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	५	१९६८	६-१७
डॉ० क्षिनकू यादव	२५	१-२	१९७३	३५-४२
श्री नंदलाल मारु	१९	५	१९६८	३२-३४
डॉ० के०आर० चन्द्र	२४	५	१९७३	१६-२१
श्री अगरचन्द नाहटा	२३	८	१९७२	१९-२३
"	२२	२	१९७०	२९-३२
पं० बालचंद सिद्धान्तशास्त्री	२१	२	१९६९	५-११

लेख	श्रमण : अतीत के झरोखे में	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
"	साहित्य और साहित्यिक	२१	३	१९७०	५-१३
"	साहित्य भवन के निर्माण का शुभारंभ	२१	४	१९७०	२२-२८
"	सिरिपालचरित : एक मूल्यांकन	२१	५	१९७०	२४-२९
"	सिरिपालचरित : संदर्भ और शिल्प	२१	६	१९७०	२०-२७
"	सिद्धार्थिगणिकृत उपमितिभवप्रपंचाकथा	२१	१	१९६९	५-१३
"	सिद्धिद्विनिश्चय और अकलंक	१५	३	१९६४	१५-२८
"	सिंहदेव रचित एक विलक्षण महावीरस्तोत्र	११	१	१९५९	२४-२७
"	सोमदेवकृत यशस्तिलक	२२	८	१९७१	३-७
"	स्वयंभू और उनका पठमचरित	२०	१०	१९६९	५-१४
"	स्वयंभू का कृष्णकाव्य और सूरकाव्य के अध्ययन -	१८	७	१९६७	२६-३१
की समस्याएँ		५	४	१९५४	३१-३२
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में गणधरवाद		३०	५	१९७९	२०-२५
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में महावीर चरित		१६	९	१९६५	२-७
त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में रसोद् भावना		२५	१-२	१९७३	३-१३
		३०	८	१९७९	३३-३५
		२८	६	१९७७	११-१६
		२७	७	१९७६	१६-२२
		२८	३	१९७७	१५-२०



## लेख

हरिकलशरचित दिल्ली-मेवात देश चैत्यपरिपाटी  
हरिभद्र के धूर्तख्यान का मूल स्रोत: एक चिन्तन  
हर्षकीर्तिसूरि रचित धातुतरंगिणी  
हर्षकुलचरित कमलपंचशतिका  
हिन्दी काव्यों में महावीर  
हीराणंदसूरि का विद्याविलास और उस पर -  
आधारित रचनाएं  
हेमचन्द्र और भारतीय काव्यालोचना  
हेमविजयगणि और विजयप्रशस्तिमहाकाव्य  
Metrical Studies of Daśārṇavaskandha  
Niryukti in the light of its parallels

## ४. इतिहास, पुरातत्त्व एवं कला

अकबर और जैनधर्म  
'अगस्त' की ऐतिहासिकता  
अज्ञात प्राचीन जैनतीर्थ: कसरवाद  
अड्डालिजीयच्छ  
अतिशय क्षेत्र पपौरा

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री अगरचंद नाहटा	२७	८	१९७६	१८-२१
प्रो० सागरमल जैन	३९	४	१९८८	२६-२८
श्री अगरचंद नाहटा	३०	१२	१९७९	३५-३८
"	२०	५	१९६९	२०-२२
श्री प्रेमचन्द रावका	२६	९	१९७५	१४-२०
श्री अशोककुमार मिश्र	२६	१२	१९७५	२१-२६
डॉ० देवेन्द्रकुमार	१७	९	१९६६	२-७
श्री उदयचंद जैन	२२	९	१९७१	२३-२४
Dr. Ashok Kumar Singh	४७	७-९	१९९६	५९-७६
डॉ० ओमप्रकाश सिंह	३३	६	१९८२	५६-६०
श्री शरदचन्द्र मुखर्जी	५	१०	१९५४	३०-३२
श्री लक्ष्मीचंद जैन	२९	६	१९७८	२५-२७
डॉ० शिवप्रसाद	४८	१०-१२	१९९७	८१-८२
पं० अमृतलाल शास्त्री	१६	६	१९६५	१८-२२

अष्टालक्षी में उल्लेखित जयसुन्दरसूरि की -

शतार्थी की खोज आवश्यक

अहमदाबाद के भामाशाह

अहिंसा का क्रमिक विकास

आचार्य अमितागतः व्यक्तित्व और कृतित्व

आचार्य : एक मधुर शास्ता

आचार्य चण्डरुद्र

आचार्य शाकटायन (पाल्यकीर्ति) और पाणिनि

आचार्य सोमदेवसूरि

आचार्य हेमचन्द्र

आचार्य हेमचन्द्र और उनकी साहित्यिक मान्यताएं

आचार्य हेमचन्द्र : एक महान् वैयाकरण

आचार्य हेमचन्द्र : एक युगपुरुष

”

आचार्य हेमचन्द्र : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व

आनन्दधन जी खरतरगच्छ में दीक्षित थे

आर्यरक्षित

आर्यों से पहले की संस्कृति

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री अगरचंद नाहटा

श्री जयभिक्षु

पं० सुखलाल जी

डॉ० कुसुम जैन

उपाध्याय अमरमुनि

मुनिश्री लक्ष्मीचन्द्र जी

श्री रामकृष्ण पुरोहित

श्री गोकुलचन्द जैन

श्री गुलाबचन्द्र चौधरी

डॉ० देवेन्द्रकुमार

श्री अभयकुमार जैन

प्रो० सागरमल जैन

”

श्री अभयकुमार जैन

श्री भैरवलाल नाहटा

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी

वर्ष ई० सन् पृष्ठ

१८

१२

२७-२८

४

१०

२१-२४

११

४

९-१५

३९

९

१७-२३

८

१२

१२-१६

११

३

१८-१९

३२

५

५२-६१

१२

१

३१-३३

२

८

१६-२४

१२

३

२२-२६

२७

१०

८-१३

४०

१२

३-१५

४८

४-६

६०-७०

२६

१०

१३-१८

४०

४

२-१२

८

२

१९-२२

१

८

१३-१९



# लेख

आष्टा की परमारकालीन अप्रकाशित जैन प्रतिमाएँ

आषुतोष म्यूजियम में नागौर का एक सचित्र-

विज्ञप्तिपत्र

इतिहास की पुनरावृत्ति : एक भ्रामक धारणा

इतिहास की पुनरावृत्तिः अर्थार्थ दर्शन

इतिहास बोलता है

इन्द्रभूति गौतम

उच्चैर्नागर शाखा की उत्पत्ति स्थान एवं उमास्वाति -

के जन्मस्थल की पहचान

उज्जयिनी

उड़ीसा में जैन कला एवं प्रतिमा-विज्ञान की -

राजनैतिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

उड़ीसी नृत्य और जैन सम्राट खारवेल

उत्तर प्रदेश में मध्ययुगीन जैन शिल्पकला का-विकास

उत्तर भारतीय शिल्प में महावीर

उपदेशगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

उपासक प्रतिमायें

उपरियाली का विख्यात जैन तीर्थ

# लेखक

डॉ० मायारानी आर्य

श्री अगरचन्द भँवरलाल नाहटा

श्री गुलाबचन्द्र चौधरी

प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन

श्री सत्यदेव विद्यालंकार

श्री विजयमुनि शास्त्री

डॉ० सागरमल-जैन

श्री अमरचन्द्र

डॉ० मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी

श्री सुबोधकुमार जैन

डॉ० शिवकुमार नामदेव

श्री मारुतिनन्दन तिवारी

डॉ० शिवप्रसाद

डॉ० मोहनलाल मेहता

श्री भूरचन्द्र जैन

ई० सन्

१

४

१०

२

१२

६

७-१२

१०

१-२

५

७

१२

७-१२

१-२

८

पृष्ठ

२३-२४

१५-१९

३१-३२

३४-३६

११-१६

४३-४८

१७-२४

२७-३३

१४-२१

२१-२२

१६-२०

१८-२३

६१-१८२

८९-९२

२६-२८

उपरियाली का विख्यात जैन तीर्थ  
ऐतिहासिक अध्ययन के जैन स्रोत और उनकी  
प्रामाणिकता: एक अध्ययन  
ऐतिहासिक जैन तीर्थ नांदिया  
ओसवंश-स्थापना के समय संबन्धी महत्वपूर्ण -

उल्लेख

ओसवाल और पार्श्वपत्य सम्बन्धों पर टिप्पणी  
ऋषभपुत्र भरत और भारत  
कर्म की मर्यादा

कर्णाटक में जैन शिल्पकला का विकास  
कलचुरि-कला में जैन शासन देवियों की मूर्तियाँ  
कलचुरिकालीन जैन शिल्प-संपदा  
कल्पप्रदीप में उल्लिखित 'खेड़ा'  
गुजरात का नही राजस्थान का है  
कल्पप्रदीप में उल्लिखित भगवान्  
महावीर के कतिपय तीर्थक्षेत्र  
कारीतलाई की जैन द्वि-मूर्तिका प्रतिमाएं

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री भूरचन्द जैन

डॉ० असीमकुमार मिश्र

श्री भूरचन्द जैन

श्री अगरचंद नाहटा

श्री भैवरलाल नाहटा

श्री गणेशप्रसाद जैन

डॉ० मोहनलाल मेहता

श्री शिवकुमार नामदेव

“

“

श्री भैवरलाल नाहटा

डॉ० शिवप्रसाद

श्री शिवकुमार नामदेव

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३२	८	१९८१	२६-२८
४६	१०-१२	१९९५	४४-५१
२८	४	१९७६	२७-२९
३	१०	१९५२	२७-३३
४०	१०	१९८९	८-१३
२१	१२	१९७०	२४-३२
२३	२	१९७१	३-५
२७	१०	१९७६	१४-१८
२५	१०	१९७४	२४-२६
३०	१	१९७८	२३-३२
४०	११	१९८९	२५-२८
४०	६	१९८९	२०-२९
२६	११	१९७५	१५-१९



लेखक	श्रमण : अतीत के झरोखे में	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
कालकाचार्य	काशी के कतिपय ऐतिहासिक तथ्य	५	१०	१९५४	२३-२९
कुम्भारिया	कुम्भारिया का महावीर मन्दिर	३९	१२	१९८८	१६-१८
कुम्भारिया जैनतीर्थ	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	२६	१-२	१९७४	४७-५२
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	२८	१०	१९७७	२५-२८
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	२५	६	१९७४	२८-३१
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	७	२	१९५५	१७-१८
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	१२	२	१९६०	११-१३
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	४०	५	१९८९	१५-४३
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	१८	१-२	१९६६	७८-८०
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	३३	६	१९८२	२८-३८
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	४	४	१९५३	८-१०
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	२४	२	१९७२	२८-२९
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	४२	७-१२	१९९१	५१-६०
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	४५	४-६	१९९४	१७३-१७८
कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	कुम्भारिया तीर्थ का कलापूर्ण महावीर मंदिर	२६	१०	१९७४	१९-२३

क्या कृष्ण गच्छ की स्थापना सम्वत् १३९१ -

में हुई थी ?

कोटिशिला तीर्थ का भौगोलिक अभिज्ञान

खजुराहो की कला और जैनाचार्यों की समन्वयात्मक -

एवं सहिष्णु दृष्टि

गीता के राजस्थानी अनुवादक जैन कवि थिरपाल

ग्यारह गणधर सम्बंधी ज्ञातव्य बातें  
 ग्वालियर के तोमरकालीन दानवीर  
 ग्वालियर के तोमरवंशीय राजा  
 गुप्तकाल में जैन-धर्म  
 गुप्त सम्राटों का धर्म समभाव  
 गोमट आइडोल्स ऑफ कर्णाटक  
 चंदनबाला और मृगावती  
 चण्डकौशिक का उपसर्ग स्थान योगी पहाड़ी  
 चन्द्रावती की जैन प्रतिमाएँ ; एक परिचयात्मक सर्वेक्षण  
 चित्तौड़ का जैन कीर्तिस्तम्भ  
 २४ तीर्थंकरों के नामों में नाथ शब्द का प्रयोग कब से  
 जंगम आगम संशोधन मंदिर  
 जैन इतिहास की एक झलक  
 आचार्य हेमचन्द्र : एक युगपुरुष  
 जैनधर्म की प्राचीनता और विशेषता  
 जमाली का मतभेद  
 जालिहरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२४	५	१९७३	२२-२६
२३	१०	१९७२	१०-१३
२०	१	१९६८	६-१३
१०	६	१९५९	१६-२२
२३	६	१९७२	१८-२०
२४	३	१९७३	३६-३८
३	७	१९५२	३१-३२
२२	१२	१९७१	५-८
२९	११	१९७७	३६-३८
२९	१	१९७७	३४-३५
२२	१	१९७०	१८-२२
२	४	१९५१	२८-३२
७	४	१९५६	३-८
४०	१२	१९८९	३-१५
२४	५	१९७३	८-१५
९	६-७	१९५८	६६-६८
४३	४-६	१९९२	४१-४६



लेख	श्रमण : अतीत के झरोखे में	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जालौर में महावीर-मन्दिर की शिल्प सामाग्री - का मूर्ति-वैज्ञानिक अध्ययन	डॉ० मारुते नन्दन प्र० तिवारी	२७	२	१९७५	९-१७
जिनचन्द्रसूरिचित श्रावकसामाचारी की पूरी - प्रति की खोज	श्री अगरचंद नाहटा	१९	४	१९६८	३२-३५
जीरापल्लीगच्छ का इतिहास	डॉ० शिवप्रसाद	४७	७-९	१९९६	२३-३३
जैन इतिहास लेखकों का आवाहान	श्री कस्तूरमल बांठिया	१२	३	१९६१	३१-३३
जैनकला एवं स्थापत्य	डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	३	१९७९	३-९
जैन कलातीर्थ : खजुराहो	श्री शिवकुमार नामदेव	२५	१२	१९७४	२२-२७
जैन कला प्रदर्शनी	श्री अगरचंद नाहटा	८	५	१९५७	३६-३८
जैन तीर्थ रातामहावीरजी	श्री भूरचन्द जैन	२७	८	१९७६	२६-२८
जैन तीर्थ शंखेश्वरपार्श्वनाथ	''	२९	९	१९७८	२५-२९
जैन तीर्थकर और भिल्ल प्रजाति	डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन	२३	५	१९७२	२५-२७
जैन धर्म एवं गुरु मन्दिर	जसवन्तलाल मेहता	३६	७	१९८५	१९-२६
जैनधर्म का एक विलुप्त सम्प्रदाय यापनीय क्रमशः	प्रो० सागरमल जैन	३९	९	१९८८	१-१६
''	''	३९	११	१९८८	१-१८
जैनधर्म की प्राचीनता	श्री शांतिलाल मांडलिक	१९	१२	१९६८	१८-२४
जैनधर्म की प्राचीनता -क्रमशः	डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा	२०	६	१९६९	२२-२९

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
"	२०	७	१९६९	२७-३२
"	२०	८	१९६९	१९-२७
"	२०	९	१९६९	२३-२७
डॉ० मोहनलाल मेहता	३०	२	१९७८	३-१६
डॉ० सागरमल जैन	४२	१-३	१९९१	१-३९
श्रीमती सुधा जैन	२६	७	१९७५	१३-१४
डॉ० मोहनलाल मेहता	३	११	१९५२	१३-१७
डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री	१०	३	१९५९	९-११
"	१४	४	१९६३	९-१७
"	१४	५	१९६३	९-१७
"	१४	६-७	१९६३	१२-१८
प्रो० सागरमल जैन	४१	७-९	१९९०	१-१६
श्री अवधकिशोर नारायण	१	१०	१९५०	१९-२१
डॉ० विनयतोष भट्टाचार्य	४	१०	१९५३	१३-१९
श्री प्रेमकुमार अग्रवाल	२३	४	१९७२	१८-२१
कु० सुधा जैन	२४	१२	१९७३	१६-१९
श्री मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी	२७	९	१९७६	२९-३६

जैनधर्म की प्राचीनता तथा इतिहास  
 जैनधर्म के धार्मिक अनुष्ठान एवं कला तत्त्व  
 जैनधर्म में सरस्वती  
 जैन परम्परा  
 जैन परम्परा  
 जैन परम्परा का आदिकाल -क्रमशः

जैन परम्परा का ऐतिहासिक विश्लेषण  
 जैन मूर्तिकला  
 जैन मूर्तिकला  
 जैनमूर्तियों का क्रमिक विकास  
 जैन मंदिर व स्तूप  
 जैन यक्ष गोमुख का प्रतिमा निरूपण



## लेख

जैन लेखों का सांस्कृतिक अध्ययन  
जैन वास्तुकला : संक्षिप्त विवेचन  
जैन शिल्पकला और मथुरा  
जैनशिल्प का एक विशिष्ट प्रकार : सहस्रकूट  
जैन सरस्वती हंसवाहना या मथुरावाहना  
जैन साहित्य और शिल्प में वाग्देवी सरस्वती  
जैन साहित्य के इतिहास की पूर्व पीठिका  
जैन साहित्य के इतिहास-निर्माण सूत्र  
जैन साहित्य में कलिङ्ग  
जैन साहित्य में गोमटेश्वर बाहुबलि  
जैन साहित्य में स्तूपनिर्माण की प्रथा  
जैन संस्कृति के प्रतीक मौर्यकालीन अभिलेख  
जैनागम वर्णित तीर्थकरों की भिक्षुणी  
जैनाचार्य श्री कांशीराम जी  
जैनों में मूर्ति और उसकी पूजा पद्धतियों में -

विकास और विकास

जौनपुर की बड़ी मस्जिद क्या जैन मंदिर है?

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
श्री नारायण दुबे	४०	४	१९८९	१८-२६
डॉ० शिवकुमार नामदेव	२८	२	१९७६	१६-२१
कु० सुधा जैन	२३	१२	१९७२	१६-१९
श्री अगरचंद नाहटा	२५	१२	१९७४	१६-२१
श्री शिवकुमार नामदेव	२६	१२	१९७५	१८-२०
डॉ० मारुतिनन्दन प्रसाद तिवारी	२८	२	१९७६	३०-३४
श्री कस्तूरमल बांठिया	२०	४	१९६९	१८-२४
डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल	५	१	१९५३	११-१६
श्री अमरचन्द्र	७	९	१९५६	३-६
डॉ० सागरमल जैन	३२	३	१९८१	१-९
डॉ० हरिहर सिंह	२१	११	१९७०	१६-२२
डॉ० पुष्पमित्र जैन	२४	८	१९७३	१७-२५
डॉ० अशोककुमार सिंह	४०	९	१९८९	१७-३०
श्री सुमन मुनि	११	९	१९६०	३०-३३
श्री कस्तूरमल बांठिया	१९	७	१९६८	६-१७
श्री अगरचंद नाहटा	३०	६	१९७९	३३-३५

झारडा की जैन देवियों की अप्रकाशित प्रतिमाएं

तर्कप्रधान संस्कृत वाङ्मय के आदि प्रेरक :

सिद्धसेन दिवाकर

तारंगा का अजितनाथ-मंदिर

तीर्थक्षेत्र शत्रुंजय

तीर्थक्षेत्र-प्रतिमाओं की विशेषताएं

तीर्थक्षेत्र महावीर की जन्म भूमि : विदेह का-कुण्डपुर

तीर्थक्षेत्र महावीर की निर्वाण भूमि 'पावा'

तीर्थक्षेत्र श्री पार्श्वनाथ

तीर्थक्षेत्र पार्श्वनाथ: प्रामाणिकता और ऐतिहासिकता

दक्षिण भारत में जैनधर्म और संस्कृति

दक्षिण भारत में जैनधर्म, साहित्य और तीर्थक्षेत्र

दक्षिण भारतीय शिल्प में महावीर

दर्शण में जैनधर्म

दानवीरता का कीर्तिमान-वस्तुपाल

दिगम्बर आर्या जिनमती की मूर्ति

धार्मिक एवं पर्यटन स्थल गिरनार

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

डॉ० सुरेन्द्रकुमार आर्य

श्री मोहन रत्नेश

डॉ० हरिहर सिंह

”

श्री शिवकुमार नामदेव

श्री गणेशप्रसाद जैन

”

”

डॉ० विनोदकुमार तिवारी

श्री गणेशप्रसाद जैन

”

श्री मारुतिनंदन तिवारी

श्री मोहनलाल दलाल

श्री चम्मालाल सिंधई

श्री अगरचन्द नाहटा

श्री भूरचन्द जैन

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२७	११	१९७६	१३-१४
२९	१	१९७७	१५-२६
२९	६	१९७८	३-१३
२२	७	१९७१	१९-२५
२५	४	१९७४	२४-२६
३६	७	१९८५	२-११
३८	१	१९८६	५-११
३५	२	१९८३	२-५
३८	२	१९८६	२-७
२१	१	१९६९	१५-२५
२४	११	१९७३	१४-१८
२२	१	१९७०	१२-१७
२४	१२	१९७३	२०-२४
२३	२	१९७१	१७-२०
१०	१२	१९५९	३१-३२
३०	५	१९७९	२६-२९



लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
धर्मघोषगच्छ का संक्षिप्त इतिहास	४१	१-३	१९९०	४५-१०४
धर्मबन्धु हर्बर्ट वारन	५	११	१९५४	१६-२२
धुबेला संग्रहालय की अद्वितीय जैन प्रतिमाएं	२५	८	१९७४	२४-२७
नागेन्द्रगच्छ का इतिहास	४६	७-९	१९९५	२०-६५
नन्दीसेन	३४	४	१९८३	१२-१६
नाणकीय गच्छ	४०	७	१९८९	२-३४
नालन्दा या नागलन्दा	२५	१०	१९७४	११-१३
नेपाल का शाहवंश और उनके पूर्वज	२	४	१९५१	३४-३८
परम्परागत पावा ही भगवान् महावीर की निर्वाण भूमि	२३	६	१९७२	२१-३०
पल्लीवालगच्छीय शांतिसूरि का समय एवं प्रतिष्ठा	३	११	१९५२	३१-३३
पश्चिमी भारत के जैन तीर्थ	४१	७-९	१९९०	४५-७८
पहले महावीर निर्वाण या बुद्धनिर्वाण	१०	७-८	१९५९	१०-२१
पारसनाथ	६	५	१९५५	३-५
पालनपुर का प्राचीन प्रहलविया जैन मन्दिर	२९	१२	१९७८	२४-२७
पावा: कसौटी पर	२५	४	१९७४	१६-२३
पावा कहाँ ? गंगा के उत्तर या दक्षिण में	२१	११	१९७०	२३-२४
पावापुर	२३	५	१९७२	११-१९

## लेखक

डॉ० शिवप्रसाद  
 अनु० कृष्णचन्द्राचार्य  
 श्री शिवकुमार नामदेव  
 डॉ० शिवप्रसाद  
 मुनि महेन्द्रकुमार 'प्रथम'  
 डॉ० शिवप्रसाद  
 पं० बेचरदास दोशी  
 मुनि कनकविजय  
 श्री बलवन्तसिंह मेहता  
 श्री अगरचन्द नाहटा  
 डॉ० शिवप्रसाद  
 श्री कस्तूरमल बांठिया  
 श्रीरंजन सूरिदेव  
 श्री भूरचंद जैन  
 श्री कन्हैयालाल सरावगी  
 मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी 'प्रथम'  
 श्री जिनवरप्रसाद जैन

पार्श्वनाथ के दो पट्टधर

पार्श्वनाथ जन्मभूमि मंदिर, वाराणसी की पुरातत्वीय-

वैभव

पिप्लगच्छ का इतिहास

”

पुष्कर के सम्बन्ध में शोध

पुष्पदंत क्या पुष्पभाट थे ?

पूर्णमागच्छ का संक्षिप्त इतिहास

पूर्णमागच्छ-प्रधान शाखा अपरनाम ढंडेरिया -

शाखा का संक्षिप्त इतिहास

पूर्णमागच्छ-भीमपल्लीयाशाखा का इतिहास

पैथड़रास के कर्ता कौन

प्रबन्धकोश में उपलब्ध आर्थिक विवरण

प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल संघवी

प्रयाग-एक महान् जैन क्षेत्र

प्राचीन ऐतिहासिक नगरी : जूना (बाड़मेर)

प्राचीन जैन तीर्थ ओसियाँ

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री अमिताभ

प्रो० सागरमल जैन

डॉ० शिवप्रसाद

”

श्री अजित मुनि

प्रो० देवेन्द्र कुमार

डॉ० शिवप्रसाद

”

”

श्री सनत्कुमार रंगाटिया

श्री अशोककुमार सिंह

श्री धनपति टुंकलिया

श्री सुबोधकुमार जैन

श्री भूरचंद जैन

”

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१२	२	१९६०	२०-२१
४१	४-६	१९९०	७७-८८
४७	१०-१२	१९९६	६५-८२
४८	१-३	१९९७	८३-११७
१७	९	१९६६	१७
७	१०	१९५६	३-५
४३	७-९	१९९२	२९-५१
४३	१०-१२	१९९२	४९-६६
४४	४-६	१९९३	२२-३५
१९	३	१९६८	१६-२०
३८	९	१९८६	१७-२६
८	२	१९५६	३७-३९
२२	११	१९७१	१७-१९
२५	११	१९७४	१७-२१
२९	२	१९७७	३०-३२



# लेख

प्राचीन जैन तीर्थ : करेड़ा पार्श्वनाथ  
 प्राचीन जैन तीर्थ : करेड़ा पार्श्वनाथ  
 प्राचीन जैनतीर्थ श्री गंगाणी  
 प्राचीन भारत में जैन चित्रकला  
 प्राचीन भारत में संस्कृतियों का संघर्ष  
 प्राचीन भारतीय सैन्य विज्ञान एवं युद्ध नीति-  
 जैन स्रोतों के आधार पर  
 फलवर्द्धिका पार्श्वनाथ तीर्थ : एक ऐतिहासिक दृष्टि  
 बनारस से जैनो का सम्बन्ध  
 १२वीं शताब्दी की एक तीर्थमाला  
 ब्रह्माणगच्छ का इतिहास  
 बाहुबलि : चक्रवर्ती का विजेता  
 बीकानेरी चित्र-शैली का सर्वाधिक चित्रों वाला -

## कल्पसूत्र

बैंगलोर का आदिनाथ जैन मन्दिर  
 भगवान् श्री अजितनाथ  
 भगवान् अरिष्टनेमि की ऐतिहासिकता

## लेखक

”  
 श्री भूरचंद जैन

”  
 कु० सुधा जैन  
 आ० चन्द्रशेखर शास्त्री

श्री इन्द्रेशचन्द्र सिंह  
 श्री शिवप्रसाद  
 पं० दलसुख मालवणिया  
 श्री अगरचन्द नाहटा  
 डॉ० शिवप्रसाद  
 उपाध्याय श्री अमरमुनि

श्री अगरचन्द नाहटा  
 श्री भूरचन्द जैन  
 ”  
 श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

ई० सन्

अंक

वर्ष

पृष्ठ

२८	६	१९७७	२६-२९
३०	१०	१९७९	३०-३४
२८	८	१९७७	२१-२३
२५	५	१९७४	३१-३४
१	३	१९५०	३३-३४
३९	८	१९८८	९-१७
३२	१२	१९८१	२७-३१
२	७	१९५१	१५-१८
२७	१०	१९७६	१९-२३
४८	७-९	१९९७	१४-५०
३२	३	१९८१	२१-२६
२८	१०	१९७७	२०-२४
३४	९	१९८३	२२-२३
३३	४	१९८२	१७-२०
२२	७	१९७१	१३-१८

भगवान् नेमिनाथ का समय-एक विचारणीय-समस्या  
 भगवान् नेमिनाथ के समय सम्बन्धी संशोधन  
 भगवान् बाहुबलि के प्रति  
 भगवान् महावीर और हरिकेशी  
 भगवान् महावीर का जन्म और निर्वाणभूमि  
 भगवान् महावीर का जन्म स्थान  
 भगवान् महावीर का निर्वाण  
 भगवान् महावीरकालीन वैशाली में जैन धर्म  
 भगवान् महावीर की जन्मभूमि  
 भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि पर पुनर्विचार  
 भगवान् महावीर की निर्वाण तिथि : एक पुनर्विचार  
 भगवान् महावीर की निर्वाण-भूमि : कौन सी-पावा  
 भगवान् महावीर की निर्वाण-स्थली  
 भगवान् महावीर की प्रमुख आर्थिकाएं  
 भगवान् महावीर के गणधर  
 भगवान् महावीर के बाद  
 भगवान् महावीर के समसामयिक आचार्य

श्री अगरचन्द नाहटा  
 श्री अगरचन्द नाहटा  
 श्री दिलीप सुराणा  
 श्री समीरमुनि 'सुधाकर'  
 श्री गुलाबचन्द्र चौधरी  
 श्री नरेशचन्द्र मिश्र  
 श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री  
 श्री शांतिलाल मांडलिक  
 श्री भगवानदास केसरी  
 डॉ० सागरमल जैन  
 डॉ० अरुणप्रताप सिंह  
 श्री रतिलाल म० शाह  
 श्री अनन्तप्रसाद जैन  
 डॉ० अशोककुमार सिंह  
 पं० दलसुख मालवणिया  
 श्री समीर मुनि 'सुधाकर'  
 श्री भागचन्द जैन

वर्ष २३ २१ ३५ १४ २ १९ १४ १९ ४ ४५ ४६ २६ ३६ ४० ५ १५ १४

अंक ३ २ ३ ६-७ ६ ३ १ ४ २ ४-६ १०-१२ ८ ३ ६ ५ ५-६ ९

ई० सन् १९७२ १९६९ १९८४ १९६२ १९५१ १९६८ १९६२ १९६८ १९५२ १९९४ १९९५ १९७५ १९८५ १९८९ १९५४ १९६४ १९६३

पृष्ठ

१५-१९ १२-१३ ८-१० २९-३१ ९-१२ ३-१५ ९-१३ ६-८ २८-३५ २५४-२६८ १-४ १४-१८ १४-१६ ३०-३३ १-१० ७२-७५ ९-१६



## लेख

भगवान् महावीर के युग का जैन सम्राट महाराज चेटक  
 भांडवा जैन तीर्थ  
 भारत का प्राचीन जैन केन्द्र : कसरवाद  
 भारत का सर्वप्राचीन संवत्  
 भारत में प्राचीन जैन गुफाएँ  
 भारतवर्ष के मूल निवासी श्रमण  
 भारतीय पुरातत्त्व तथा कला में भगवान् महावीर  
 भारतीय विचार प्रवाह की दो धाराएँ  
 भारतीय विद्याविद् डॉ० जॉन ज्यार्ज बुहलर  
 भावडारगच्छ का संक्षिप्त इतिहास  
 मगध साम्राज्य का प्रथम सम्राट श्रेणिक  
 मध्यप्रदेश के गुना जिले का जैन पुरातत्त्व  
 मझाहडागच्छ का इतिहास : एक अध्ययन  
 मरुधरा का ऐतिहासिक जैनतीर्थ : नाकोड़ा  
 महाकवि पुष्पदंत : एक परिचय  
 मलधारी अभयदेव और हेमचन्द्राचार्य  
 महाकवि पुष्पदन्त और गोम्मटेश्वर बाहुबलि

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२५	३	१९७४	२०-२४
२८	९	१९७७	२९-३२
२४	१०	१९७३	२८-३१
३१	१	१९७९	३५
२७	१२	१९७६	१५-२२
२१	१०	१९७०	३२-३७
२६	१-२	१९७४	३८-४६
११	५	१९६०	१३-१९
१८	१-२	१९६६	१३-२०
४०	३	१९८९	१५-३३
१९	३	१९६८	२५-३४
३३	९	१९८२	१९-२३
४५	७-९	१९९४	३१-५१
२६	५	१९७५	१०-१५
२१	६	१९७०	१५-१९
४	१२	१९५३	१-१०
३२	४	१९८१	१३-१६

महाकवि माघ ओसवाल थे?

महाकवि हस्तिमल्ल

महात्मा हुसेन बसराई

महावीरकालीन वैशाली

महावीर की निर्वाण भूमि पावा की स्थिति

महावीर की निर्वाण-भूमि पावा की वर्तमान स्थिति

महावीर की विहार भूमि-मगध और उसकी संस्कृति

‘महावीरचर्या’ ग्रंथ सम्बन्धी महर्षिदत्त राहुल जी के-दो पत्र

महावीर निर्वाण भूमि पावा- एक विमर्श

महावीर निर्वाण भूमि पावा : एक समीक्षा

महावीर निर्वाण सम्बन्ध में शताब्दियों की भूल

महावीर के समकालीन आचार्य

महावैयाकरण आचार्य हेमचन्द्र

मांडव : एक प्राचीन जैन तीर्थ -क्रमशः

”

मांडव : एक प्राचीन तीर्थ

मालपुरा की विख्यात जैन दादावाड़ी

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री मांगीलाल भूतोड़िया

श्री भागवन्द जैन

डॉ० इन्द्र

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

पं० कपिलदेव गिरि

श्री कन्हैयालाल सरावगी

श्री गणेशप्रसाद जैन

श्री अगरचंद नाहटा

श्री भगवतीप्रसाद खेतान

डॉ० जगदीशचन्द्र जैन

श्री धन्यकुमार राजेश

श्री गोकुलचन्द जैन

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

श्री शांतिलाल मांडलिक

”

श्री तेजसिंह गौड़

श्री भूरचन्द जैन

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
४०	५	१९८९	१०-१४
११	७-८	१९६०	४७-४९
५	५	१९५४	२१-२५
३३	१	१९८१	२०-२५
२२	१	१९७०	२७-३३
२३	१	१९७१	३०-३१
३३	११	१९८२	२३-२७
१७	१२	१९६६	९-१०
४२	४-६	१९९१	९३-९८
४५	१०-१२	१९९४	२३-२५
२१	२	१९६९	१४-२१
१२	६-७	१९६१	६५-६९
२२	१०	१९७१	८-१३
२१	९	१९७०	५-१४
२१	७	१९७०	२४-३०
२२	८	१९७१	८-१२
२९	५	१९७८	२२-२३



## लेख

मांडली का गुरुमन्दिर  
मिथिलापति नमिराज  
मेड़ता-फलौदी पार्श्वनाथ तीर्थ  
यह नई परम्परा करवट ले रही है  
राजस्थान में महावीर के दो उपसर्ग स्थल  
राजस्थान में महावीर मंदिर  
राजस्थान में मध्ययुगीन जैन प्रतिमाएँ  
राजा डूंगर सिंह तोमर  
राणकपुर के जैन मन्दिर  
राष्ट्रीय एकता और साहित्य  
लंका में जैनधर्म  
लोद्रवा का कलात्मक कल्पवृक्ष  
लोद्रवा-जैसलमेर तीर्थ पर श्री घण्टाकर्ण महावीर मन्दिर  
वज्रस्वामी  
वडगच्छ के युगप्रधान दादा मुनिशेखरसूरि  
वर्धमान जैन आगम-मन्दिर  
वहावी विद्रोह

लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
”	३०	२	१९७८	३२-३६
श्री सुशील	६	९	१९५५	३६-३७
श्री भूरचंद जैन	२६	९	१९७५	२९-३३
आचार्य सर्वे	९	११-१२	१९५८	३०-३२
श्री अगरचन्द नाहटा	२६	६	१९७५	१७-२०
”	२७	६	१९७६	२६-२८
डॉ० शिवकुमार नामदेव	२८	९	१९७७	२०-२४
डॉ० राजाराम जैन	२०	१०	१९६९	३०-३६
श्री भूरचन्द जैन	२७	७	१९७६	१३-१५
डॉ० नगेन्द्र	३६	५	१९८५	२०-२५
श्री डी० जी० महाजन	१९	६	१९६८	५-११
श्री भूरचन्द जैन	३३	३	१९८२	१०-१३
”	३२	९	१९८१	२४-२६
डॉ० इन्द्रचंद्र शास्त्री	८	१	१९५६	८-११
श्री अगरचंद नाहटा	२४	११	१९७३	३६-३९
श्री भूरचन्द जैन	२८	१	१९७६	२१-२३
श्री महेन्द्रराजा	८	७-८	१९५७	३१-३४

विख्यात जैन तीर्थः प्रभास पाटन  
विगत हजार वर्ष के जैन इतिहास का सिंहावलोकन-क्रमशः

”

”

विद्वद्वर विनयसागर आद्यपक्षीय नहीं, पिप्पलक-

शाखा के थे -

विश्व-व्यवस्था और सिद्धान्तत्रयी

विदिशा से प्राप्त जैन प्रतिमाएँ और रामगुप्त

की ऐतिहासिकता

वीरावतार

वैदिक परम्परा का प्रभाव

वैदिक वाङ्मय और पुरातत्त्व में तीर्थंकर ऋषभदेव

वैशाली और दीर्घप्रज्ञ महावीर

वैशाली का सन्त राजकुमार

शाजापुर का पुरातात्विक महत्त्व

शिल्प कला एवं प्राकृतिक वैभव का प्रतीक -

जैसलमेर का अमरसागर

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री भूरचन्द जैन

श्री कस्तूरमलबांठिया

”

”

श्री अगरचन्द नाहटा

श्री अजितमुनि 'निर्मल'

श्री शिवकुमार नामदेव

श्री समन्तभद्र

पं० बेचरदास दोशी

डॉ० राजदेव दुबे

प्रो० वासुदेवशरण अग्रवाल

श्री कन्हैयालाल सरावगी

प्रो० कृष्णदत्त बाजपेयी

श्री भूरचन्द जैन

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२७	३	१९७६	२३-२६
१६	१०	१९६५	३-११
१६	११	१९६५	३-१४
१६	१२	१९६५	३-१९
७	३	१९५६	१७-१८
१७	७	१९६६	२५-३१
२५	६	१९७४	१८-२३
३७	६	१९८६	१-६
१२	४	१९६१	९-१४
३८	८	१९८७	२-६
७	१०	१९५६	२६-३५
२७	७	१९७६	३-७
४१	१०-१२	१९९०	१११-११४
२६	११	१९७५	२४-२७



## लेख

शिल्प में गोम्पटेश्वर बाहुबलि

शुंग-कुषाणकालीन जैन शिल्पकला

क्षेताम्बर जैनों के पूजाविधियों का इतिहास

”

श्रमण जीवन का बदलता हुआ इतिहास

श्रमण परम्परा : एक विवेचन

श्रमण संस्कृति की प्राचीनता

श्रमण भगवान् महावीर का दीक्षा दर्शन

श्रवणबेलगोला के शिलालेख, दक्षिण भारत -

में जैनधर्म और गोम्पटेश्वर

श्रावस्ती का जैन राजा सुहलदेव

श्रीमद्भागवत में ऋषभदेव

श्रीमालपुराण में भगवान् महावीर और गणधर -

गौतम का विकृत वर्णन

संप्रतिकालीन आहाड़ के मंदिर का जीर्णोद्धार स्तवन

संसार का इतिहास-तीन शब्दों में

सम्राट और साम्राज्य

## लेखक

डॉ० मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी

श्री शिवकुमार नामदेव

श्री कस्तूरमल बाँठिया

”

मुनिश्री आईदान जी

श्री रमेशमुनि शास्त्री

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

पं० श्री मल्लजी

श्री गणेशप्रसाद जैन

”

श्री रमाकान्त झा

श्री अगरचन्द नाहटा

श्री भँवरलाल नाहटा

श्री महेन्द्र राजा

डॉ० आदित्य प्रचण्डिया ‘दीति’

## वर्ष

३२

२७

१७

१७

७

३०

२१

१४

१९

२८

१२

२६

२९

३

३२

## अंक

३

८

१०

११

८

१

१२

६-७

९

५

६-७

९

४

९

८

## ई० सन्

१९८१

१९७६

१९६६

१९६६

१९५६

१९७८

१९७०

१९६३

१९६८

१९७७

१९६१

१९७५

१९७८

१९५२

१९८१

## पृष्ठ

१०-२०

२२-२५

४-१५

२-१४

३०-३५

३-१०

३-१२

४४-४८

१३-२१

१४-१८

७३-७५

२६-२८

२३-३०

२२-२४

१७-२३

सारनाथ-काशी की तपोभूमि

सारनाथ के भनावशेष

सारस्वती का मंदिर

सार्धपूर्णियागच्छ का इतिहास

सिद्धक्षेत्र बावनगजा जी

सिद्धसेन दिवाकर

”

सिरोही के प्राचीन जैन मन्दिर

सोमनाथ

सौराष्ट्र का प्राचीन जैनतीर्थ तालध्वजगिरि

सोलंकी-काल के जैन मन्दिरों में जैनैतर चित्रण

स्थूलभद्र

स्था० जैन साध्वीसंघ का पारम्परिक इतिहास

स्वयंभू की गणधर परम्परा

स्वामी समन्तभद्र जी

हरिभद्रसूरि का समय-निर्णय

”

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

प्रो० चन्द्रिकासिंह ‘उपासक’

”

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

डॉ० शिव प्रसाद

श्री नेमिचन्द्र जैन

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री ‘इन्दु’

”

श्री भूरचन्द्र जैन

श्री किशोरीलाल मशरूवाला

श्री भूरचन्द्र जैन

डॉ० हरिहर सिंह

डॉ० इन्द्रचन्द्र जैन

श्री अजित मुनि

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

प्रो० पद्मनाभ जैनी

स्व० मुनि श्री जिनविजय जी

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१	४	१९५०	२५-२८
१	९	१९५०	२६-३१
११	१	१९५१	५-९
४४	१-३	१९९३	४२-५९
३७	३	१९८६	२-४
४	१०	१९५३	२५-३१
४	११	१९५३	२९-३५
२६	७	१९७५	९-१२
२	९	१९५१	१८-२३
२७	१०	१९७६	२४-२८
२८	६	१९७७	३०-३२
८	७-८	१९५६	९-११
२४	१२	१९७३	३१-३२
२४	७	१९७३	३१
३	३	१९५२	१७-२३
४०	१	१९८८	१-३२
४०	२	१९८८	१-३०





## लेख

आगमों में राजा एवं राजनीति पर स्त्रियों का -

प्रभाव

आचार्यश्री आत्माराम जी की आगम सेवा

आचार्य कालक और 'हंसमयूर'

आचार्य विद्यानन्द

आचार्य सम्राट पूज्य श्री आत्माराम जी महाराज-

एक अंशुमाली

आचार्य सोमदेव : व्यक्तित्व तथा कर्तृत्व

आचार्य : स्वरूप और दर्शन

आचार्य हरिभद्रसूरि : प्राकृत के एक सशक्त रचनाकार

आचार्य हेमचन्द्र और जैन संस्कृति

आचार्य हेमचन्द्र : एक महान् काव्यकार

आचारांग में समाज और संस्कृति

आज का युग महावीर का युग है

आज का युवक धर्म से विमुख क्यों ?

आज के सन्दर्भ में जैन पंचव्रतों की उपयोगिता

## लेखक

वर्ष

अंक

ई० सन्

पृष्ठ

डॉ० प्रमोदमोहन पाण्डेय

श्री अगरचंद नाहटा

पृथ्वीराज जैन

श्री गुलाबचन्द्र चौधरी

श्री हीरालाल जैन

कु० मीनाक्षी शर्मा

श्री रमेशमुनि शास्त्री

श्री प्रेमसुमन जैन

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

श्री अभयकुमार जैन

स्व० डॉ० परमेश्वरदास जैन

डॉ० ओमप्रकाश

श्री माणकचंद पींचा "भारती"

डॉ० विनोदकुमार तिवारी

१९७३

१९६२

१९५०

१९५०

१९९४

१९८६

१९७७

१९६७

१९६८

१९७७

१९८७

१९५७

१९८२

१९८७

१९८७

३-८

४०

३९-४०

२४-२७

२६-३२

३-८

११-१६

१९-२६

३-६

३-१३

२०-३२

३०-३४

२६-२८

८-१२

२-६



लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
आडम्बर प्रिय नहीं धर्म प्रिय बनो	३६	३	१९८५	२-४
आत्म सुख सभी सुखों का राजा	३३	११	१९८२	३-५
आत्मन्ति बनाम परहित	२	३	१९५१	९-११
आदिपुण्य में राजनीति	२७	८	१९७६	३-१३
आदीश जिन	२८	४	१९७७	३-८
अधूरी जोड़ी	३१	८	१९८०	१४-१८
आनन्द	३४	७	१९८३	१२-१७
आभूषण भार स्वरूप है	३६	८	१९८५	२-४
आरोग्य	४	४	१९५३	२३-२५
आर्योत्तम श्री विचक्षण श्रीजी म० सा०	३१	७	१९८०	१६-२३
आलोचक	४	४	१९५३	६-७
आत्म निरीक्षण	६	९	१९५५	२०-२३
ईसाइयों का महापर्व-क्रिसमस	६	३	१९५५	१२-१६
उत्तरभारत की सामाजिक-आर्थिक संरचना : जैन	३८	१२	१९८७	१२-२४
आगम साहित्य के सन्दर्भ में	११	११	१९६०	३३-३५
उपजीवी समाज	३६	८	१९८५	२२-२६
एकता ? एकता ? एकता ?				

श्री सौभाग्यमुनि जी 'कुमुद'

आचार्य आनन्दऋषि जी

पं० दलसुख मालवणिया

डॉ० रमेशचन्द्र जैन

डॉ० प्रकाशचन्द्र जैन

उपाध्याय श्री अमरमुनि

मुनि महेन्द्रकुमार

श्री सौभाग्यमुनि जी

पं० सुन्दरलाल जैन वैद्यरत्न

श्री गुलाबचंद जैन

श्री विजय मुनि

सुश्री शरवतीदेवी जैन

सुश्री निर्मला श्रीतिथिरेम

उमेशचन्द्र सिंह

श्री भ्रमरजी सोनी

श्री राजेन्द्रकुमार श्रीमाल

## लेख

एकता की ओर एक कदम  
 एक नया पुरोहितवाद  
 एक महान् विरासत की सहमति में उठा हाथ  
 एलाचार्य मुनिश्री विद्यानन्द जी का सामाजिक दर्शन  
 उपाध्याय श्री अमरमुनि जी : एक ज्योतिर्मय-व्यक्तित्व  
 ओसवाल और पार्श्वपत्य सम्बन्ध  
 कन्नड़ संस्कृति को जैनों की देन  
 कर्मों का फल  
 कला का कौल  
 कल्पना का स्वर्ग या स्वर्ग की कल्पना  
 कवि पुष्पदन्त की रामकथा  
 कविरत्न श्री अमरमुनि जी  
 कविवर देवीदास : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व  
 कवि-स्वरूप : जैन आलंकारिकों की दृष्टि में  
 कर्मशास्त्रविद् रामदेवगणि और उनकी रचनाएँ  
 क्या अणुव्रत आन्दोलन असाप्रदायिक है ?  
 क्या जातिस्मरण भी नहीं रहा

## श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१०	११	१९५९	२२-२४
७	६-७	१९५६	२७-३१
३६	८	१९८५	११-१४
३१	२	१९७९	२३-२७
३४	१	१९८२	२१-२५
४०	८	१९८९	२४-२५
४	७-८	१९५३	३९-४६
३२	२	१९८१	२०-२१
५	४	१९५४	१-३
३२	४	१९८१	१७-२१
२१	९	१९७०	२४-२७
८	५	१९५७	८-१०
२८	१०	१९७७	१२-१९
२७	७	१९७६	८-१२
२९	९	१९७८	११-१९
१०	९	१९५९	२३-२४
११	३	१९६०	२९-३४



## लेख

क्या जैनधर्म जीवित रह सकता है ?  
 क्या थे ? क्या हैं ? क्या होना है ?  
 क्या भगवान् महावीर के विचारों से  
 विश्वाशांति-संभव है ?  
 क्या महावीर सामाजिक पुरुष थे ?  
 क्या मैं जैन हूँ ?  
 क्या यही शिक्षा है ?  
 क्या राम कथा का वर्तमान रूप कल्पित है

”  
 क्या स्त्रियाँ तीर्थंकर के सामने बैठती नहीं ?  
 क्या हम अपराधी नहीं  
 कानों सुनी सो झूठ सब  
 क्रांतिकारी महावीर

”  
 क्रांतिदर्शी महावीर  
 क्रोध और क्षमा  
 क्षमा-वाणी

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री गोपीचन्द धाड़ीवाल  
 श्री कस्तूरमल बांठिया

डॉ० (कु०) मंजुला मेहता  
 डॉ० मोहनलाल मेहता  
 प्रो० दलसुख मालवणिया  
 श्री राजाराम जैन  
 श्री धन्यकुमार राजेश

”  
 श्री नंदलाल मारु  
 श्री जिनेन्द्र कुमार  
 डॉ० रतनकुमार जैन  
 पं० बेचरदास दोशी  
 श्री रत्नचंद जैन शास्त्री  
 डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन  
 श्री समीर मुनि  
 मुनिश्री चन्द्रभसागर

४४५

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१६	४	१९६५	२२-२५
११	९	१९६०	१७-२१
३१	१०	१९८०	१७-२२
११	६	१९६०	१५-१६
३	१०	१९५२	९-१२
४	१	१९५२	३०-३२
२१	७	१९७०	१०-१९
२१	८	१९७०	१८-२७
२४	५	१९७३	२७-३०
३५	१	१९८३	७-८
३३	२	१९८१	१२-१५
१२	६-७	१९६१	४१-४४
१५	११	१९६४	१३-१६
१६	६	१९६५	९-११
१५	१०	१९६४	१८-२१
३४	११	१९८३	१-११

गर्भापहरण-एक समस्या

गर्भापहरण सम्बन्धी कुछ बातें

गर्भापहरण-सम्बन्धी स्पष्टीकरण

गौंधी जी के मित्र और मार्गदर्शक : श्रीमदराजचन्द्र

ग्रामदान से ग्राम-स्वराज्य

ग्रीष्म ऋतु का आहार-विहार

गुरु नानक

गुणों के आगार

गृहस्थ के अष्टमूल गुण-तुलनात्मक अध्ययन

चक्षुष्मान पं० सुखलाल जी

चक्रवर्तियों के चक्रवर्ती श्रमण महावीर

चमत्कार को नमस्कार

चारित्र की दृढ़ता

चिन्तन : सम्यक् जीवन दृष्टि

चौबीसवें जैन तीर्थंकर भगवान् महावीर का जन्म स्थान

जनजागरण और जैन महिलायें

जनतंत्र के महान् उपासक भगवान् महावीर

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री रतिलाल म० शाह

श्री अगरचंद नाहटा

श्री रतिलाल म० शाह

प्रो० सुरेन्द्र वर्मा

श्री नेमिशरण मिश्र

वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन

डॉ० इन्द्र

श्री यशपाल जैन

श्री अशोक पराशर

उपाध्याय श्री महेन्द्रकुमार जी

श्री वेदप्रकाश सी० त्रिपाठी

डॉ० रतनकुमार जैन

श्री केवलमुनि जी

डॉ० हुकुमचंद संगवे

डॉ० सीताराम राय

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

डॉ० इन्द्रचंद्र शास्त्री

अंक

ई० सन्

पृष्ठ

१	१९७२	२१-२५
१०	१९७२	२७-२८
१२	१९७२	२४-२७
१०-१२	१९९५	१-४
५	१९५९	२०-२४
८	१९५४	३४-३६
७	१९५४	१२-२५
५	१९८१	४१-४३
१	१९७९	२०-२४
५	१९८१	१४-१५
६	१९८१	३१
७	१९८१	११-१४
८-९	१९८६	२६-३३
११	१९८२	२८-३१
१०	१९८९	१-७
४	१९६१	२७-३१
६	१९५७	३-७



## लेख

जर्मन जैन श्राविका डॉ० शालोटे क्राउझे  
जिनवल्लभसूरि की प्राकृत साहित्य सेवा  
जीवन और विवेक  
जीवन का सत्य  
जीवन की कला  
जीवन के दो रूप-धन और धर्म  
जीवनदर्शन  
जीवन रहस्य  
जीवन दृष्टि  
जीवन दृष्टि  
जीवन में अनेकान्त  
जीवन संग्राम  
जीवन विकास की प्रेरणा: सहयोग  
जैन अनुसंधान का दृष्टिकोण  
जैन आगम साहित्य में जनपद  
जैन आगम साहित्य में वर्णित दास-प्रथा  
जैन आगमों में जननी एवं दीक्षा

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री हजारीमल बांठिया  
श्री अगस्चंद नाहटा  
श्री डोंगरे महाराज  
डॉ० रतनकुमार जैन  
उपाध्याय अमरमुनि  
पं० मुनिश्री आईदान जी  
उपाध्याय अमरमुनि  
श्री भगवानलाल मांकड  
पं० बेचरदास दोशी  
उपाध्याय अमरमुनि  
श्री मनोहरमुनि जी  
श्री भागचन्द जैन  
श्री प्रकाश मुनि जी  
डॉ० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य  
श्री रमेशमुनि शास्त्री  
डॉ० इन्देशचन्द्र सिंह  
डॉ० कोमलचन्द जैन

वर्ष ४८ १४ ३१ ३२ ७ ११ ११ ८ ३१ ५ ११ ३३ १० ९ १२ ४ २९ ४१ २७

अंक

१०-१२ ४ ७ ११ ११ २ ६ ६ १२ ८ १२ ३ ५ ७-८ ९ १०-१२ ३

ई० सन्

१९९७ १९६३ १९८० १९८१ १९५६ १९५६ १९८० १९५४ १९६० १९८२ १९५९ १९५८ १९६१ १९५३ १९७८ १९९० ८५-९२ १९७६

पृष्ठ

८३-९२ ३२-३५ १ २१-२५ ३-६ १६-१८ ७-९ ३१-३४ १८-२० ८-१० २६-२८ २६-२७ ३६-३८ १५-१६ २०-२२ ८५-९२ १९-२२

जैन आगमों में मूल्यात्मक शिक्षा और वर्तमान सन्दर्भ  
 जैन आगमों में वर्णित जातिगत समता  
 जैन और बौद्ध दर्शन : एक तुलनात्मक अध्ययन  
 जैन उपाश्रय व्यवस्था और कर्मचारी तंत्र  
 जैन एकता  
 जैन एकता का प्रश्न  
 जैन एकता का स्वरूप व उसके उपाय  
 जैन एकता संभव कैसे ?  
 जैन एकता : सूत्र व सुझाव  
 जैन एवं बौद्ध धर्म में भिक्षुणी संघ की स्थापना  
 जैन ज्ञान भण्डारों पर एक दृष्टिपात  
 जैन और बौद्ध आगमों में विवाह पद्धति  
 जैन तीर्थंकरों का जन्म क्षत्रियकुल में ही क्यों ?

”  
 जैनत्व का गौरव और-हम  
 जैनत्व या जैन चेतना  
 जैन दर्शन में नारी मुक्ति

## लेखक

डॉ० सागरमल जैन  
 डॉ० इन्देशचन्द्र सिंह  
 श्री सुभाषमुनि 'सुमन'  
 श्री कृष्णलाल शर्मा  
 श्री भैरमल सिंघी  
 डॉ० सागरमल जैन  
 स्व० श्री अगरचन्द नाहटा  
 मुनि रूपचन्द  
 श्री जसकरण डागा  
 डॉ० अरुणप्रताप सिंह  
 मुनि पुण्यविजय जी  
 श्री कोमलचन्द जैन  
 श्री गणेशप्रसाद जैन  
 ”  
 श्री हर्षचन्द  
 प्रो० विमलदास जैन  
 कु० चन्द्रलेखा पंत

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
४५	४-६	१९९४	१६२-१७२
४२	४-६	१९९१	६३-७२
३८	१०	१९८७	६-१७
१७	८	१९६६	२७-३३
१०	११	१९५९	३५-३७
३४	३	१९८३	१-२७
३४	१२	१९८३	१-२१
३४	३	१९८३	२८-३२
३४	१२	१९८३	२२-४१
३५	९	१९८४	१-१६
५	२	१९५३	१-७
१४	४	१९६३	१८-२२
२९	८	१९७८	२१-२५
३१	६	१९८०	१५-१८
३४	७	१९८३	२-५
२	५	१९५१	२१-२६
२६	३	१९७५	१४-१८



## लेख

जैन दर्शन में समता  
जैन दिवाकर मुनिश्री चौथमल जी म०  
जैन दृष्टि में नारी की अवधारणा  
जैन धर्म और आज की दुनियाँ  
जैनधर्म और उसका सामाजिक दृष्टिकोण  
जैनधर्म और दर्शन की प्रासंगिकता-वर्तमान परिप्रेक्ष्य में  
जैनधर्म और नारी  
जैनधर्म और युवावर्ग  
जैनधर्म और वर्ण व्यवस्था

## लेखक

श्री अभयकुमार जैन  
श्री विपिन जारोली  
डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव  
श्री ऋषभचन्द्र  
श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'  
डॉ० इन्द्र  
श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'  
श्री प्यारेलाल श्रीमाल 'सरस पंडित'  
पं० फूलचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

”  
जैनधर्म और सामाजिक समता  
जैनधर्म भौगोलिक सीमा में आबद्ध क्यों ?  
जैनधर्म में नारी की भूमिका  
जैनधर्म में सामाजिक प्रवृत्ति की प्रेरणा  
जैनधर्म में सामाजिक चिन्तन  
जैन पदों में रागों का प्रयोग  
जैन पर्व दीपावली : उत्पत्ति एवं महत्त्व

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२९	१	१९७७	२३-३३
३७	२	१९८५	६-९
४३	७-९	१९९२	२५-२८
१५	१०	१९६४	३५-३६
१५	१	१९६३	९-१८
४३	७-९	१९९२	१-८
१८	३	१९६७	३-९
३४	३	१९८३	३५-३९
२	६	१९५१	१५-२३
२	७	१९५१	२०-२६
४५	४-६	१९९४	१४४-१६१
२३	५	१९७२	३४-३८
४१	१०-१२	१९९०	१-४८
१८	८	१९६७	२०-२३
४८	४-६	१९९७	१-१९
२३	७	१९७२	११-१४
३७	२	१९८५	२-५

जैन परम्परा के विकास में स्त्रियों का योगदान  
 जैन परम्परा में महाभारत कथा  
 जैन पुराणों में राम कथा  
 जैन पुराणों में समता  
 जैन पौराणिक साहित्य में युद्ध  
 जैन भिक्षुणी-संघ और उसमें नारियों के प्रवेश के कारण  
 जैन भौगोलिक स्थानों की पहचान  
 जैन मन्दिर और हरिजन  
 जैन मुनि और माँसाहार परिहार  
 जैन मुनि क्या कुछ कर सकता है ?  
 जैन रक्षापर्व : वात्सल्य पूर्णिमा  
 जैन राजनीति में दूतों और गुप्तचरों का स्वरूप  
 जैन रासरासक-परिभाषा, विकास और काव्यरूप  
 जैन वाङ्मय का संगीत पक्ष  
 जैन विद्या के निष्काम सेवक : लाला हरजसराय जैन  
 जैन शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा  
 जैन शिक्षा : उद्देश्य एवं पद्धतियाँ

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
४४	१०-१२	१९९३	१-७
४०	१०	१९८९	१४-१९
२०	५	१९६८	२३-२५
२९	१२	१९७८	१२-१७
२१	४	१९७०	५-१७
३३	४	१९८२	१२-१६
३४	७	१९८३	६-११
२	१२	१९५१	२५-३०
१८	७	१९६७	१४-२५
३३	९	१९८२	१५-१८
२९	१०	१९७८	१९-२२
२७	४	१९७६	१६-२४
२१	८	१९७०	३-९
३१	१	१९७९	२५-२७
३७	८-९	१९८६	२१-२४
४	५	१९५३	१३-१६
१९	५	१९६८	१९-२३

डॉ० अरुणप्रताप सिंह

डॉ० कल्याणीदेवी जायसवाल

श्री गणेशप्रसाद जैन

श्री देवीप्रसाद मिश्र

श्री धन्यकुमार राजेश

श्री अरुणप्रताप सिंह

डॉ० प्रेमसुमन जैन

प्रो० महेन्द्रकुमार जैन 'न्यायाचार्य'

श्री कस्तूरमल बाँटिया

श्री मन्मूलाल जैन

श्री भूरचंद जैन

डॉ० 'मेशचन्द्र जैन

डॉ० प्रेमचंद जैन

श्री प्यारेलाल श्रीमाल 'सरस पंडित'

डॉ० सागरमल जैन

श्री धनदेव कुमार

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव



लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
जैन संस्कृति	पं० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य	५	१२	१९५४	३-१३
जैन संस्कृति और परिवार व्यवस्था	श्री प्रेमसुमन जैन	१७	१-२	१९६५	३८-५१
जैन संस्कृति और प्रचार : एक चिन्तन	श्री गजेन्द्र मुनि	१८	९	१९६७	३०-३६
जैन संस्कृति और महावीर	श्री विजयमुनि शास्त्री	१३	६	१९६२	३३-४२
जैन संस्कृति और राजनीति	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१९	५	१९६८	२४-३१
जैन संस्कृति और विवाह	श्री गोकुलचंद जैन	१३	४	१९६२	८-२१
जैन संस्कृति का विस्तार	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	१८	४	१९६७	३१-३७
जैन समाज और वैशाली	पं० पत्रालाल धर्मलंकार	३	७-८	१९५२	३६-३८
जैन समाज और सर्वोदय	सन्त विनोबा	१०	५	१९५९	३८-३९
जैन समाज का धर्म प्रचार	श्री समीर मुनि 'सुधाकर'	१७	१२	१९६६	१२-१४
जैन समाज के लिये नई दिशा	साहू शांतिप्रसाद जी	३	५	१९५२	३-७
जैन समाज द्वारा काव्य सेवा	श्री रूपचंद जैन	१७	६	१९६६	२०-२२
जैन समाज व्यवस्था	श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा	१७	७	१९६६	३२-३६
जैन साधु और हरिजन	श्री माईदयाल जैन	३	१२	१९५२	१४-१६
जैन साधुओं का संस्थारूपी परिग्रह	”	१२	८	१९६१	९-१०
जैन साहित्य और संस्कृति का जनजीवन पर प्रभाव	कु० सुधा जैन	२५	९	१९७४	१५-१८
जैन साहित्य में जनपद	डॉ० अञ्जेलाल	२७	१	१९७५	१५-२४

जैन साहित्य में शिशु  
 जैन सिद्धान्तों का समाजव्यापी प्रयोग  
 जैनागमों में महावीर के जीवनवृत्त की सामग्री  
 जैनाचार्य राजशेखरसूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व  
 जैसलमेर भण्डार का उद्धार  
 जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि  
 ज्योतिर्धर महावीर  
 ज्ञान तपस्वी मुनिश्री पुण्यविजय जी  
 ज्ञानद्वीप की शिखा  
 ढंढण ऋषि की तितिक्षा  
 गायकुमारचरित की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि  
 तमिलक्षेत्रीय जैन योगदान  
 तीर्थंकर महावीर  
 तीर्थंकर और उनकी शिक्षाएँ  
 तीर्थंकर महावीर जन्मना ब्राह्मण या क्षत्रिय  
 तीर्थंकर महावीर का निर्वाणदिवस 'दीपावली'  
 तीर्थंकर महावीर का निर्वाण पर्व 'दीपावली' -  
 एक समीक्षा

श्री उदयचंद जैन  
 मुनि नेमिचन्द्र  
 श्री अगरचंद नाहटा  
 डॉ० अशोककुमार सिंह  
 मुनि पुण्यविजय जी  
 डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीप्ति'  
 देवेन्द्रमुनि शास्त्री  
 श्री रतिलाल दीपचंद देसाई  
 श्री राजमल पर्वैया  
 उपाध्याय श्री अमरमुनि  
 डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव  
 श्री डी० जी० महाजन  
 डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन  
 श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री  
 श्रीसौभाग्यमल जैन  
 श्री गणेशप्रसाद जैन

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२२	६	१९७१	२२-२९
१८	४	१९६७	२६-३०
७	६-७	१९५५	३४-३८
४१	१०-१२	१९९०	९३-११०
४	७-८	१९५३	६३-७०
३३	४	१९८२	१०-११
१७	१-२	१९६५	२६-३२
१८	६	१९६७	३४-३८
३३	१	१९८१	१९
३३	९	१९८२	११-१४
२३	१	१९७१	१४-१८
२०	८	१९६९	५-१०
३०	१०	१९७९	१४-१६
१५	५-६	१९६४	७-१०
४२	१-३	१९९१	५१-५५
३२	१	१९८१	२०-२३
३४	१	१९८२	१५-२०



## लेख

तीर्थंकरों की निश्चित संख्या क्यों ?

तीर्थंकर महावीर की शिक्षाओं का सामाजिक महत्त्व

त्याग का मूल्य

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित में प्रतिपादित सांस्कृतिक -

जीवन

दक्षिण हिन्दुस्तान और जैनधर्म

दया-दान की मान्यता

दान की आत्मकथा

दान सम्बन्धी मान्यता पर विचार

दार्शनिक पुरुष

दार्शनिक क्षितिज का दीप्तिमान नक्षत्र

दिगम्बर रहना क्या महावीर का आचार था ?

द्विसन्धानमहाकाव्य में राज्य और राजा का स्वरूप

दीपमाला : एक अध्यात्मिक पर्व

दीपावली : एक साधना पर्व

दुःख का जनक लोभ

दुर्दान्त दस्यु दया का देवता बना

## लेखक

श्री रतिलाल म० शाह

डॉ० विनोदकुमार तिवारी

उपाध्याय अमरमुनि

डॉ० उमेशचन्द्र श्रीवास्तव

पं० दलसुख मालवणिया

श्री सतीशकुमार 'भैरव'

श्री भगन हृदय

श्री अगरचंद नाहटा

मुनिश्री रामकृष्ण

उपाध्याय श्री अमरमुनि

श्री रतिलाल म० शाह

डॉ० रमेशचन्द्र जैन

पं० श्री ज्ञानमुनि जी महाराज

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

आचार्य श्री आनन्दश्रिषि

श्री वीरेन्द्रकुमार जैन

ई० सन्

१९७७

१९८५

१९८०

अंक

७

१०

४

४-६

५

२

११-१२

३

५

५

५

८

१

१

२

६

वर्ष

२८

३६

३१

४३

१

८

९

६

३२

३२

२७

२५

७

८

३२

३३

पृष्ठ

२१-२६

१२-१४

९-११

६९-८४

१७-१९

३३-३६

३३-३६

३-१०

३४

११-१३

२६-३०

३-१२

२५-२८

३३-३५

५-१२

३९-४०

दुर्बल को सताना क्षत्रिय धर्म नहीं

दृढ़ प्रतिश केशव

देवचन्द्रकृत यंत्रप्रकृति का वस्त्र टिप्पणक

धर्ममय समाज रचना की आधारशिला-क्षमापना

धर्म और युवा पीढ़ी

धर्म एक आधार : स्वस्थ समाज रचना

धर्म का पुनरुद्धार और संस्कृति का नवनिर्माण

धर्म का मान

धर्म का सर्वोदय स्वरूप

धर्म के स्थान पर संस्कृति

धर्म को समाज सेवा से जोड़ा जाय

धर्म पुरुष और कर्म पुरुष

ध्यान योगी महावीर

नई समाज व्यवस्था

नमस्कारमंत्र का मौलिक परम अर्थ

नया विहान-नया समाज

नर्क का प्रश्न

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

”

मुनिश्री महेन्द्रकुमार 'प्रथम'

श्री अगरचन्द नाहटा

मुनिश्री नेमिचन्दजी

श्रीमती बीना निर्मल

साध्वी श्री मंजुला

पं० दलसुख मालवणिया

डॉ० आदित्य प्रचण्डिया

पं० चैनसुखदास जैन

काका कालेलकर

श्री जिनेन्द्र कुमार

पं० फूलचंदजी 'श्रमण'

मुनिश्री नथमल जी

कुमार प्रियदर्शी

पं० सूरजचंद्र 'सत्यप्रेमी'

श्री बद्रीप्रसाद स्वामी

श्री सौभाग्यमल जैन

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३६	४	१९८५	२-४
३६	८	१९८५	१५-२१
३१	१	१९७९	२८-२९
१३	११	१९६२	३२-३६
३३	१२	१९८२	७-८
१७	१२	१९६६	२८-३०
१	३	१९५०	९-१३
३५	९	१९८४	१७-१८
१४	८	१९६३	१-२
२	८	१९५१	३६
३६	४	१९८५	६-८
६	१०	१९५५	२१-२२
१२	६-७	१९६१	२८-३०
९	११-१२	१९५८	४२-५६
६	१२	१९५५	१८-२०
१०	१०	१९५९	३२-३५
३३	१	१९८१	२६-२९



लेख	श्रमण : अतीत के झरोखे में	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
नागदत्त	मुनि महेन्द्रकुमार	३६	१	१९८४	२-७
नाथ कौन ?	उपाध्याय श्री अमरमुनि	३१	१	१९८०	१२-१६
नारी और त्याग मार्ग	श्री पृथ्वीराज जैन	२	३	१९५१	१४-२०
नारी उत्क्रान्ति के मसीहा भगवान् महावीर	दर्शनचार्य मुनि योगेशकुमार	३५	६	१९८४	२४-२६
नारी का महत्त्व	श्री आईदान जी महाराज	५	३	१९५४	३०-३६
नारी का स्थान घर है या बाहर ?	सत्यवती जैन	५	६	१९५४	३५
नारी की प्रतिष्ठा	श्री किशोरीलाल मशरूवाला	२	१	१९५१	४-८
नारी के अतीत की झांकी-सतीप्रथा	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	२	१९५०	११-१८
नारी जागरण	सुश्री प्रेमकुमारी दिवाकर	३	२	१९५१	२६-३१
नारी जीवन का आदर्श	डॉ० सन्तोषकुमार 'चन्द्र'	३	१२	१९५२	३१-३४
निर्ग्रन्थ-निर्ग्रन्थी संघ	मुनिश्री पुण्यविजय जी	१७	१०	१९६६	३२-३७
नैतिक उत्थान और शिक्षण संस्थायें	प्रो० पृथ्वीराज जैन	३	११	१९५२	२७-३०
पंजाब में स्त्री शिक्षा	श्री रामस्वरूप जैन	१	१२	१९५०	३८-४०
पंडित कौन ?	महात्मा भगवानदीन	३२	१	१९८०	१-४
पंडितरत्न सुखलाल जी : एक सुखद संस्मरण	पं० के० भुजबलि शास्त्री	३२	५	१९८१	४७
पं० सुखलाल जी - एक संस्मरण	श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री	३२	५	१९८१	२८-३२
पं० सुखलाल जी के तीन व्याख्यान - मालाओं के पठनीय ग्रंथ	श्री अगरचन्द नाहटा	३२	५	१९८०	५७

पउमचरित की अवान्तर कथाओं में भौगोलिक सामग्री

पउमचरियं के कुछ भौगोलिक स्थल

पउमचरियं में अनार्य जातियाँ

पउमचरित में नारी

पउमचरियं में वर्णित राम की वनयात्रा

” पद्मचरित में वस्त्र और आभूषण

पद्मचरित में शकुनविद्या

पर्यावरण एवं अहिंसा

पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या और जैनधर्म

पर्युषण पर्व और आज की नारी

पर्युषण का सामाजिक महत्त्व

पर्युषण पर्व पर एक ऐतिहासिक दृष्टिपात

पर्युषण पर्व की आराधना

पर्युषण पर्व पर दो महत्त्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान

पर्युषण मीमांसा

पर्व और धर्म चर्या

पल्लवनरोश महेन्द्रवर्मन “प्रथम” कृत मत्तविलास-

ग्रहसन में वर्णित धर्म और समाज

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

डॉ० के० ऋषभचन्द्र

”

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

डॉ० के० ऋषभचन्द्र

”

डॉ० रमेशचन्द्र जैन

”

डॉ० डी०आर० भण्डारी

डॉ० सागरमल जैन

सुश्री शबतीदेवी जैन

श्री जयन्त मुनि

पं० मुनिश्री रामकृष्ण जी महाराज

पं० मुनिश्री फूलचन्द्र जी ‘श्रमण’

श्री अगरचंद नाहटा

मुनिश्री कन्हैयालाल जी ‘कमल’

श्री जयभगवान जैन

श्री दिनेशचन्द्र चौबीसा

अंक

१२

११

५

६

८

९

९

११

१-३

४-६

११

११

११

११

११

१२

१-३

वर्ष

१८

१६

१८

२५

१६

१६

२५

२४

४३

४५

७

७

७

६

७

६

४४

ई० सन्

१९६७

१९६५

१९६७

१९७४

१९६५

१९६५

१९७४

१९७३

१९९२

१९९४

१९५६

१९५६

१९५६

१९५५

१९५६

१९५५

१९५६

पृष्ठ

३-१६

१७-२१

२-५

२४-२७

३-८

१३-१८

३-१०

२९-३५

८१-९०

१३५-१४३

३४-३५

१०-१५

१७-२१

१४-१६

३७-३९

१७-२१

३-९

३५-४१



## लेख

पारिवारिक जीवन सुखी कैसे हो?  
पाण्डवपुराण में राजनैतिक स्थिति  
पाप का घट  
पार्श्वनाथचरित में प्रतिपादित समाज  
पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान के मार्गदर्शक  
पं० सुखलाल जी पितृहीन  
पुरुषार्थ के प्रतीक पं० सुखलाल जी  
पौराणिक साहित्य में राजनीति  
प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल जी : एक परिचय  
प्रज्ञापुरुष पं० जगन्नाथ जी उपाध्याय की दृष्टि में -  
बुद्ध व्यक्ति नहीं प्रक्रिया  
प्रतिक्रिया है दुःख  
प्रज्ञापुरुष  
प्रज्ञामूर्ति  
प्रभावशाली व्यक्तित्व (मनोवैज्ञानिक लेख)  
प्राकृत हिन्दी कोश के महान् प्रणेता : पं० हरगोविन्ददास  
प्रागैतिहासिक भारत में सामाजिक मूल्य एवं परम्पराएँ  
प्राचीन जैन आगमों में राजस्व व्यवस्था  
प्राचीन जैन ग्रंथों में कृषि

## लेखक

श्रीमती यमुनादेवी पाठक  
सुश्री रीता विश्वनोई  
मुनि महेन्द्रकुमार  
श्री जयकुमार जैन  
श्री गुलाबचन्द जैन  
डॉ० इन्द्र  
साहू श्रैयांसप्रसाद जैन  
श्री धन्यकुमार राजेश  
श्री गुलाबचन्द जैन  
डॉ० सागरमल जैन  
युवाचार्य महाप्रज्ञ  
साध्वीरत्न श्री विचक्षण श्री जी  
श्री रमेशमुनि शास्त्री  
श्री कोमल जैन  
श्री अगरचन्द नाहटा  
डॉ० जगदीशचन्द्र जैन  
डॉ० अनिलकुमार सिंह  
डॉ० अच्छेलाल यादव

वर्ष १ ४२ ३६ २८ २९ ५ ३२ २३ ३२ ४६ ३३ ३२ ३२ ८ २८ ४३ ४७ २४

अंक ७ १-३ ३ ११ ९ ३ ५ १ ५ ४-६ ९ ५ ५ ५ ५ १०-१२ १-३ ४

ई० सन् १९५० १९९१ १९८५ १९७७ १९७८ १९५४ १९८२ १९७१ १९८१ १९९५ १९८२ १९८१ १९८१ १९५७ १९७७ १९९२ १९९६ १९७३

पृष्ठ २९-३३ ७५-८६ ११-१३ ३-९ ३-५ २५-२९ ४८-४९ ३-१३ ५५ १६६-१६९ २-६ ३५ ३३ १२-१४ १९-२२ १३-१९ ११-१९ २४-२७

पर्व और धर्म चर्या

पल्लवनरेश महेन्द्रवर्मन "प्रथम" कृत मत्तविलास-

प्रहसन में वर्णित धर्म और समाज

पारिवारिक जीवन सुखी कैसे हो?

पाण्डवपुराण में राजनैतिक स्थिति

पाप का घट

पार्श्वनाथचरित में प्रतिपादित समाज

पार्श्वनाथ विद्याश्रम शोध संस्थान के मार्गदर्शक

पं० सुखलाल जी

पितृहीन

पुरुषार्थ के प्रतीक पं० सुखलाल जी

पौराणिक साहित्य में राजनीति

प्रज्ञाचक्षु पं० सुखलाल जी : एक परिचय

प्रज्ञापुरुष पं० जगन्नाथ जी उपाध्याय की दृष्टि में-

बुद्ध व्यक्ति नहीं प्रक्रिया

प्रतिक्रिया है दुःख

प्रज्ञा पुरुष

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री जयभगवान जैन

श्री दिनेशचन्द्र चौबीसा

श्रीमती यमुनादेवी पाठक

रीता बिश्नोई

मुनि महेन्द्रकुमार

श्री जयकुमार जैन

श्री गुलाबचन्द्र जैन

डॉ० इन्द्र

साहू श्रेयासप्रसाद जैन

श्री धन्यकुमार राजेश

श्री गुलाबचन्द्र जैन

डॉ० सागरमल जैन

युवाचार्य महाप्रज्ञ

साध्वी रत्न श्री विचक्षण श्री जी

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
७	१२	१९५५	३-९
४४	१-३	१९९३	३५-४१
१	७	१९५०	२९-३३
४२	१-३	१९९१	७५-८६
३६	३	१९८५	११-१३
२८	११	१९७७	३-९
२९	९	१९७८	३-५
५	३	१९५४	२५-२९
३२	५	१९८१	४८-४९
२३	१	१९७१	३-१३
३२	५	१९८१	५५
४६	४-६	१९९५	१६६-१६९
३३	९	१९८२	२-६
३२	५	१९८१	३५



## लेख

### प्रज्ञामूर्ति

प्रभावशाली व्यक्तित्व (मनोवैज्ञानिक लेख)  
 प्राकृत हिन्दी कोश के महान् प्रणेता : पं० हरगोविन्ददास  
 प्रागैतिहासिक भारत में सामाजिक मूल्य एवं परम्पराएँ  
 प्राचीन जैन आगमों में राजस्व व्यवस्था  
 प्राचीन जैन ग्रंथों में कृषि  
 प्राचीन जैन साहित्य में उत्सव-महोत्सव  
 प्राचीन जैन साहित्य में वर्णित आर्थिक जीवन :

### एक अध्ययन

प्राचीन जैन साहित्य में शिक्षा का स्वरूप  
 प्राचीन प्राकृत ग्रंथों में उपलब्ध भगवान्  
 महावीर का जीवन चरित  
 प्राचीन भारत में अपराध और दंड  
 प्राचीन भारतवर्ष में गणतंत्र का आदर्श  
 प्राणप्रिय काव्य के रचयिता व रचनाकाल  
 प्राणीमात्र के विकास का आधार जैनधर्म  
 बलभद्र और हरिण

## लेखक

श्री रमेशमुनि जी शास्त्री

श्री कोमल जैन

श्री अगरचन्द नाहटा

डॉ० जगदीशचन्द्र जैन

डॉ० अनिलकुमार सिंह

डॉ० अच्छेलाल यादव

डॉ० क्षिनकू यादव

श्रीमती कमलप्रभा जैन

डॉ० राजदेव दुबे

डॉ० के० ऋषभचन्द्र

डॉ० प्रमोदमोहन पाण्डेय

श्री कन्हैयालाल सरावगी

श्री अगरचंद नाहटा

डॉ० महेन्द्रसागर प्रचंडिया

उपाध्याय अमरमुनि

ई० सन्

अंक

वर्ष

पृष्ठ

५	३२	५	१९८१	३३
५	८	५	१९५७	१२-१४
५	२८	५	१९७७	१९-२२
१०-१२	४३	१०-१२	१९९२	१३-१९
१-३	४७	१-३	१९९६	११-१९
४	२४	४	१९७३	२४-२७
११	२३	११	१९७२	२९-३३
८-९	३७	८-९	१९८६	१०-१९
१२	३६	१२	१९८५	१६-२४
६	२८	६	१९७७	३-१०
६	२४	६	१९७३	१७-२१
९	२४	९	१९७३	९-१२
९	२३	९	१९७२	१७-२०
२	३२	२	१९८०	१६-१८
१२	३३	१२	१९८२	९-११

## लेख

बत्तीस प्रकार की नाट्यविधि

बन्दर का रोना

बलिदान की अमर गाथा

वसन्तविलासकार बालचन्द्र

सूरि: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

बालकों के संस्कार निर्माण में अभिभावक,

शिक्षक एवं समाज की भूमिका

बिना विचारे जो करै

बुद्ध और महावीर

बह्मदत्त

भक्तारस्तोत्र : एक अध्ययन

भरतेशवैभव में प्रतिपादित सामाजिक

एवं आर्थिक व्यवस्था

भगवान् महावीर

भगवान् महावीर

भगवान् महावीर और उनका शांति संदेश

भगवान् महावीर और जातिभेद

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल

मुनि महेन्द्रकुमार

उपाध्याय श्री अमरमुनि

डॉ० यदुनाथप्रसाद दुबे

डॉ० सागरमल जैन

उपाध्याय अमरमुनि

डॉ० देवसहाय त्रिवेद

मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी 'प्रथम'

डॉ० हरिशंकर पाण्डेय

श्री सुपार्थकुमार जैन

श्री मदनलाल जैन

श्री महेन्द्रराजा जैन

पं० श्री ज्ञानमुनि जी

श्री पृथ्वीराज जैन

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
५	१०	१९५४	३-९
३६	२	१९८४	८-१०
३२	९	१९८१	१७-२३
४२	४-६	१९९१	२१-३२
३१	३	१९८०	२६-३८
३३	७	१९८१	१२-१४
३१	१	१९७९	३०-३४
३४	३	१९८३	४०-४२
४६	७-९	१९९५	७-९
२६	१०	१९७५	३-८
७	६-७	१९५६	५५-५६
१३	६	१९६२	४७-५३
६	६-७	१९५५	५-१७
१	६	१९५०	११-१६



## लेख

भगवान् महावीर और नारी जाति  
भगवान् महावीर और उनका उपदेश  
भगवान् महावीर और युवा अध्यात्म  
भगवान् महावीर और विश्वशांति  
भगवान् महावीर और समता का आचरण  
भगवान् महावीर  
भगवान् महावीर-उनके जीवन की विविध

## भूमिकाएँ

भगवान् महावीर का आदर्श और हम  
भगवान् महावीर का आदर्श जीवन  
भगवान् महावीर का उपदेश और

## आधुनिक समाज

भगवान् महावीर का जीवन और दर्शन  
भगवान् महावीर का निर्वाण कल्याणक  
भगवान् महावीर का विचार तथा कृतित्व  
समस्त विश्व के लिए अनुपम धरोहर  
भगवान् महावीर का व्यक्तित्व

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री विमल जैन  
डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी  
श्री जमनालाल जैन  
डॉ० निजामुद्दीन  
मुनि नेमिचंद  
उपाध्याय अमरमुनि

पं० सुखलाल संघवी  
श्रीमती कांता जैन  
श्री पूनमचन्द मुणोत जैन

पं० दलसुखभाई मालवणिया  
डॉ० सागरमल जैन  
उपाध्याय अमरमुनि

डॉ० रामकुमार वर्मा  
डॉ० गुलाबचन्द्र चौधरी

४६१

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१५	१२	१९६४	३५-३८
१४	८	१९६३	१५-१७
३३	६	१९८२	५१-५५
३५	१	१९८३	१०-१३
१५	१०	१९६४	३०-३४
३४	१	१९८२	५-१४
३	६	१९५२	९-१६
२	६	१९५१	३३-३६
३६	७	१९८५	२२-२३
३२	६	१९८१	१७-२२
४५	१-३	१९९४	१४-१७
३५	१	१९८३	२-६
३१	१	१९७९	३६-३७
६	६-७	१९५५	४१-४६

भगवान् महावीर का व्यक्तित्व  
 भगवान् महावीर का समन्यवाद  
 भगवान् महावीर की जन्मकालीन परिस्थितियाँ  
 भगवान् महावीर की तलस्पर्शिनी अहिंसा दृष्टि  
 भगवान् महावीर की दिव्य देशना  
 भगवान् महावीर की देन  
 भगवान् महावीर की मंगल विरासत  
 भगवान् महावीर की महामानवता  
 भगवान् महावीर की व्यापक दृष्टि  
 भगवान् महावीर के आठ संदेश  
 भगवान् महावीर के आदर्श और यथार्थ  
 की पृष्ठभूमि  
 भगवान् महावीर के जीवन का एक भ्रान्त दृश्य  
 भगवान् महावीर के निर्वाण का २५००वां वर्ष  
 भगवान् महावीर-जीवन और सिद्धान्त  
 भगवान् महावीर : जीवन सम्बन्धी प्रमुख घटनाएँ  
 भगवान् महावीर : समताधर्म के प्ररूपक

मुनि कन्हैयालाल जी 'कमल'  
 श्री वशिष्ठनारायण सिन्हा  
 डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव  
 मुनिश्री नगराज जी  
 पं० अमृतलाल शास्त्री  
 मुनि वसन्तविजय  
 पं० सुखलाल जी  
 डॉ० मंगलदेव शास्त्री  
 श्यामवृक्ष मौर्य  
 श्री ज्ञानमुनि  
 मुनिश्री नगराज जी  
 डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन  
 श्री गोपीचंद धारीवाल  
 श्री धर्मचन्द्र 'मुखर'  
 डॉ० मंगलप्रकाश मेहता  
 पं० दलसुख मालवणिया

वर्ष ८ १० १३ ३८ ८ १५ २६ १४ ३५ १५ ३५ १५ ३५ १५ २३ ६ ३६ २६

अंक ६ ७-८ ६ १ ६ १० १-२ ६-७ ६ ९ ६ ७-८ ९ ६-७ ७ १-२

ई० सन् १९५७ १९५९ १९६२ १९८६ १९५७ १९६४ १९७४ १९६३ १९८४ १९६४ १९८४ १९६४ १९८४ १९६४ १९७२ १९५५ १९८५ १९७४

पृष्ठ १७-२३ ४६-५० २२-२६ २-४ ३३-३४ ३७-४० ३-९ ९-११ २९-३१ २८-३२ २०-२२ ३३-४६ २६-३१ ३६-४० १२-१५ १८-२७



## लेख

भगवान् या सामाजिक क्रांतिकारी

भगवान् महावीर के जीवन चरित्र

”

भरतेश्वरभवन में प्रतिपादित सामाजिक एवं

आर्थिक व्यवस्था

भाग्यवान् अन्धा पुरुष

भाग्य बनाम पुरुषार्थ

भारत की अहिंसक संस्कृति

भारतीय चिकित्सा शास्त्र

भारत की अहिंसक संस्कृति

भारतीय दर्शनों का समन्वयवादी स्थितप्रज्ञ पुरुष

भारतीय मनीषा के उज्ज्वलतम

प्रतीक पं० सुखलाल जी

भारतीय संस्कृति

भारतीय संस्कृति का दृष्टिकोण

भारतीय संस्कृति का प्रहरी

भारतीय संस्कृति में दान का महत्व

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'

श्री कस्तूरमल बाठिया

”

श्री सुपार्थकुमार जैन

मुनि महेन्द्र कुमार

डॉ० सागरमल जैन

मुनिश्री रामकृष्णजी म० सा०

श्री अत्रिदेव विद्यालंकार

मुनिश्री रामकृष्णजी म० सा०

पं० श्री विजयमुनि जी

डॉ० रामजी सिंह

डॉ० मंगलदेव शास्त्री

”

कविरत्न श्री अमरमुनिजी

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

४६३

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
११	६	१९६०	२५-२७
१५	५-६	१९६४	४९-६३
२०	३	१९६९	५-२२
२६	११	१९७५	३-८
३५	१	१९८३	१४-१६
३६	९	१९८५	२-६
७	९	१९५६	२०-२३
४	३	१९५३	२९-३४
७	८	१९५६	२१-२५
३२	५	१९८१	१७-२७
३२	५	१९८१	४४-४६
६	३	१९५५	१८-३१
६	९	१९५५	३-१६
६	१२	१९५५	२६-२८
२०	६	१९६९	८-१६

भारतीय राजनीति में जैन संस्कृति का योगदान

भारतीय संस्कृति का समन्वित रूप

भारतीय संस्कृति के विकास में श्रमण धारा का महत्व

भिममंगा मन

भिक्षुणी संघ की उत्पत्ति एवं विकास

भिक्षु संघ और समाजसेवा

मंगलमय महावीर

मंदिरों के झगड़े और जैन समाज

मन की लड़ाई

मनुष्य प्रकृति से शाकहारी

ममता

मनुष्य की परिभाषा

मनुष्य की प्रगति के प्रति भयंकर विद्रोह

महत्वपूर्ण जैन कला के प्रति जैन समाज

की उपेक्षा वृत्ति

महाकवि स्वयंभू और नारी

महाकवि रत्नाकर के कतिपय अध्यात्म गीत

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री इन्द्रेशचन्द्र सिंह

डॉ० सागरमल जैन

डॉ० कोमलचन्द जैन

डॉ० रतनकुमार जैन

डॉ० अरुणप्रताप सिंह

भिक्षु जगदीश काश्यप

प्रो० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य

श्री ऋषभदास रांका

उपाध्याय अमरमुनि

डॉ० महेन्द्रसागर प्रचण्डिया

महात्मा भगवानदीन

श्री महावीरप्रसाद गैरोला

मुनिश्री आईदान जी महाराज

श्री अगरचंद नाहटा

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

पं० के० भुजबली शास्त्री

ई० सन्

१९९०

१९९४

१९८४

१९८२

१९८०

१९५०

१९५२

१९५१

१९८०

१९८१

१९८०

१९८०

१९५४

१९८०

१९७४

१९६८

अंक

७-९

४-६

१२

४

९

४

६

६

१०

६

२

१२

६

७

४

२

वर्ष

४१

४-५

३५

३३

३१

१

३

२

३१

३२

३२

३१

५

३१

२५

२०

पृष्ठ

२७-३४

१२९-१३४

१५-२४

२१-२८

१७-२०

१३-१६

२३-२४

२८-३२

१३-१६

३२-३४

३-४

१४-१६

१८-१९

१३-१४

३-७

२३-२५



लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
महात्मा कन्यशूषियस	६	४	१९५५	१४-१७
महात्मा गान्धी का मानवतावादी राजनीतिक चिन्तन और जैनदर्शन एक समीक्षात्मक अध्ययन	४७	७-९	१९९६	५५-५९
महामानव महावीर का जीवन प्रदेश	३६	७	१९८५	७-९
महावीर और उनकी देशना	२५	५	१९७४	२१-२४
महावीर और उनके सिद्धान्त	२४	६	१९७३	३-८
महावीर और क्षमा	४	५	१९५३	३०-३४
महावीर और बुद्ध	३७	७	१९८६	१२-१६
महावीर का अखण्ड व्यक्तित्व	३२	६	१९८१	११-१६
महावीर का जीवन दर्शन	३५	६	१९८४	३-१४
महावीर का जीवन दर्शन	३७	६	१९८६	७-९
महावीर का दर्शन, सामाजिक परिपेक्ष्य में	३२	६	१९८१	२-९
महावीर का मंगल उपदेश	१३	७-८	१९६२	४९-५०
महावीर का वीरत्व	१९	९	१९६८	२२-२७
महावीर का संदेश	६	६-७	१९५५	२४-३४
महावीर का साम्यवाद	५	९	१९५४	२८-३१
महावीर की जय	५	८	१९५४	३१-३३

महावीर की वाणी  
महावीर क्षत्रिय पुत्र थे या ब्राह्मणपुत्र ?  
महावीर के ये उत्तराधिकारी  
महावीर के जीवन पर नया प्रकाश  
महावीर के सिद्धान्त-युगीन संदर्भ में  
महावीर जयन्ती  
महावीर भूले ?

”

महावीर भूले !  
महावीर महान् थे  
महावीर विवाहित थे या अविवाहित  
महिलाओं की मर्यादा  
मानव जाति के अभ्युदय का पर्व 'दीपावली'  
मानव जीवन का आधार  
मानव धर्म का सार  
मानव संस्कृति और महावीर

”

## लेखक

श्री कपूरचन्द जैन  
डॉ० मोहनलाल मेहता  
मुनि सुरेशचन्द्र शास्त्री  
श्री कस्तूरमल बाँठिया  
डॉ० सागरमल जैन  
स्व० श्री जिनेन्द्रवर्णी  
श्री कस्तूरमल बाँठिया

”

प्रो० दलसुखभाई मालवणिया  
प्रो० विमलदास कौंदिया  
श्री रतिलाल म० शाह  
श्रीमती शकुन्तला मोहन  
दर्शनचार्य मुनि योगेशकुमार  
श्री पृथ्वीराज जैन  
श्री जगदीशसहाय  
प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन

”

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३२	६	१९८१	२३-२६
२६	१-२	१९७४	३४-३८
६	६-७	१९५५	५७-६०
१२	९	१९६१	३१-३३
३३	६	१९८२	३-२७
३५	६	१९८४	१५-१९
७	३	१९५६	२२-२९
८	२	१९५६	४-१५
७	६-७	१९५६	५१-५४
८	६	१९५७	५०-५२
२६	६	१९७५	१२-१६
१२	४	१९६१	३२-३३
३५	१२	१९८४	११-१४
१	३	१९५०	२५-२७
३२	११	१९८१	६-१५
७	७	१९५६	२२-२५
११	७-८	१९६०	२१-२३



लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
मानव संस्कृति का विकास	श्री कन्हैयालाल सरावगी	२८	२	१९७६	३-१५
मॉन्तेसरि आन्दोलन	श्री ए० एम० योस्तन	८	३-४	१९५७	६७-७९
मॉन्तेसरि शिक्षा के ५० वर्ष	”	८	३-४	१९५७	६१-६६
मॉन्तेसरि शिक्षा-पद्धति	कु० कृषा मेहरा	८	३-४	१९५७	३८-४८
माँस का मूल्य	उपाध्याय अमरमुनि जी	३१	३	१९८०	२२-२५
मुनिश्री चौथमल जी की जन्म शताब्दी	श्री गुलाबचन्द जी	३०	३	१९७९	२४-२७
मुनिश्री देशपाल : जीवन और कृतित्व	डॉ० सनत्कुमार रंगाटिया	३२	५	१९८१	६२-६९
मुलाकात महावीर से	श्री शरदकुमार साधक	३६	६	१९८५	२-६
मूर्त-अंकनों में तीर्थंकर महावीर के जीवन-दृश्य	डॉ० मासतिनन्दनप्रसाद तिवारी	२७	६	१९७६	२१-२५
मेघकुमार का आध्यात्मिक जागरण	श्री विजय मुनि	८	९	१९५७	२५-२७
मेरी कुछ अनुभूतियाँ	श्री शादीलाल जैन	१४	११-१२	१९६३	८८-९१
मोक्ष	”	९	९	१९५८	१८
मौलिक चिन्तन की आवश्यकता	श्री अगरचंद नाहटा	१४	९	१९६३	२०-२३
यह धर्म प्राण देश है	श्री रघुवीरशरण दिवाकर	२	९	१९५१	२८-३०
युगपुरुष आचार्यसम्राट आनन्ददत्त जी म०	उपाचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी महाराज	४३	१-३	१९९२	१०३-१०५
युगपुरुष भगवान् महावीर	श्री पृथ्वीराज जैन	२	६	१९५१	२४-२७
युगीनपरिवेश में महावीर स्वामी के सिद्धान्त	डॉ० सागरमल जैन	४६	७-९	१९९५	१-६

युद्ध और युद्धनीति

राक्षस : एक मानव वंश

रामकथा के वानर : एक मानव जाति

रामकथाविषयक कतिपय श्रांत धारणायें

राजगृह

राज्य का त्याग : त्यागी से भय

राजा मेघरथ का बलिदान

रामसनेही सम्प्रदाय के रेणुशाखा के दो

सरावगी आचार्य

राष्ट्रनिर्माण और जैन

राष्ट्रभाषा के आद्यजनक भगवान् महावीर

राष्ट्रीय विकास यात्रा में जैन धर्म एवं जैन

पत्रकारों का योगदान

रूढ़िच्छेदक महावीर

लवण एवं अंकुश की देवविजय का भौगोलिक परिचय

लोक कल्याण के लिए श्रमण संस्कृति

वर्ण और जातिवाद : जैन दृष्टि

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री इन्द्रेशचन्द्र सिंह

डॉ० के० ऋषभचन्द्र

”

”

श्री गणेशप्रसाद जैन

श्री गणेश ललवानी

उपाध्यायश्री अमरमुनि

श्री अगरचंद नाहटा

श्री माईदयाल जैन

डॉ० रतिलाल म० शाह

श्री जिनेन्द्र कुमार

पं० बेचरदास देशी

डॉ० के० ऋषभचंद्र

भिष्णु जगदीश काश्यप

श्री कन्हैयालाल सरावगी

ई० सन्

१९८९

१९६६

१९६७

१९६५

१९७२

१९८३

१९८०

१९७८

१९६०

१९७३

१९८५

१९५२

१९६५

१९४९

१९७८

अंक

१२

१-२

१०

१२

२

९

२

७

६

४

३

६

३

१

७

वर्ष

४०

१८

१८

१६

२४

३४

३२

२९

११

२४

३६

३

१६

१

२९

पृष्ठ

२६-३६

८-१२

९-१२

३२-३४

१६-२७

१४-१९

१३-१५

१२-१६

४९-५६

२८-३१

६-१०

३२-३७

३-१५

१९-२१

१७-२०



## लेख

### वर्ण विचार

वर्तमान अशान्ति का एकमात्र समाधान अहिंसा  
वर्तमान युग के सन्दर्भ में भगवान् महावीर के उपदेश  
वर्तमान सन्दर्भ और भगवान् महावीर की अहिंसा  
वर्धमान : चिन्तन खण्ड  
वर्धमान से महावीर कैसे बने ?  
वराङ्गचरित में अठारह श्रेणियों के प्रधान : एक विश्लेषण डॉ० रमेशचन्द्र जैन  
वराङ्गचरित में राजनीति

### वसुराजा

वादिराज सूरि : व्यक्तित्व एवं कृतित्व  
विद्वत् रत्नमाला का एक अमूल्य रत्न  
विद्याधर : एक मानव जाति  
विद्याभूर्ति पं० सुखलाल जी  
विद्यावारिधि एवं प्रज्ञापुत्र  
विमलसूरि के पठमचरित का भौगोलिक अध्ययन  
विवाह और कन्या का अधिकार  
विवाह-भारतीयेत्तर परम्परायें

## लेखक

श्री रमेशचन्द्र जैन  
श्री कस्तूरीनाथ गोस्वामी  
श्री कन्हैयालाल सरावगी  
डॉ० आदित्य प्रचण्डिया  
श्री नरेशचन्द्र मिश्र  
श्री जिनविजयसेनसूरि  
" डॉ० रमेशचन्द्र जैन  
मुनि महेन्द्रकुमार  
श्री उदयचन्द 'प्रभाकर'  
विद्यानन्द मुनि  
डॉ० के० ऋषभचन्द्र  
पं० दलसुख मालवणिया  
मुनिश्री नगराज जी  
डॉ० कामताप्रसाद मिश्र  
सुश्री प्रेमकुमारी दिवाकर  
डॉ० बशिष्ठनारायण सिन्हा

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२४	१	१९७२	७-११
३४	५	१९८३	१३-१६
२५	८	१९७४	२८-३४
३५	६	१९८४	२७-२८
१९	६	१९६८	१-४
१५	५-६	१९६४	६९-७५
२६	७	१९७५	३-८
२५	११	१९७४	८-१६
३५	४	१९८४	९
२८	७	१९७७	३-८
३२	५	१९८१	५३
१८	४	१९६७	१८-२०
३	४	१९५२	१५-१८
३२	५	१९८१	१६
३२	१२	१९८१	१२-२०
२	१२	१९५१	२५-३०
१६	८	१९६५	२४-३२

विश्वशांति का आधार-गाँधीवाद	२
विश्व अहिंसा संघ और प्रवृत्तियाँ	२
वीतराग महावीर की दृष्टि	२
वीरसंघ और गणधर	२
वैदिक साहित्य में जैन परम्परा	२
वैशाली के गणतंत्र की एक झाँकी	२
व्यक्ति और समाज	२
व्यक्ति और समाज	२
व्यक्ति पहले या समाज	२
शान्ति की खोज में	२
शांति के अग्रदूत-भगवान् महावीर	२
शासनप्रभावक आचार्य जिनप्रभसूरि	२
शास्त्र और सामाजिक क्रान्ति	२
शिक्षा और उसका उद्देश्य	२
शिक्षा का जहर	२
शिक्षा के दो रूप	२

श्री नरेन्द्रकुमार जैन	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
डॉ० बूलचन्द जैन	१६	१	१९६५	१९-२८
श्री ज्ञान मुनि	५	३	१९५४	३७-४०
श्री श्रीरंजन सूरिदेव	१४	८	१९६३	६-८
प्रो० दयानन्द भार्गव	१०	६	१९५९	११-१३
डॉ० इन्द्र	८	६	१९५७	३५-३८
श्री रतन पहाड़ी	४३	७-९	१९९२	९-१३
डॉ० सागरमल जैन	५	४	१९५४	२८-३०
श्री कन्हैयालाल सरावगी	१	८	१९५०	२०-२४
श्री प्रवीणऋषि जी	३४	२	१९८२	३-४
सुश्री शशिप्रभा जैन	२५	१२	१९७४	२८-३१
श्री अगरचन्द नाहटा	३१	१२	१९८०	१७-१९
पं० सुखलाल जी	१४	६-७	१९६३	४९-५२
श्री एस० आर० शास्त्री	२८	१	१९७६	१३-२०
श्री उमाशंकर त्रिपाठी	१२	५	१९६१	९-१२
२	८	७-८	१९५७	४-७
३	७	३	१९५६	३०
७	७	२	१९५५	२७



लेख	लेखक	वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
शिक्षा के साधन	श्री एस० आर० स्वामी	३	२	१९५१	१३-१७
शिशु और संस्कृति	प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन	८	३-४	१९५७	१०-१४
शुभकामना	कुमारी सत्य जैन	६	१	१९५४	३१-३३
श्रमण	श्री कस्तूरमल बांठिया	३	५	१९५२	२३
श्रमण और श्रमणोपासक	पं० मुनि कन्हैयालालजी म० 'कमल'	१८	९	१९६७	२५-२९
श्रमण जीवन में अधिकरण का उपशमन	पं० बेचरदास दोशी	७	११	१९५६	२३-२७
श्रमण भगवान् महावीर	मुनि फूलचन्दजी 'श्रमण'	२६	१-२	१९७४	१०-१७
श्रमण भगवान् महावीर की शिष्य संपदा	रविशंकर मिश्र	७	१	१९५५	३०
श्रमण भगवान् महावीर के चारित्रिक अलंकरण-क्रमशः		३३	६	१९८२	१-२
		३५	६	१९८४	१-२
श्रमण-संघ	डॉ० मोहनलाल मेहता	२८	११	१९७७	१८-२९
श्रमण संघ की शिक्षा-दीक्षा का प्रश्न	पं० मुनिश्री सुरेशचन्द्र जी महाराज	७	१२	१९५६	१६-१७
श्रमण संस्कृति और नया संविधान	श्री पृथ्वीराज जैन	१	५	१९५०	९-१५
श्रमण संस्कृति और नारी	डॉ० कोमलचंद जैन	२३	७	१९७२	६-१०
श्रमण संस्कृति का भावी विकास	पं० कृष्णचन्द्राचार्य	९	११-१२	१९५८	७३-७४
श्रमण संस्कृति का केन्द्र-विपुलावल और उसका पड़ोस	श्री गुलाबचन्द्र चौधरी	२	१	१९५०	१५-२२

## लेख

श्रमण संस्कृति का सार  
 श्रमण संस्कृति का हार्द  
 श्रमण संस्कृति की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि  
 श्रमण संस्कृति की मूल संवेदना  
 श्रमण संस्कृति की पृष्ठभूमि  
 श्रमण संस्कृति के मौलिक उपादान  
 श्रमण संस्कृति में क्षमा  
 श्रमण संस्कृति का स्रोत : श्रावक  
 श्रावक किसे कहा जाय  
 श्रावक के मूलगुण  
 श्रावक गंगदत्त  
 श्रीकृष्ण : एक समीक्षात्मक अध्ययन

”

श्री तारण स्वामी  
 संवेदनहीनता से सुलगती सभ्यता  
 संवत्सरी और आचार्य श्री सोहनलाल जी म०

## श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री  
 श्री लक्ष्मीनारायण ‘भारतीय’  
 श्री मनोहर मुनिजी  
 डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन  
 श्रीमती उर्मिला जैन  
 श्री वसन्तकुमार चट्टोपाध्याय  
 श्री कानजी भाई पटेल  
 श्री जमनालाल जैन  
 श्री कस्तूरमल बांठिया  
 श्री सनत्कुमार जैन  
 मुनिश्री महेन्द्रकुमार ‘प्रथम’  
 श्री धन्यकुमार राजेश

”

श्री देवेन्द्र कुमार  
 मुनि राजेन्द्रकुमार ‘रमेश’  
 श्री विश्व

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२०	५	१९६९	८-१७
१६	५	१९६५	२-११
८	७-८	१९५७	३५-३८
२३	१०	१९७२	१६-१७
३३	१२	१९८२	३-५
९	४	१९५८	९-२१
१३	११	१९६२	९-१३
२९	४	१९७८	१३-२२
१८	३	१९६७	१०-२३
२९	११	१९७८	३-१८
३६	९	१९८५	१४-१५
२०	११	१९६९	२७-३४
२०	१२	१९६९	२६-३१
२	१	१९५०	२९-३२
३६	४	१९८५	१४-१९
६	११	१९५५	३०-३३



## लेख

संस्कृति-एक विश्लेषण

संस्कृति का अर्थ

संस्कृति का आधार-व्यक्ति स्वातंत्र्य

संस्कृति का प्रश्न

संस्कृति का स्वरूप

संस्कृति क्या है?

संस्कृति की दुहाई

सच्ची क्षमा

सच्ची सनाथता

सत्ता का दर्प

सद्विचार हेतु मौलिक प्रक्रिया

सदा जाग्रत नरवीर

सनतकुमार का सौन्दर्य

सन्त एकनाथ के जीवन प्रसंग

सन्मति महावीर और 'सर्वोदय'

सफल हुआ सम्यक्त्व पराक्रम

## लेखक

श्री गुलाबचन्द्र चौधरी

पं० फूलचन्दजी सिद्धान्तशास्त्री

प्रो० महेन्द्रकुमार जी 'न्यायाचार्य'

प्रो० विमलदास जैन

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

डॉ० नामवर सिंह

श्री ऋषभदास रांका

साध्वीश्री कानकुमारी जी

डॉ० रविशंकर मिश्र

उपाध्याय अमरमुनि जी

श्री सौभाग्यमुनि 'कुमुद'

साध्वीश्री ग्णानती एवं साध्वी सुमता श्रीजी

उपाध्याय अमरमुनि जी

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

श्री महावीरप्रसाद भ्रेमी

श्री राजमल पर्वैया

अंक

ई० सन्

पृष्ठ

वर्ष

१	१२	१९५०	१३-१६
१	८	१९५०	३३-३४
१	९	१९५०	३३-३६
१	७	१९५०	२३-२७
१५	१२	१९६४	३३-३४
१२	१२	१९६१	३४-३९
८	९	१९५७	१५-१८
३२	११	१९८१	३१-३२
३६	५	१९८५	१०-१२
३३	५	१९८२	१३-१६
३५	४	१९८४	१०-११
३२	५	१९८१	३६
३३	११	१९८२	१०-१४
५	३	१९५४	११-१९
६	६-७	१९५५	५१-५३
३२	११	१९८१	१

## लेख

समकालीन जैन समाज में नारी  
समता और समन्वय की भावना  
समता के प्रतीक महावीर  
समता के संदेशदाता : भगवान् महावीर  
समताशील भगवान् महावीर  
समदर्शी दार्शनिक  
समन्वय या सफाई  
समाज का धर्म

समाज में महिलाओं की उपेक्षा-एक विचारणीय विषय  
समाजशास्त्र की पृष्ठभूमि में जैनों के सम्प्रदाय  
सरस्वती पुत्र

सर्वधर्म समभाव और स्याद्वाद  
सर्वधर्मसमानत्व की कुंजी  
सर्वोदय और राजनीति  
सर्वोदय और हृदय परिवर्तन  
साधु संस्था और लोकशिक्षण

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

डॉ० प्रतिभा जैन  
डॉ० मोहनलाल मेहता  
श्री ऋषभदास रांका  
श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'  
मुनि महेन्द्रकुमार 'प्रथम'  
श्री विमनलाल चकुभाई शाह  
प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन

”

डॉ० प्रेमचन्द्र जैन  
श्री लक्ष्मीनारायण 'भारतीय'  
श्रेष्ठी श्री अचलसिंह जी  
श्री सुभाषमुनि 'सुमन'  
श्री अमरमुनि जी  
श्री सतीशकुमार  
श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा  
मुनिश्री नेमिचन्द जी

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
४६	१०-१२	१९९५	३४-४१
१०	६	१९५९	३९-४४
९	६-७	१९५८	६९-७२
१५	७-८	१९६४	२५-२८
३०	९	१९७९	२७-३०
३२	५	१९८१	५२
३	१२	१९५२	७-१०
१३	२	१९६१	२१-२३
३१	१	१९७९	८-१९
१७	३	१९६६	११-१९
३२	५	१९८१	५०
३७	१०	१९८६	१०-१५
११	४	१९६०	१८
१०	५	१९५८	२९-३१
१०	५	१९५८	३२-३४
१२	९	१९६१	३५-४०



## लेख

साधु समाज की प्रतिष्ठा  
साध्वी समाज से  
सामायिक और ध्यान  
साम्प्रदायिक कदाग्रह  
सांस्कृतिक पर्व की सामाजिक उपयोगिता  
सिर्फ फैशन की खातिर  
सुबुद्धि और दुर्बुद्धि  
सुख का सागर  
सुख-दुःख  
सुमन रख भरोसा महावीर का  
सूडा-सहेली की प्रेमकथा  
सेवा : एक विश्लेषण  
सेवाव्रती नंदीषेण  
सोने की चमक  
सोमदेवसूरि और जैनाभिमत वर्ण व्यवस्था  
सोमदेवसूरि की अर्थनीति-एक समाजवादी दृष्टिकोण

## श्रमण : अतीत के झरोखे में

### लेखक

पं० कृष्णचन्द्राचार्य  
मुनिश्री आईदानजी  
डॉ० आदित्य प्रचण्डिया  
श्री पृथ्वीराज जैन  
साध्वीश्री अर्णिमा श्रीजी  
श्री प्रकाश मेहता  
मुनि महेन्द्रकुमार 'प्रथम'  
डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीति'  
श्री कन्हैयालाल सरावगी  
श्री उत्तमवलाल तिवारी  
श्री भैरवलाल नाहटा  
श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री  
उपाध्याय अमर मुनि  
उपाध्यायश्री अमर मुनि  
श्री गोकुलचंद जैन  
श्री कृष्णमुरारी पाण्डेय

वर्ष ३ ४ ३५ १ ३२ ३३ ३६ ३३ ३१ ३६ ४२ १८ ३२ ३१ १३ ३२

अंक

७-८ ४ ४ २ ११ २ ४ १० ५ ७ ७-१२ १-२ १ ७ १ ८

ई० सन्

१९५२ १९५३ १९५४ १९८४ १९४९ १९८१ १९८१ १९८५ १९८२ १९८० १९८५ १९९१ १९६६ १९८० १९८० १९६१ १९८१

पृष्ठ

६१-६३ २१-२२ ४-८ २७-३० १६-२० २३-२४ ७-१३ २२-२४ ९-१३ १०-११ २५-३४ २६-४२ १४-१७ ८-९ ९-१४ २४-२५

स्नेह के धागे

स्मृति नन्दन

स्वभाव परिवर्तन

स्वामी केशवानन्द

स्वामी विवेकानन्द

स्वप्न और विचार

स्व० पण्डित जी एक चलते फिरते विश्वकोश

स्त्रीमुक्ति, अन्यतैथिक मुक्ति एवं सवस्त्रमुक्ति का प्रश्न

स्त्रीशिक्षा

हमारी प्रवृत्तियाँ और उनका मूल्यांकन

हमारे पतन का मुख्य कारण : हिंसा

हमारे समाज की भावी पीढ़ी

हमें सामाजिक मूल्यों को बदलना है

हरिजन मंदिर प्रवेश

हरिवंशपुराणकालीन समाज और संस्कृति

हिन्दी जैन कवि छत्रपति : व्यक्तित्व तथा कृतित्व

हिन्दी जैन साहित्य का विस्मृत बुन्देली कवि : देवीदास

हेमचन्द्राचार्य की साहित्य साधना

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री अमरमुनि जी

श्री जिनेन्द्र कुमार

युवाचार्य महाप्रज्ञ

स्वामी सत्यस्वरूपजी

श्री शीतलचन्द्र चटर्जी

मुनि सुखलाल

श्री शादीलाल जैन

डॉ० सागरमल जैन

सुश्री कांता जैन

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

श्री नारायण सक्सेना

श्री उदय जैन

श्री जमनालाल जैन

श्री भगतराम जैन

श्री धन्यकुमार राजेश

डॉ० आदित्य प्रचण्डिया 'दीप्ति'

डॉ० (श्रीमती) विद्यावती जैन

डॉ० मोहनलाल मेहता

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३३	३	१९८२	२-७
३२	५	१९८१	३९-४०
३६	७	१९८५	१२-१८
२	८	१९५१	२६-३१
६	१२	१९५५	३४-३५
३४	९	१९८३	२०-२१
३२	५	१९८१	५१
४८	४-६	१९९७	११३-१३२
१	६	१९५०	२३-२६
१६	६	१९६५	३२-३६
१६	८	१९६५	१६-१९
३	५	१९५२	१६-१८
८	७-८	१९५७	१३-१७
७	६-७	१९५६	५८-६१
२२	२	१९७०	३-१३
३५	८	१९८४	१-५
४३	१०-१२	१९९२	२९-३९
२८	७	१९७७	२७-३१



लेख

## ६. तुलनात्मक

अध्यात्म और विज्ञान -क्रमशः

”  
अन्य प्रमुख भारतीय दर्शनों एवं जैन दर्शन में -  
कर्मबन्ध का तुलनात्मक स्वरूप  
आत्मा : बौद्ध एवं जैन दृष्टि  
आधुनिक विज्ञान और अहिंसा  
आधुनिक विज्ञान, ध्यान एवं सामायिक  
इशुकारीय अध्ययन (उत्तराध्ययन) एवं शांतिपर्व-  
(महाभारत) का पिता-पुत्र संवाद  
उज्जयिनी और जैनधर्म

कर्मप्राप्त अथवा षट्खंडागम : एक परिचय-क्रमशः

”  
”  
”  
”

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

वर्ष

अंक

ई० सन्

पृष्ठ

४७७

प्रो० सागरमल जैन

”

कु० कमला जोशी

श्री कन्हैयालाल सरावगी

श्री ज्ञानमुनि जी महाराज

डॉ० पारसमल अग्रवाल

डॉ० अरुणप्रताप सिंह

श्री तेजसिंह गौड़

डॉ० मोहनलाल मेहता

”

”

”

”

६ १९८९ १-१९  
४-६ १९९७ २०-२९

४-६ १९९१ ३३-४३  
११ १९७३ ३-९  
६ १९५७ १०-१४  
७-९ १९९६ ३४-४३

१-३ १९९१ ८७-९२  
४ १९७२ ३-१२  
२ १९६४ २९-३२  
३ १९६५ २३-२८  
४ १९६५ ३२-३७  
५ १९६५ १९-२२  
६ १९६५ २३-२९

जिनदत्तसूरि का शकुनशास्त्र एवं हरिभद्रसूरि

का व्यवहारकल्प

जैन और वैष्णव काव्य परम्परा में राम

जैन और बौद्ध आगमों में गणिका

बौद्ध और जैन आगमों में जननी

जैन और बौद्ध आगमों में जननी : एक पहलू

बौद्ध और जैन आगमों में जननी : एक स्मृतिकरण

बौद्ध और जैन आगमों में नीचैय : एक और स्मृतिकरण

जैन और हिन्दू

जैन ग्रन्थों और पुराणों के भौगोलिक वर्णन का-

तुलनात्मक अध्ययन

जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म का पारस्परिक प्रभाव

जैन एवं बौद्ध दर्शन में प्रमाण विवेचन

जैन एवं बौद्ध पारिभाषिक शब्दों के अर्थ निर्धारण

और अनुवाद की समस्याएँ

जैन तत्त्वों पर शूब्रिंग के विचार

जैन तथा अन्य भारतीय दर्शनों में सर्वज्ञता विचार (क्रमशः)

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३०	१	१९७९	३१-३३
२३	११	१९७२	१९-२२
१७	१-२	१९६५	७३-८४
१८	६	१९६७	२६-३३
१८	८	१९६७	१४-१७
१८	१०	१९६७	१५-१९
१९	३	१९६८	२३-२४
१	११	१९५०	१६-१७
२३	७	१९७२	१५-२०
४८	४-६	१९९७	३०-५९
४३	१०-१२	१९९२	२१-४०
४५	४-६	१९९४	२३४-२३८
२१	५	१९७०	१६-२३
३०	८	१९७९	३-१३

श्री अगरचन्द नाहटा

श्री रामदयाल जैन

श्री कोमलचन्द जैन

”

सौ० सुधा राखे

डॉ० कोमलचन्द जैन

”

पं० दलसुख मालवणिया

श्री अगरचंद नाहटा

डॉ० सागरमल जैन

डॉ० धर्मचन्द्र जैन

डॉ० सागरमल जैन

श्री कस्तूरमल बांठिया

श्री नरेन्द्रकुमार जैन



## लेख

जैनधर्म और आधुनिक विज्ञान  
 जैनधर्म और बौद्धधर्म  
 जैनधर्म और व्यावसायिक पूँजीवाद: वेबर की अनुदृष्टि  
 जैनधर्म और हिन्दू धर्म (सनातन धर्म) का -  
 पारस्परिक सम्बन्ध  
 जैनधर्म : वैदिक धर्म के संदर्भ में  
 जैन-बौद्ध सम्मत कर्म सिद्धांत  
 जैन संस्कृति और श्रमण परम्परा  
 जैन सम्मत आत्मस्वरूप का अन्य भारतीय दर्शनों से तुलनात्मक विवेचन  
 तर्क और भावना  
 तीर्थंकर और ईश्वर के सम्प्रत्ययों का तुलनात्मक-विवेचन  
 तुलनात्मक दर्शन पर दो दृष्टियाँ  
 निरलन, सर्वोदय और सम्पूर्ण क्रान्ति  
 द्रौपदी कथानक का जैन और हिन्दू स्रोतों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

”

डॉ० सागरमल जैन

डॉ० रमेशचन्द्र जैन

श्री कृष्णलाल शर्मा

डॉ० सागरमल जैन

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

श्री रामप्रसाद त्रिपाठी

डॉ० शान्ताराम भालचन्द्र देव

डॉ० (श्रीमती) कमला पंत

काका कालेलकर

डॉ० सागरमल जैन

श्री श्रीप्रकाश दूबे

डॉ० धूपनाथ प्रसाद

श्रीमती शीला सिंह

४७९

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३०	९	१९७९	३-१०
४३	१०-१२	१९९२	१-१२
२८	१०	१९७७	३-११
१८	१-२	१९६६	६५-७२
४७	१-३	१९९६	३-१०
२३	८	१९७२	८-१२
२२	१	१९७०	२३-३६
४१	४-६	१९९०	२९-४०
४२	७-१२	१९९१	३५-४३
१	२	१९४९	३१-३२
४६	१-३	१९९५	८७-९२
१५	७-८	१९६४	१७-२१
४७	७-९	१९९६	४४-४८
४६	७-९	१९९५	७६-८२

पद्मचरित और रामचरितमयस : एक तुलनात्मक अध्ययन

पद्मचरित और पठमचरित

पद्मचरित और हरिवंशपुराण

पातंजल तथा जैन योग : स्वरूप एवं प्रकार

पुराण बनाम कथा साहित्य : एक प्रश्न चिन्ह

प्रवृत्ति मार्ग और निवृत्ति मार्ग

प्रसाद और तीर्थकर

प्राकृत के प्रबन्ध काव्य : संस्कृति प्रबन्ध काव्यों

के सन्दर्भ में

बुद्ध और महावीर का परिनिर्वाण

”

बौद्ध और जैन आगमों में जननी

बौद्ध और जैन आगमों में पुत्रवधू

भगवान् अरिष्टनेमि और कर्मयोगी कृष्ण

भगवान् बुद्ध और भगवान् महावीर

भागवद्गीता और जैनधर्म

भारतीय साहित्य और आयुर्वेद

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

श्री रमेशचन्द्र जैन

”

कु० मंगला सांड

डॉ० प्रेमचंद जैन

श्री सुबोधकुमार जैन

डॉ० देवेन्द्रकुमार जैन

डॉ० श्रीरंजन सूरिदेव

श्री कस्तूरमल बाठिया

”

सौ० सुधा राखे

डॉ० कोमलचन्द जैन

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

पं० दलसुख मालवणिया

श्री अगरचंद नाहटा

श्री देवेन्द्रमुनि शास्त्री

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२४	४	१९७३	११-१४
२४	५	१९७३	३-७
२३	८	१९७२	३-७
३०	७	१९७९	३-१५
२१	१०	१९७०	१३-९
२२	१	१९७०	३४-३६
२३	७	१९७२	२१-२४
२५	३	१९७४	३-१०
१३	६	१९६२	८-१६
१३	७-८	१९६२	२५-३६
१९	१-२	१९६७	२०-२६
१८	८	१९६७	२४-३३
२४	१	१९७२	३-६
१६	४	१९६५	९-२१
१५	१२	१९६४	११-१२
१८	१०	१९६७	२०-२३



## लेख

भौतिकवाद व अध्यात्मवाद

भौतिकता और अध्यात्म का समन्वय

महर्षि अरविन्द : जैन दर्शन की दृष्टि में

महायान सम्प्रदाय की समन्वयात्मक दृष्टि : भगवद्

गीता और जैनधर्म के परिपेक्ष्य में

महाकवि स्वयंभू और तुलसीदास

महावीर और गाँधी का अहिंसा दर्शन

जनजीवन के संदर्भ में

महावीर और बुद्ध : कैवल्य और बोधि

मिथ्यात्व इन जैनज्ज एण्ड शंकर : ए

कम्पेरेटिव स्टडी

वर्धमान और हनुमान

वेदोत्तरकालीन आत्मविद्या और जैनधर्म

वैदिक एवं श्रमण परम्परा में ध्यान

शास्त्र और शस्त्र

श्वेतान्तर मूलसंघ एवं माधुरसंघ-एक विमर्श

श्रमण और ब्राह्मण

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री गोपीचंद धारीवाल

पं० दलसुख मालवणिया

श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

डॉ० सागरमल जैन

श्री प्रेमसुमन जैन

डॉ० श्रीरंजन सूरदेव

मुनिश्री नगराज जी

डॉ० ललितकिशोर लाल श्रीवास्तव

श्री सूरजचंद्र 'सत्यप्रेमी'

डॉ० अजित शुक्देव

डॉ० रज्जन कुमार

पं० सुखलाल जी

डॉ० सागरमल जैन

प्रो० इन्द्र

४८१

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१६	१०	१९६५	२२-२९
४	६	१९५३	३-४
१७	१०	१९६६	२८-३१
४४	७-९	१९९३	१-१०
१८	९	१९६७	३-१४
२०	१२	१९६९	५-१२
१८	७	१९६७	३-६
२४	२	१९७२	३५-४१
६	६-७	१९५५	२३
२३	९	१९७२	१०-१६
४७	१-३	१९९६	४७-५९
१	२	१९४९	१३-१५
४३	७-९	१९९२	१५-२३
१	४	१९५०	२९-३२

श्रमण और वैदिक साहित्य में स्वर्ग और नरक  
 श्रमण एवं ब्राह्मण परम्परा में परमेश्वरी पद  
 संस्कृत और प्राकृत का समानान्तर अध्ययन  
 संस्कृत शब्द और प्राकृत अपभ्रंश  
 सम्राट अकबर और जैनधर्म  
 सर्वोदय और जैन दृष्टिकोण  
 सांख्य और जैन दर्शन  
 साम्यवाद और श्रमण विचारधारा  
 स्थानाङ्ग और समवायाङ्ग - क्रमशः

”

स्थानाङ्ग एवं समवायाङ्ग में पुनरावृत्ति की समस्या  
 स्याद्वाद एवं शून्यवाद की समन्वयात्मक दृष्टि  
 हिन्दू एवं जैन परम्परा में समाधिमरण : एक समीक्षा  
 हिन्दू-बनाम-जैन  
 हेल्मुथफोन ग्लासनप और जैनधर्म

## ७ - विविध

अध्ययन : एक सुझाव

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२३	१०	१९७२	३-९
४३	१-३	१९९२	५५-६७
२७	२	१९७५	३-८
२८	८	१९७७	१८-२०
४८	४-६	१९९७	७१-७६
१५	९	१९६४	३३-३६
२८	९	१९७७	१४-१९
१	१	१९४९	२२-२७
१५	९	१९६४	२-६
१५	१०	१९६४	२-८
४७	१०-१२	१९९६	३६-५२
४३	१-३	१९९२	९१-१०२
४४	१०-१२	१९९३	१४-१८
६	४	१९५५	३८-४०
२१	१२	१९७०	१३-१७
८	१	१९५६	१२-१४

श्री महेन्द्र राजा



## लेख

अन्तरायकर्म  
अपने व्यक्तित्व की परख कीजिये  
अपभ्रंश की पूर्व स्वयंभू युगीनकविता  
अपूर्वक्षा  
अब कहाँ तक  
अमय का आराधक  
अविद पद शतार्थी  
असुर  
आगम झूठे हैं क्या ?  
आगरा में श्री रत्नमुनि शताब्दी समारोह  
आत्म निरीक्षण  
आत्मबली साधक और दैवीतत्त्व  
आधुनिक पुस्तकालय  
आधुनिक पुस्तकालयों में पुस्तकसूची  
उद्भट विद्वान् पं० बेचरदास दोशी  
उत्सर्ग और अपवाद  
उपवास से लाभ

## लेखक

डॉ० मोहनलाल मेहता  
श्री महेन्द्र राजा  
डॉ० देवेन्द्रकुमार  
श्री विद्या भिक्षु  
पं० बेचरदास दोशी  
डॉ० इन्द्र  
महो० विनयसागर  
श्री गणेशप्रसाद जैन  
पं० दलसुख मालवर्णिग  
श्रीकृष्णचन्द्राचार्य  
श्री पारसमल 'प्रसून'  
मुनिश्री संतबाल  
श्री महेन्द्र राजा  
,,  
श्री गुलाबचन्द्र जैन  
मुनिश्री पुण्यविजय जी  
श्री अत्रिदेव गुप्त

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२३	७	१९७२	३-५
६	२	१९५४	२७-२९
१८	५	१९६७	५-९
१७	६	१९६६	१२-१३
७	१	१९५५	८-१४
५	६	१९५४	१-८
५	६	१९५४	२६-३०
२२	९	१९७१	३०-३३
८	६	१९५७	५६-५९
१५	७-८	१९६४	१२-१६
१८	५	१९६७	९-१०
१५	११	१९६४	९-१२
६	१०	१९५५	३७-४०
७	२	१९५५	३७-३८
१५	९	१९६४	३७-३८
१७	६	१९६६	३०-३३
५	१२	१९५४	२७-३०

एक दुनियाँ और एक धर्म

एक पत्र

एक प्रतिक्रिया

एक समस्या

ऐसा क्यों ?

कलकत्ता विश्वविद्यालय में संस्कृत का

उच्च-शिक्षण क्रमशः

”

कल्चुरीकालीन भगवान् शांतिनाथ की प्रतिमाएँ

कश्मीर की सैर

”

”

कर्मों का फल देनेवाला कम्प्यूटर

काव्य का प्रयोजन : एक विमर्श

काव्य में लोक मंगल

काव्यशास्त्रियों की दृष्टि में श्लेष

काश ! मैं अध्यापिका होती !

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

श्री एस० एस० गुप्त

श्री कैलाशचन्द्र जैन

डॉ० देवेन्द्रकुमार

पं० कैलाशचन्द्र जी

श्री धनदेवकुमार 'सुमन'

म० म० विधुशेखर भट्टाचार्य

”

श्री शिवकुमार नामदेव

पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री

”

”

प्रो० जी० आर० जैन

श्री गंगासागर राय

”

श्री श्रेयांसकुमार जैन

सुश्री शरबती जैन

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
८	९	१९५७	४-७
२०	४	१९६९	२५
१९	३	१९६८	३५
१	९	१९५०	२१-२५
६	२	१९५४	२१-२६
३	५	१९५२	२४-३२
३	६	१९५२	२७-३१
२३	१०	१९७२	१४-१५
५	१०	१९५४	३३-३६
५	११	१९५४	२९-३०
५	१२	१९५४	२५-२७
२२	६	१९७१	३०-३२
१३	१२	१९६२	२५-२७
१३	७-८	१९६२	४२-४४
२९	८	१९७८	२६-३१
४	४	१९५३	२९-३२



## लेख

किसकी जय

कौन भूखे मरेगे

क्या आप असुन्दर हैं?

क्या रावण के दस मुख थे ?

खोज सम्बन्धी कुछ अनुभव और समस्यायें

गंगा का जल लेय अरघ गंगा को दीना

गजेटियर ऑफ इंडिया में जैनी और जैनधर्म

घरों में बच्चे

चलिए और खूब चलिए

चातुर्मास व्यवस्था में सुधार कीजिये

जब आप घर से अकेली निकलें

जिन्दगी किसे कहते हैं?

‘जी’ की आत्मकथा

जीवन चरित्र ग्रन्थ

जीवन की सच्ची क्रान्ति

जीवन धर्म

जीवित धर्म

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

प्रो० इन्द्रचंद्र शास्त्री

श्री पीटर फ्रीमैन

कुमारी रेणुका चक्रवर्ती

डॉ० के० ऋषभ चन्द्र

डॉ० धीरेन्द्र वर्मा

पं० जमनालाल जैन

श्री सुबोधकुमार जैन

श्रीमती ब्रजेशकुमारी याज्ञिक

वैद्यराज पं० सुन्दरलाल जैन

श्री अन्नराज जैन

कु० रूपलेखा वर्मा

प्रिंस क्रोपाटकिन

प्रो० देवेन्द्रकुमार जैन

श्री अगरचंद नाहटा

मुनिश्री पद्मविजय जी

श्री बशिष्ठनारायण सिन्हा

डॉ० राधाकृष्णन्

४८५

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३	५	१९५२	३३-३७
६	२	१९५४	१४-१७
६	१	१९५४	३४-३८
१८	१	१९६७	२२-२४
२	८	१९५१	१-१२
८	५	१९५७	२३-२८
२१	६	१९७०	२८-३५
८	३-४	१९५७	५४-६०
६	१०	१९५५	२७-३९
१५	२	१९६३	२१-२३
७	१०	१९५६	१९-२०
६	१२	१९५५	१७
८	१	१९५६	१५-१७
१०	६	१९५९	३५-३८
१३	४	१९६२	२५-२७
११	३	१९६०	२३-२६
८	१०	१९५७	३४





## लेख

दौरे के संस्मरण

नया और पुराना

धर्म और विद्या का विकास मार्ग

निगंठनातपुत्र

निरामिष भोजन : एक समस्या

नई पीढ़ी और धर्म

नरसिंह मेहता

न्यायोचित विचारों का अभिनन्दन

पथ-भ्रष्ट

पार्श्वनाथ विद्याश्रम

पार्श्वनाथ विद्याश्रम - एक सांस्कृतिक अनुष्ठान

पुलिस

पुस्तक सूची

”

पुनीत स्मरण

पूज्य श्री जिनविजयेन्द्र सूरि जी

प्रतिज्ञा

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री हरजसराय जैन

मुनि सुरेशचन्द्र शास्त्री

पं० सुखलाल जी

श्री भरतसिंह उपाध्याय

डॉ० सम्पूर्णनन्द

श्री नंदलाल मारु

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

पं० श्री जुगलकिशोर मुख्तार

श्री अभयमुनि जी महाराज

प्रो० विमलदास जैन

पं० दलसुख मालवणिया

पं० बेचरदास दोशी

श्री महेन्द्र राजा

”

श्री देवेन्द्रकुमार शास्त्री

श्री शंकर मुनि

श्री हुकुमचन्द सिंघई

४८७

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
४	५	१९५३	२३-२६
७	२	१९५५	२०-२२
१४	३	१९६३	९-१७
११	१०	१९६०	२१-२३
९	३	१९५८	२८-३३
१९	७	१९६८	३५-३८
५	८	१९५४	१७-२०
१७	१०	१९६६	१६-२१
७	२	१९५५	३३-३६
३	७-८	१९५२	१३-२३
१	१	१९४९	३३-३४
१८	७	१९६७	७-८
७	४	१९५६	२७-२९
७	९	१९५६	२५-२६
७	६	१९५६	७-९
१५	२	१९६३	२८-३०
३	२	१९५१	२१-२५

प्राच्यभारती का अधिवेशन

प्रेम का अभ्यास

बच्चों की मूलभूत आवश्यकताएं

बालक की व्यवस्थाप्रियता

बुनियादी सुधार

बैलून में

भगवान् महावीर और दीवाली

भगवान् महावीर : एक श्रद्धांजलि

भगवान् महावीर के जीवन की एक झलक

भारतीय त्यौहार

भारतीय विश्वविद्यालयों में जैन शोध कार्य

भावनाओं का जीवन पर प्रभाव

भोग तृष्णा

भोजन और उसका समय

मगध में दीपमालिका

महामानव की मानसिक भूमिका

महावीर जयन्ती का अर्थ

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

डॉ० नवरत्न कपूर

आचार्य विनोबा भावे

कु० इला खामनवीस

डॉ० मारीआ मॉन्तेसरि

श्री उमाशंकर त्रिपाठी

श्री मैक्स एडालोर

डॉ० ज्योतिप्रसाद जैन

डॉ० मङ्गलदेव शास्त्री

पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री

सुश्री मोहिनी शर्मा

डॉ० गोकुलचंद जैन

प्रो० धर्मेन्द्रकुमार कांकरिया

श्री गोपीचंद धारीवाल

श्री अमृतलाल शास्त्री

मुनि कांतिसागर

प्रो० राजबली पाण्डेय

भाई श्री बंशीधर जी

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१५	१	१९६३	२६-३०
१	३	१९४९	२२-२३
८	५	१९५७	१५-२०
८	३-४	१९५७	४९-५३
१	६	१९४९	१७-२०
६	४	१९५५	२१-२८
१४	१	१९६२	८
७	६-७	१९५६	३-८
९	१०	१९५८	३०-३२
३	१२	१९५२	२७-३०
१९	११	१९६८	२९-२८
९	१	१९५७	२५-२६
२०	५	१९६९	१८-१९
७	१२	१९५६	१८-२०
१	१	१९४९	३७-४०
४	५	१९५३	३-६
१३	६	१९६२	१९-२१



## लेख

बुझती हुई चिनगारियाँ  
मातृभाषा और उसका गौरव  
मानव कुछ तो विचार कर  
मानवमात्र का तीर्थ  
मानवता के दो अखंड प्रहरी  
मेरी बम्बई यात्रा  
मूक सेविका : विजया बहन  
मृत्युञ्जय  
यह अगस्त का महीना  
यह मनमानी कब तक  
युद्ध और श्रमण  
युवकों के प्रति  
रवीन्द्रनाथ के शिक्षा सिद्धान्त और विश्वभारती  
'रोटी' शब्द की चर्चा  
लखनऊ अभिभाषण  
लेखक और विश्वशांति  
लिखाई का सस्तापन

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

मुनिश्री सुशीलकुमार शास्त्री  
डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल  
मुनिश्री महाप्रभविजय जी महाराज  
पं० सुखलाल जी  
श्री भरतसिंह उपाध्याय  
डॉ० इन्द्र  
श्री शरदकुमार साधक  
श्री मोहनलाल मेहता  
श्री एम० के० भारिल्ल  
श्री राकेश  
पं० कैलाशचन्द्र शास्त्री  
श्री चन्दनमल चांद  
श्री शिवनाथ  
पं० बेवरदास दोशी  
पं० श्री सुखलाल जी संघवी  
डॉ० एस० राधाकृष्णन्  
श्री अगरचन्द नाहटा

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
३	११	१९५२	३५-३७
१३	७-८	१९६२	९-१३
७	२	१९५५	२३-२४
४	६	१९५३	१-२
११	७-८	१९६०	१४-२०
४	१२	१९५३	११-१५
४३	१०-१२	१९९२	४०-४१
१	७	१९५०	१४-१८
७	१०	१९५६	७-९
३	७-८	१९५२	३१-३३
१	२	१९४९	९-११
२१	१	१९६९	१३-१४
६	१०	१९५५	३-७
१८	९	१९६७	१५-१९
३	१	१९५१	३-२८
६	१०	१९५५	३०-३२
९	३	१९५८	३-५

वर्मा में होली का त्यौहार

वहित और अहित

विचारों पर नियन्त्रण के उपाय

विजय

विद्यालय से माता-पिता का सम्बन्ध

विश्व कलेण्डर

विश्वकलेण्डर क्यों नहीं अपनाया जाय ?

विस्मृत परम्पराएँ

वैराग्य के पथ पर

विकास का मुख्य साधन (क्रमशः)

”

व्यावहारिक क्रियाएँ

शतावधानी रत्नचन्द्र पुस्तकालय

शब्दों की शवपूजा न हो

शाक विचार

शास्त्रोद्धार की आवश्यकता

शिशु की निद्रा

शैतान

श्रमण संघ के दस वर्ष

श्रमण : अतीत के झरोखे में

लेखक

सुश्री निर्मला प्रीतिप्रेम

श्री गणेशप्रसाद जैन

प्रो० लालजी राम शुक्ल

कु० सत्यनती जैन

श्रीमती सुशीला

श्री महेन्द्रकुमार जैन

प्रो० वेंकटाचलम्

मुनिश्री दुलहराज जी

श्री हजारीमल बाँठिया

पं० सुखलाल जी

”

कुमारी आरती पात्रा

डॉ० मोहनलाल मेहता

मुनिश्री नथमल जी

श्री अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार

आचार्य आत्मारामजी

श्रीमती कमला देवी

खलील जिब्रान

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
६	५	१९५५	३०-३२
२२	११	१९७१	२०-२३
१	१०	१९५०	३१-३५
२	२	१९५०	३५-३८
८	३-४	१९५७	२९-३२
६	४	१९५५	३३-३७
६	८	१९५५	१४-१८
१६	५	१९६५	१८
१	१२	१९५०	१७-२५
१	१०	१९५०	१३-१८
१	११	१९५०	११-१३
८	३-४	१९५७	२३-२८
२	१२	१९५१	३१-३६
१२	४	१९६१	१५-१९
२	१०	१९५१	३३-३६
१३	५	१९६२	४१
५	९	१९५४	३२-३४
३	४	१९५२	२३-३३
१३	९	१९६२	१७-१९



## लेख

श्री कृष्ण की जीवन झाँकी  
श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पंचकूला  
श्री पार्श्वनाथ विद्याश्रम  
श्री रंजनसूरदेव की कुछ मोटी भूलें  
श्री रत्नमुनि : जीवन परिचय  
श्री लालाभाई वीरचन्द देसाई 'जयभिक्षु'

संघर्ष और आलिंगन

संघर्ष करना होगा

संसार की चार उपमाएँ

संसार के धर्मों का उदय

संस्कृत कवियों के उपनाम

सच्चा जैन

सच्चा वैभव

सत् का स्वरूप : अनेकान्तवाद और व्यवहारवाद-  
की दृष्टि में

सदाचार ही जीवन है

सन्त श्री गणेशप्रसाद वर्णी

सफलता के तीन तत्व

श्रमण : अतीत के झरोखे में

## लेखक

श्री विजयमुनि शास्त्री

प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

श्री हरजसराय जैन

श्री जुगलकिशोर मुख्तार

श्री विजय मुनि

श्री कस्तूरमल बाँठिया

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

श्री निर्मल कुमार जैन

श्री प्रेमीजी

डॉ० इन्द्र

श्री जगन्नाथ पाठक

श्री यशोविजय उपाध्याय

श्री एस० कान्त

डॉ० राजेन्द्रकुमार सिंह

मुनिश्री रंगविजय जी

श्री कैलाशचन्द्र शास्त्री

डॉ० इन्द्रचन्द्र शास्त्री

४९१

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
१	३	१९५८	६-९
२	१०	१९५१	१५-२०
७	६-७	१९५६	६३-८०
१८	१२	१९६७	३०-३०
१५	७-८	१९६४	१९-२८
१९	९	१९६८	२८-३७
१७	३	१९६६	२५-३२
५	९	१९५४	१९-२३
७	५	१९५६	१३-१४
५	६	१९५४	२०-२५
११	३	१९६०	१३-१७
७	२	१९५५	२५-२६
६	८	१९५५	१९-३५
४१	७-९	१९९०	१७-२५
१	१२	१९५०	३५-३७
१२	१२	१९६१	१६-१८
१२	३	१९६१	२८-३०

सफेद धोती  
सबसे पहला पाठ  
समस्त जैन संघ को नम्र विज्ञप्ति  
सांपू सरोवर  
सामुद्रिक विज्ञान

” सुधार का मूलमंत्र  
सुहृदय श्री मुनिलाल जी  
सेवक  
सेवा का अर्थ  
सेवाग्राम कुटीर का संदेश  
हम किधर बह रहे हैं ?  
हम सौ वर्ष जी सकते हैं ?  
हमारा आज का जीवन  
हमारा क्रान्तिवारसा

” हमारी यात्रा के कुछ संस्मरण  
हमारे जागरण का शीर्षासन  
हृदय का माधुर्य-करुणा

श्रमण : अतीत के झरोखे में

### लेखक

प्रो० महेन्द्रकुमार न्यायाचार्य  
श्री कृष्णचन्द्राचार्य  
मुनिश्री न्याय विजयजी  
श्री जय भिक्षु  
श्री विजय राज

”  
श्री जुगलकिशोर मुख्तार  
श्री हरसजराय जैन  
प्रो० इन्द्रचन्द्र शास्त्री  
मुनिश्री विद्याविजय जी  
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद  
डॉ० इन्द्र  
श्री देवेन्द्रकुमार जैन शास्त्री  
श्री रतनसागर जैन  
पं० बेवरदास दोशी

”  
लाला हरजसराय जैन  
मुनि सुरेशचन्द्र  
मुनिश्री विनयचन्द्रजी

वर्ष	अंक	ई० सन्	पृष्ठ
२	१०	१९५१	२१-२४
१	१	१९४९	२८-३०
१७	८	१९६६	३४-३९
५	७	१९५४	३४-३९
६	५	१९५४	२७-२९
६	८	१९५५	३८-४०
१३	१२	१९६२	९-१६
१५	७-८	१९६४	६६-६८
१	४	१९५०	१७-२३
१	३	१९५०	३५-३८
१	४	१९५०	३६-३८
४	६	१९५२	५-१३
६	१२	१९५५	३१-३३
१	५	१९५०	२७-३०
५	७	१९५४	१-८
५	८	१९५४	६-१५
४	६	१९५३	२८-३३
३	६	१९५२	१७-२२
१६	११	१९६५	२७-३३



## साहित्य सत्कार

**निर्ग्रन्थ** (अंग्रेजी, गुजराती और हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाली वार्षिक शोध पत्रिका, सम्पादक - प्रा० एम० ए० ढांकी; डॉ० जीतेन्द्र बी० शाह; प्रवेशांक वर्ष १९९६; पृष्ठ ९+१०८+११०+६२; द्वितीयांक पृष्ठ १४+१००+१०६+५०; प्रकाशक- शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर, शाहीबाग, अहमदाबाद; आकार-डबल डिमाई; मूल्य - एक सौ रूपया प्रत्येक।

प्रस्तुत अंक अहमदाबाद में हाल के वर्षों में स्थापित एक नूतन शोधसंस्थान शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर की शोध पत्रिका है। जैनधर्म-दर्शन, साहित्य और भारतीय स्थापत्य कला के विश्वविख्यात मर्मज्ञ प्राध्यापक श्री मधुसूदन ढांकी तथा प्राकृत भाषा एवं साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान्, युवा मनीषी डॉ० जीतेन्द्र बी० शाह के सम्पादकत्व में प्रकाशित यह शोध पत्रिका अब तक प्रकाशित जैन पत्र-पत्रिकाओं में सर्वश्रेष्ठ है। तीन भाषाओं में प्रकाशित होने वाली यह दूसरी शोध पत्रिका है। डबल डिमाई आकार में मुद्रित इस शोध पत्रिका में जैन दर्शन, भाषा, साहित्य, कला, इतिहास और पुरातत्त्व आदि विषयों पर चुने हुए श्रेष्ठ लेखों का संकलन है। इस पत्रिका की यह विशेषता है कि इसमें जहाँ एक ओर जैनविद्या के मूर्धन्य विद्वानों के लेखों को स्थान दिया गया है वहीं दूसरी ओर युवा लेखकों के शोध लेखों को भी आवश्यक महत्त्व प्रदान किया गया है। इस पत्रिका की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक और मुद्रण त्रुटिरहित है। पत्रिका में लेखों से सम्बन्धित चित्रों को सर्वश्रेष्ठ आर्टपेपर पर मुद्रित किया गया है, जिससे इसका महत्त्व और भी ज्यादा बढ़ गया है। ऐसे सुन्दर प्रकाशन के लिए सम्पादक और प्रकाशक दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

**मानतुंगाचार्य और उनके स्तोत्र** : लेखक-प्राध्यापक श्री मधुसूदन ढांकी और जीतेन्द्र शाह : प्रकाशक - शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर, अहमदाबाद ३८०००४; प्रथम संस्करण १९९७ ई०, पृष्ठ १२+१३४; आकार-रायल आक्टो; मूल्य-सदुपयोग।

युगादीश्वर जिन ऋषभ के गुणस्तवस्वरूप भक्तामरस्तोत्र का जैन परम्परा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनों ही सम्प्रदायों में इसे प्रायः समान प्रतिष्ठा प्राप्त है। इस अति महिम्न स्तोत्र के कर्ता श्वेताम्बर हैं या दिगम्बर, उनका समय क्या है; इस स्तोत्र की श्लोक संख्या ४४ है या ४८; इन सभी प्रश्नों का उत्तर ढूँढने का प्रयास अब तक अनेक जैन और अजैन विद्वानों ने किया है, परन्तु वे कोई निष्पक्ष और सर्वांगीण निर्णय प्रस्तुत नहीं कर सके हैं। इस पुस्तक में प्राध्यापक श्री



मधुसूदन ढांकी ने इस स्तोत्र और उसके रचनाकार से सम्बन्धित सभी प्रश्नों का अकाट्य साक्ष्यों द्वारा सटीक उत्तर प्रस्तुत किया है। ग्रन्थ के प्रारम्भ में प्रो० जगदीश चन्द्र जैन द्वारा लिखित पूर्ववलोक, पं० दलसुख मालवणिया द्वारा लिखित पुरोवचन एवं लेखकद्वय द्वारा लिखित प्रास्ताविक अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वस्तुतः यह पुस्तक उच्च स्तर के शोधार्थियों के लिए मार्गदर्शक का कार्य करेगी। आज की भीषण मंहगाई के युग में भी इस अनमोल ग्रन्थ को अमूल्य ही वितरित करना प्रकाशक की उदारता का परिचायक है। सही अर्थों में यह ग्रन्थ अमूल्य ही है। ऐसे ग्रन्थरत्न के लेखन और प्रकाशन तथा उसके निःशुल्क वितरण के लिए लेखक, प्रकाशक और प्रकाशन हेतु आर्थिक सहयोग प्रदान करने वाले ट्रस्टीगण सभी अभिनन्दनीय हैं।

**हिन्दी के महावीर प्रबन्ध काव्यों का आलोचनात्मक अध्ययन-लेखिका-**  
डॉ० दिव्य गुणाश्री, प्रकाशक-विचक्षण स्मृति प्रकाशन, श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैनमंदिर,  
दादासाहेबना पगलां, नवरंगपुरा, अहमदाबाद- ३८०००९; प्रथम संस्करण मई १९९८  
ई०, आकार-डिमाई, पृष्ठ- १०+२७५; हार्डबोर्ड वाइडिंग, मूल्य-सदुपयोग।

जिस प्रकार पूर्वकाल में प्राकृत-संस्कृत और अपभ्रंश भाषाओं में अनेक रचनाकारों ने भगवान् महावीर के चरित्र का गुणगान किया है उसी प्रकार इस युग में राष्ट्रभाषा हिन्दी में भी विभिन्न रचनाकारों ने प्रबन्धकाव्यों के रूप में उनके जीवन चरित्र का वर्णन किया है जिसे साध्वीरत्न दिव्यगुणाश्री जी ने अपने शोध प्रबन्ध का आधार बनाया है।

शोध प्रबन्ध चार अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में ४ खंड हैं। इनमें पूर्व भूमिका, जैनधर्म की प्राचीनता, तीर्थंकरों की परम्परा में भगवान् महावीर और आधारभूत प्रबन्ध काव्यों का साहित्यिक परिचय दिया गया है। द्वितीय अध्याय में भगवान् का विस्तृत जीवन परिचय देते हुए उनके पारिवारिकजनों का वर्णन है। तृतीय अध्याय में प्रबन्धग्रन्थों के भावपक्ष का विवेचन है जिसके अन्तर्गत उनमें वर्णित जैनधर्म, राष्ट्रीय भावना, युगीन परिस्थितियों आदि का एक सौ पृष्ठों में विस्तृत विवेचन है। चतुर्थ अध्याय में विवेच्य प्रबन्ध ग्रन्थों के कलापक्ष पर ७० पृष्ठों में प्रकाश डाला गया है। जैन विद्या के विशिष्ट अभ्यासी डॉ० शेखरचन्द जैन के निर्देशन में तैयार किया गया यह शोध प्रबन्ध वस्तुतः साध्वी जी द्वारा विद्वत् समाज को दिया गया एक अनुपम भेंट है। पुस्तक की साज-सज्जा आकर्षक और मुद्रण त्रुटिरहित है। ग्रन्थ को निःशुल्क वितरित करना प्रकाशक की उदारता का परिचायक है।

**श्री लावण्य जीवनदर्शन : क्राव्यप्रणेता-आचार्य श्रीमद् विजयसुशील सूरि**  
प्रकाशक-श्री सुशील साहित्य प्रकाशन समिति, राइका बाग, जोधपुर, राजस्थान-  
३४२००१; प्रकाशन वर्ष- मई १९९७ ई०; पृष्ठ ८+१२०; आकार-रायल आठपेजी;  
मूल्य- २५ रूपया।



प्रस्तुत पुस्तक तपागच्छ के प्रसिद्ध आचार्य स्व० श्री विजयलावण्य सूरिश्वर जी महाराज का सरल हिन्दी भाषा में छन्दोबद्ध जीवन चरित्र है जो उनके प्रशिष्य आचार्य विजयसुशील सूरि द्वारा प्रणीत है। मंगलाचरण से प्रारम्भ इस ग्रन्थ में आचार्यश्री के जीवन से सम्बन्धित घटनायें बड़े ही सुन्दर रूप में वर्णित हैं। सौराष्ट्रदर्शन नामक खंड में उक्त प्रान्त के विभिन्न तीर्थों का और अनुपम साहित्यसाधना के अन्तर्गत आचार्यश्री की साहित्यिक कृतियों का सुन्दर विवेचन है। कृति के अन्त में रचनाकार की प्रशस्ति और संदर्भ ग्रन्थसूची भी दी गयी है। ग्रन्थ का मुद्रण अत्यन्त कलात्मक और त्रुटिरहित है।

**श्रीलावण्यसूरिमहाकाव्यम् :** प्रेणता- आचार्य श्रीमद् विजयसुशील सूरि जी म०; प्रकाशक-पूर्वोक्त, प्रकाशन वर्ष-मई १९९७; पृष्ठ १६+१५२; आकार-रायल आठपेजी; मूल्य-स्वाध्याय।

प्रस्तुत महाकाव्य आचार्यश्री लावण्यसूरि जी महाराज के जीवन पर आधारित एक उत्कृष्ट रचना है। संस्कृत भाषा में रचित इस महाकाव्य में रचनाकार ने शक्य सभी तत्त्वों समावेश किया है और इस प्रकार उन्होंने संस्कृत साहित्य को वर्तमान काल में अपनी लेखनी से समृद्ध किया है। इस महाकाव्य में मूलगाथा के साथ उसका संस्कृत और हिन्दी भाषा में अनुवाद भी दिया गया है, जिससे सामान्यजन भी इससे लाभान्वित हो सकेंगे। पुस्तक की साज-सज्जा आकर्षक और मुद्रण कलापूर्ण एवं निर्दोष है।

**महाराष्ट्र का जैन समाज :** लेखक- श्री महावीर सांगलीकर; प्रकाशक जैन फ्रेण्ड्स, २०१, मुम्बई-पुणे मार्ग, चिंचवड़ पूर्व, पुणे ४११०१९; प्रकाशन वर्ष-अक्टूबर १९९८ ई०; आकार-डिमाई, पृष्ठ- ३२; मूल्य-१५ रूपया।

प्रस्तुत लघु पुस्तिका में विद्वान् लेखक द्वारा गागर में सागर भरने का सफल प्रयास किया गया है। यह पुस्तिका ६ अध्यायों में विभक्त है। इन में प्रस्तावना, महाराष्ट्र के जैन समाज और उसके प्रमुख व्यक्ति, स्थानीय जैन संस्थाओं आदि का बहुत ही सुन्दर विवेचन है। अन्त में परिशिष्ट (एक) के अन्तर्गत महाराष्ट्र की जैन जातियों और परिशिष्ट (दो) में जैन संस्थाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची दी गयी है। यह पुस्तक वस्तुतः एक ऐतिहासिक दस्तावेज है अतः न केवल शोधार्थियों बल्कि जनसामान्य के भी लिये पठनीय और संग्रहणीय है।

**ज्ञानार्णव :** एक समीक्षात्मक अध्ययन - लेखिका - साध्वी डॉ० दर्शन लता; प्रकाशक - श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ, गुलाबपुरा (राजस्थान); प्रथम संस्करण १९९७ ई; पृष्ठ २०+२५६ आकार-रायल आठपेजी; मूल्य १५० रूपया।

प्रस्तुत पुस्तक साध्वी दर्शनलता जी के शोधप्रबन्ध का मुद्रित रूप है जिस पर



डॉ० आर० सी० द्विवेदी के निर्देशन में राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से उन्हें पी-एच० डी० की उपाधि प्राप्त हुई है। शोध प्रबन्ध ५ अध्यायों में विभक्त है। प्रथम अध्याय में भारतीय योग परम्परा का विस्तृत परिचय दिया गया है जिसके अन्तर्गत सिंधुकालीन सभ्यता में योग; तापस परंपरा, अवधूत परंपरा; तप का योग के रूप में विकास, पातंजल योग, राजयोग, हठयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, जैन तथा बौद्ध योग आदि की चर्चा है। द्वितीय अध्याय में ग्रन्थकार एवं ग्रन्थ का परिचय दिया गया है। तृतीय अध्याय में ग्रन्थ के स्वरूप व रचनाशैली पर प्रकाश डाला गया है। चतुर्थ अध्याय योगांगविश्लेषण के रूप में है। इसके अन्तर्गत आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान की पात्रता-अपात्रता, शुद्धोपयोग, बहिरात्मा-अंतरात्मा-परमात्मा, ध्यान के प्रतिकूल स्थान, योग साधना में ध्यान, उपनिषदों में ध्यान संकेत, ध्यान के भेद-प्रभेद आदि की १०० पृष्ठों में चर्चा की गयी है। पांचवां और अंतिम अध्याय उपसंहार स्वरूप है। इसके अन्तर्गत योग के क्षेत्र में आचार्य शुभचन्द्र की देन, रचनाकार पर पूर्ववर्ती ग्रन्थकारों का प्रभाव तथा उत्तरवर्ती लेखकों पर शुभचन्द्र के प्रभाव की चर्चा है और अन्त में निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है। शोध प्रबन्ध में दो परिशिष्ट भी हैं जिनमें से प्रथम में वर्तमान काल में प्रचलित विभिन्न ध्यान पद्धतियों- विपश्यना, प्रेक्षाध्यान, समीक्षण ध्यान, भावातीत ध्यान तथा रजनीश द्वारा निरूपित ध्यान पद्धतियों आदि की संक्षिप्त चर्चा है। अंतिम परिशिष्ट में संदर्भ ग्रन्थों की सूची दी गयी है जो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। प्रो० दयानन्द भार्गव द्वारा लिखित आमुख एवं डॉ० छगनलाल शास्त्री का पर्यवलोकन पुस्तक के महत्त्व को द्विगुणित कर देते हैं। एक श्वेताम्बर साध्वी द्वारा एक दिगम्बर आचार्य के ग्रन्थ को अपने शोध प्रबन्ध का आधार बनाना ही अत्यन्त आह्लादक है। ऐसे प्रामाणिक ग्रन्थ के लेखन व प्रकाशन के लिए लेखिका और प्रकाशक संस्था दोनों ही धन्यवाद के पात्र हैं।

**अध्यात्म उपनिषद् भाग १-२ :** रचनाकार-महोपाध्याय यशोविजय गणि; संस्कृत व गुजराती भाषा में टीकाकार व संपादक मुनि यशोविजय जी; संशोधक आचार्य जगच्चन्द्रसूरीश्वर जी एवं जयसुन्दरविजय जी गणि; प्रकाशक - श्री अन्धेरी गुजराती जैन संघ, करमचंद जैन पौषधशाला, १०६, एस० बी० रोड, इलॉब्रिज, अंधेरी (पश्चिम) मुम्बई-५६; प्रकाशन वर्ष - वि० सं० २०५४; प्रथम भाग - पृष्ठ २७+१५३; द्वितीय भाग २१+१५४ से ३६७; दोनों भागों का मूल्य १९० रूपया; आकार-रायल आठ पेजी।

श्वेताम्बर परम्परा के श्रेष्ठ रचनाकारों में तपागच्छीय महोपाध्याय यशोविजय जी का नाम अत्यन्त आदर के साथ लिया जाता है। उनके द्वारा रचित अनेक रचनाओं में अध्यात्मउपनिषद् भी एक है। इस कृति पर वर्तमान युग में तपागच्छ के ही विद्वान् मुनि श्री यशोविजय जी ने संस्कृत भाषा में अध्यात्म वैशारदी टीका और गुर्जर भाषा



में अध्यात्म प्रकाश व्याख्या की रचना की है जिनका संशोधन आचार्य श्री जगच्चन्द्र सूरीश्वर जी महाराज एवं श्री जयसुन्दरविजय जी गणि ने किया है। प्रस्तुत पुस्तक न केवल अध्यात्म प्रेमीजनों बल्कि शोधार्थियों के लिए भी अत्यन्त उपयोगी है। पुस्तक की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक तथा मुद्रण दोषरहित है। यह पुस्तक प्रत्येक पुस्तकालय के लिए संग्रहणीय है।

**निर्ग्रन्थ परम्परा में चैतन्य आराधना :** आचार्यश्री नानेश; प्रकाशक-श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, समताभवन, बीकानेर; प्रथम संस्करण १९९७ ई०; आकार-डिमाई; पृष्ठ ८+८७; मूल्य-१० रूपया।

बाह्याडम्बरो से दिग्भ्रान्त अशान्तचित्त मानव को अपना ध्यान चैतन्य की ओर लगाने से ही सच्ची शांति प्राप्त हो सकती है। मानव अपने चारों ओर स्वनिर्मित परिग्रहरूपी जाल में स्वयं फंस जाता है और प्रयास करने पर भी उससे छूट नहीं पाता। यदि मानव आज भी महावीर के उपदेशों पर चले, तो उसकी अनेक समस्यायें स्वतः हल हो जायेंगी। प्रस्तुत पुस्तक समताविभूति आचार्य नानेश के प्रवचनों का संग्रह है। इसमें उन्होंने अत्यन्त सरल किन्तु सारगर्भित भाषा में अपने विचार व्यक्त किये हैं जो न केवल जैन समाज बल्कि सभी मनुष्यों के लिए प्रेरणादायी है।

**प्रवचनपर्व :** प्रवचनकार - आचार्यश्री विद्यासागर जी; प्रकाशक - मुनिसंघ साहित्य प्रकाशन समिति, कटरा बाजार, सागर, मध्यप्रदेश; प्रथम संस्करण १९९३, पृष्ठ १४४, आकार-डिमाई, मूल्य - १० रूपया।

प्रस्तुत पुस्तक में सन्त शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज द्वारा पर्युषणपर्व पर दिये गये प्रवचनों का संकलन है। शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों को अत्यन्त सरल भाषा में जनसामान्य के समक्ष प्रस्तुत कर उसे बोधगम्य बना देना आचार्यश्री की विशेषता है। इस पुस्तक में उन्होंने पारम्परिक दृष्टान्तों की अपेक्षा मानवजीवन की दैनिक घटनाओं के उदाहरणों से अपने कथन को पुष्ट किया है, जिससे उनका हृदय पर सीधा प्रभाव पड़ता है। पुस्तक सभी के लिए पठनीय है। इसकी साज-सज्जा आकर्षक तथा मुद्रण त्रुटिरहित है।

**सागरना स्मरण तीर्थें (गुजराती),** लेखक - आचार्य मनोहरकीर्ति सागरसूरि तथा डॉ० कुमारपाल देसाई; संपा० - मुनिश्री अजयकीर्तिसागर एवं मुनिश्री विनय कीर्तिसागर; प्रकाशक - श्री अविचल ग्रन्थ प्रकाशन समिति, प्राप्ति स्थान - श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वर जी जैन समाधि मंदिर, स्टेशन रोड, बीजापुर-३८२ ८७०; पृष्ठ १२+३१०.

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक गच्छों में तपागच्छ का आज सर्वोपरि स्थान है। इस गच्छ



की विभिन्न शाखाओं में सागर संविग्न शाखा भी एक है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण एवं बीसवीं शताब्दी के प्रथम चरण में हुए अध्यात्मयोगी, प्रखर चिन्तक, शताधिक ग्रन्थों के रचयिता आचार्य बुद्धिसागर सूरि तपागच्छ की इसी शाखा के थे। आचार्य बुद्धिसागर सूरि के पश्चात् उनके पट्टधर कीर्तिसागर सूरि हुए। सागरसंविग्न शाखा के वर्तमान गच्छनायक श्री सुबोधसागर सूरि इन्हीं के पट्टधर हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन आचार्य कीर्तिसागर सूरि की जन्म शताब्दी और वर्तमान गच्छनायक श्री सुबोधसागर जी महाराज की आचार्यपद रजतजयन्ती महोत्सव (सं० २०२३-२०४७) के अवसर पर किया गया है। सर्वश्रेष्ठ आर्टपेपर पर मुद्रित सम्पूर्ण ग्रन्थ में बुद्धिसागर सूरि, आचार्य कीर्तिसागर सूरि और आचार्य सुबोधसागर सूरि के जीवन के विविध पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। पुस्तक में सैकड़ों रंगीन एवं सादे चित्र दिये गये हैं। अन्त में श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि जैन समाधि मंदिर का सचित्र विवरण दिया गया है। अत्यधिक लागत से निर्मित यह ग्रन्थ प्रत्येक श्रद्धालु उपासकों के लिये संग्रहणीय है।

**रामायणनो रसास्वाद :** प्रवचनकार-पूज्य आचार्यश्री रामचन्द्र सूरि जी म०; संपादक-आचार्यश्री विजयकीर्तियशसूरीश्वर जी महाराज; प्रकाशक- सन्मार्ग प्रकाशन, श्वेताम्बर मूर्तिपूजक तपागच्छ जैन आराधना भवन, पाछीयानी पोल, रिलीफ रोड, अहमदाबाद - ३८० ००१, द्वितीय संस्करण १९९५ ई०, पृष्ठ ४६०; आकार - डिमाई; मूल्य ७५ रूपया।

हिन्दू परम्परा की भांति जैन परम्परा में भी प्राचीन काल से ही राम की कथा अत्यन्त लोकप्रिय रही है और इसका प्रमाण है प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, गुजराती, राजस्थानी आदि विभिन्न भाषाओं में विभिन्न जैन रचनाकारों द्वारा राम के चरित्र का वर्णन। प्रस्तुत पुस्तक तपागच्छीय संघनायक, पूज्य आचार्य विजयरामचन्द्र सूरि द्वारा रामायण पर दिये गये प्रवचन का द्वितीय संस्करण है। इसमें १० अध्यायों में दशरथ, उनकी रानियों, राम के राज्याभिषेक की तैयारी, राम को वन भेजने का निश्चय, भरत का राज्याभिषेक, सीताअपहरण, महासती अंजनासुन्दरी, लंकाविजय, अयोध्या में रामराज्य, सीता पर आक्षेप और अन्त में सीता का दिव्य और राम के निर्वाण का वर्णन किया गया है।

सम्पूर्ण पुस्तक में रामायण के प्रमुख पात्रों - दशरथ, कौशल्या, कैकेयी, राम, लक्ष्मण, सीता, भरत, लवण, अंकुश, रावण, विभीषण, मंदोदरी, पवनजय, महासती अंजनासुन्दरी, हनुमान, जटायु, नारद आदि के जीवन-सम्बन्धी विविध घटनाओं और आदर्शों को दर्शाते हुए उनसे मानव जीवन को ऊर्ध्वगामी बनाने की प्रेरणा दी गयी है। गुजराती भाषा में होने के कारण हिन्दी भाषी इसके स्वाध्याय के लाभ से वंचित रहेंगे।



पुस्तक की साज-सज्जा सुन्दर और मुद्रण निर्दोष है। पक्के बाइंडिंग वाली इस पुस्तक का मूल्य लागत मात्र रखा गया है जो प्रकाशक की उदारता का परिचायक है।

**अध्यात्म की अनूठी पत्रिका स्वानुभूतिप्रकाश निःशुल्क प्राप्त करें**

श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट, भावनगर द्वारा स्वानुभूतिप्रकाश नामक एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है। यह पत्रिका जिन मंदिरों, शोध संस्थाओं, पुस्तकालयों, विद्वानों, प्रवचनकारों एवं तत्त्वजिज्ञासुओं को निःशुल्क प्रतिमाह भेजी जाती है। जो भी संस्थाएँ या स्वाध्याय प्रेमी उक्त योजना का लाभ लेना चाहते हों वे अपना पूरा पता पिनकोड के साथ साफ-साफ अक्षरों में लिख कर निम्नलिखित पते पर भेजें।

संपादक - स्वानुभूतिप्रकाश  
श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट,  
५८०, जूनी माणेक बाड़ी,  
भावनगर - ३६४००१  
(गुजरात राज्य)

**डाक टिकट भेजकर सत्-साहित्य निःशुल्क मंगा लें**

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के प्रवचनों की शृंखला में आचार्य कुन्दकुन्द कृत ग्रन्थाधिराज समयसार (गाथा २३७ से ३०७) पर हुए प्रवचनों का संकलन "प्रवचन रत्नाकार भाग-८" (पृष्ठ ४४६ कीमत २०/- रु.) तथा "नियमसार" (गाथा ३, ८, ९, १०, १४, १५) पर हुए प्रवचन "कारणशुद्धपर्याय" (पृष्ठ १२४ कीमत ६/-रु०) मगनमल सौभागमल पाटनी फेमिली चेरिटेबल ट्रस्ट की ओर से मुनिराजों, ब्रह्मचारियों, मंदिरों, संस्थाओं, मुमुक्षुओं को स्वाध्यायार्थ निःशुल्क भेंट स्वरूप भेजी जा रही है।

इच्छुक महानुभाव डाक खर्च के ४/- (चार रूपयें) के साफ-सुथरे (फ्रेश) टिकट भेजकर निःशुल्क मंगा लें। टिकट भेजने की अंतिम तिथि ३१ जनवरी ९९ है।

- निःशुल्क साहित्य वितरण विभाग

श्री टोडरमल स्मारक भवन,

ए-४ बापूनगर, जयपुर ३०२ ०१५ (राज.)



## साभार प्राप्त

१. **जीवन निर्माण** - प्रवचनकार - पू० आचार्य श्री राजयशसूरि जी म० सा०, संपा० मुनि विश्रुतयशविजय जी म० सा०; प्रकाशक - लब्धि विक्रम संस्कृति केन्द्र, टी/७ए शांतिनगर, अहमदाबाद ३८० ०१३, पृष्ठ १६५, द्वितीय संस्करण १९९८ ई०, साइज डिमाई।

२. **राजचिंतनिका** - चिन्तनकार - पू० आचार्य राजयशसूरि जी म० सा०, प्रकाशक - श्री आलंदूर जैन संघ, चेन्नई, प्रथम संस्करण १९९८ ई०, पृष्ठ ४८, पाकेट साइज।

3. **An out Line of Jainism**- Author - Acharya Rajayash Surishwar Ji Maharaj. Publisher - Shri Labdhi Vikram Sanskruti Kendra, T/7 A, Shanti nagar Society, Ahmedabad - 380 013 Pocket size.

४. **श्री तत्त्वसार विधान** - श्री राजमल पवैया, संपा० श्री नाथूलाल जी शास्त्री; प्रकाशक - श्री भरत पवैया, संयोजन - तारादेवी पवैया ग्रन्थमाला, ४४ इब्राहिमपुरा- भोपाल - ४६२ ००१; पृष्ठ ४८; प्रथम संस्करण जनवरी १९९८ ई०, मूल्य - ६ रुपये।

५. **श्री तत्त्वानुशासन विधान** - श्री राजमल पवैया; संपा० डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री; प्रकाशक - पूर्वोक्त, पृष्ठ २००; प्रथम संस्करण जुलाई १९९७ ई०; मूल्य २५ रुपये।

६. **श्री तत्त्वज्ञान तरंगिणी विधान** - श्री राजमल पवैया; संपा० डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री; प्रकाशक-पूर्वोक्त; पृष्ठ ३८४; प्रथम संस्करण - अगस्त १९९७ ई०; मूल्य ४० रुपये।

७. **जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर (आचारांगसूत्र) पुष्प ३-४-प्रश्नोत्तर लेखक** - श्री तिलोक मुनि जी महाराज; प्रकाशक - श्री जैनागम नवनीत प्रकाशन समिति, C/0 श्री ललितचन्द्र मणिलाल सेठ, शंखेश्वरनगर, रतनपर, पोस्ट-जोरावर नगर, जिला - सुरेन्द्रनगर - ३६३ ०२०, गुजरात; प्रथम संस्करण - अप्रैल १९८९ ई०; पृष्ठ ३८८; मूल्य २० रुपये।

८. **सम्यग्ज्ञान-दीपिका** - रचयिता - शुल्लक धर्मदास जी; हिन्दी अनुवाद-पं० फूलचन्द जी सिद्धान्तशास्त्री; प्रकाशक - श्रीवीतराग सत् साहित्य प्रसारक ट्रस्ट, भावनगर-३६४ ००१; वीरनिर्वाण सम्वत् २५२३/१९९६ ई०; पृष्ठ ११९; आकार-डिमाई; मूल्य २० रूपया।



९. विधि विज्ञान - प्रवचनकार - श्री कानजी स्वामी; संपा० श्री शशीकान्त म० सेठ; प्रकाशक - पूर्वोक्त; भावनगर वीरनिर्वाण सम्वत् २५१५/ई० सन् १९८९; पृष्ठ ७६; आकार-डिमाई; मूल्य ३ रूपया।

१०. अनुभव प्रकाश - लेखक- स्व० दीपचन्द जी कासलीवाल; प्रकाशक- पूर्वोक्त, भावनगर, वीरनिर्वाणसम्वत् २५२०/ ई० सन् १९९३; पृष्ठ ८४; आकार- डिमाई; मूल्य १० रूपया।

११. जिण सासणं सत्त्वं - प्रवचनकार - पूज्य श्री कानजी स्वामी; संपा०- श्री शशिकान्त म० सेठ; प्रकाशक - पूर्वोक्त, भावनगर, वीरनिर्वाण सम्वत् २५१६ / ई० स० १९८९; आकार - डिमाई; पृष्ठ १५२; मूल्य ८ रूपया।

१२. तत्त्वानुशीलन - लेखक- श्री शशीकान्त म० सेठ; प्रकाशक- पूर्वोक्त; भावनगर वीरनिर्वाण सम्वत् २५२४/ ई० स० १९९८ ई०; आकार- डिमाई; पृष्ठ १६१; मूल्य २० रूपये।

१३. दृव्यदृष्टि-प्रकाश (श्री निहालचंद सोगानी के पत्रों का संकलन एवं श्री कानजी स्वामी के प्रवचनों का संग्रह); प्रका०- पूर्वोक्त; प्रकाशन वर्ष- वीर निर्वाण सम्वत् २५१९/ ई० स० १९९२; आकार- डिमाई; पृष्ठ १९६; मूल्य १५ रूपया।

१४. निष्ठा-दर्शन की पगडण्डी पर - लेखक - श्री शशीकान्त म० सेठ; अनुवादक - श्री रमेशचन्द्र सोगानी; प्रकाशक - पूर्वोक्त, प्रकाशन वर्ष - वि० सं० २०५३ ; पृष्ठ ६०; मूल्य-१० रूपया।

१५. धन्य अवतार (श्री चम्पाबहन के सम्बन्ध में श्री कानजी स्वामी के उद्गार); प्रकाशक-पूर्वोक्त, पृष्ठ ३८ ।

१६. मुमुक्षुता का आरोहणक्रम - विवेचक - श्री शशीकान्त म० सेठ; प्रका० - पूर्वोक्त, प्रकाशन वर्ष १९८९ ई०, पृष्ठ १३६; मूल्य - १५ रूपये।

## जैन जगत

### इन्दौर में आचार्यसम्राट श्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज के सान्निध्य में विविध आयोजन

आचार्यसम्राट श्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज के चातुर्मासार्थ विराजने से यहां पर धर्मकी अभूतपूर्व प्रभावना हुई। उनके दैनिक प्रवचन में देश के विभिन्न भागों से श्रद्धालुगण पहुंचे। दि० ६ अगस्त को आचार्यश्री ने श्री प्रेमसुख जी महाराज व ७ अगस्त को मरुधरकेशरी श्री मिश्रीमलजी महाराज के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विस्तृत



प्रकाश डाला। ८ अगस्त को उन्होंने रक्षाबंधन के पावनपर्व के अवसर पर उसके महत्त्व की विवेचना की। दिनांक ९ अगस्त को मासखमण करने वाले ११ तपस्वियों का सम्मान किया गया। १४ अगस्त को जन्माष्टमी के शुभपर्व पर आचार्य श्री ने कर्मयोगी श्रीकृष्ण के जीवन और व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। १५ अगस्त को स्वाधीनता दिवस के अवसर पर उन्होंने राष्ट्र के नाम संदेश दिया। १७ अगस्त को उनके द्वारा प्रतिभाशाली बालक-बालिकाओं का सम्मान किया गया।

१९ अगस्त से २६ अगस्त तक पर्युषण पर्व के अवसर पर प्रतिदिन अपने आध्यात्मिक प्रवचनमाला के अन्तर्गत आचार्यश्री ने दान, दीक्षा, नारी जीवन की महत्ता, संवत्सरीमहापर्व आदि महत्त्वपूर्ण विषयों की सविस्तार चर्चा की।

दिनांक ३१ अगस्त को सामूहिक क्षमापना का आयोजन किया गया जिसमें तेरापंथी समुदाय की महासती श्री कनकरेखा जी, कई मंदिरमार्गी संत तथा गुजराती समाज की महासती श्री भारती बाई व गौतम मुनि आदि के प्रवचन हुए।

दिनांक ३ सितम्बर को श्रमण संघ के प्रथम पट्टधर आचार्यसम्राट् आत्माराम जी महाराज की जयन्ती सोल्लास मनायी गयी। ५ सितम्बर को एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी जिसमें महासती स्व० श्री सोहनकुंवर जी और स्व० रूपेन्द्र मुनि जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इसी दिन आचार्य श्रीजयमल की भी जयन्ती मनायी गयी।

दिनांक २८ सितम्बर से ४ अक्टूबर तक उपाध्याय पुष्कर मुनि जी महाराज की जयन्ती मनायी गयी। जयन्ती कार्यक्रम के अंतिम दिन ४ अक्टूबर को मुख्य आयोजन रहा जिसमें राजस्थान सरकार के शिक्षामंत्री श्री गुलाबचन्द्र कटारिया ने प्रमुख अतिथि के रूप में भाग लिया। इस अवसर पर श्वे० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के अध्यक्ष श्री हस्तीमल मुणोत, महामंत्री श्री माणकचंद जी कौठारी, समाजरत्न श्री हीरालाल जैन तथा समाज के पदाधिकारी और बड़ी संख्या में देश के विभिन्न भागों से पधारे भक्तजन उपस्थित थे। सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री नेमनाथ जैन ने आगन्तुक अतिथियों का स्वागत किया और आचार्यश्री के सानिध्य में पौष्टिक आहार (गर्भवती गरीब महिलाओं हेतु) वितरण, रोगमुक्ति, व्यसन मुक्ति एवं ज्ञान-ध्यान की अपनी योजनाओं का शुभारम्भ किया जिसकी सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आचार्यश्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज का जन्मदिवस होने से धनतेरस के दिन विभिन्न वक्ताओं ने आचार्यश्री के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। दीपावली के पावन पर्व पर अपने उद्बोधन में आचार्यश्री ने लौकिक दीपावली के साथ-साथ आध्यात्मिक दीपावली मनाने का आग्रह किया। इन्दौरवासियों के लिए यह अत्यन्त सौभाग्य की



बात है कि पूज्य आचार्यसम्राट की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से श्री नेमनाथ जी द्वारा पार्श्वनाथ विद्यापीठ की एक शाखा का इन्दौर में दिनांक १५ नवम्बर से शुभारम्भ हुआ है।

### राजकोट में आगमसूत्र का विमोचन सम्पन्न

रायलपार्क, राजकोट ३० अगस्त:

स्थानकवासी जैन उपाश्रय में गुजरात के मुख्यमंत्री श्री केशूभाई पटेल के सानिध्य में जैनागम नवनीत प्रश्नोत्तर-आचारांगसूत्र पुष्प ३-४ की विमोचन विधि एवं गुजराती भाषा में विवेचन युक्त आगम की समर्पण विधि का कार्यक्रम ३० अगस्त को सम्पन्न हुआ। पुस्तक का विमोचन करते हुए मुख्यमंत्री जी ने मुनिराज श्री तिलोकमुनि जी का अभिवादन करते हुए आचार की आवश्यकता से अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया जो धार्मिक विचारों के साथ करीब ४० मिनट तक चला।

### “जैन परम्परा में तीर्थकरों की अवधारणा” विषयक संगोष्ठी सम्पन्न

उदयपुर १९-२० सितम्बर : समताविभूति आचार्य श्री नानेश एवं युवाचार्य श्री रामेश के सानिध्य तथा आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर के सहयोग से श्री नवचेतना समता युवा मंच द्वारा विगत १९-२० सितम्बर को जैन परम्परा में तीर्थकरों की अवधारणा विषय पर द्विदिवसीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी के संयोजक और आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान के प्रभारी डॉ० सुरेश सिसोदिया ने विषय प्रवर्तन किया। संगोष्ठी के प्रथम सत्र में पार्श्वनाथ विद्यापीठ के प्रवक्ता, युवा विद्वान् डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय ने तीर्थकर अरिष्टनेमि पर अपना महत्वपूर्ण शोधनिबन्ध प्रस्तुत किया। इस सत्र में डॉ० उदयचन्द जैन एवं डॉ० मंजू सिरिया ने भी अपने शोधपत्रों का वाचन किया। संगोष्ठी के द्वितीय सत्र में डॉ० धर्मचन्द जैन; डॉ० जगताराम भट्टाचार्य और डॉ० प्रेमसुमन जैन ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। २० सितम्बर को संगोष्ठी के तृतीय सत्र में डॉ० सुरेश शोधपत्र प्रस्तुत किये। २० सितम्बर को संगोष्ठी के अंतिम सत्र में उसी दिन डॉ० हकुमचन्द जैन, डॉ० जीतेन्द्र बी० शाह, श्री कमल भूरा और डॉ० देव कोठारी के शोधपत्र प्रस्तुत हुए। संगोष्ठी के समापन समारोह में अखिल भारतीय साधुमार्गी जैनसंघ, बीकानेर के पदाधिकारी गण भी बड़ी संख्या में पधारें। समारोह के मुख्यअतिथि श्री सागरमल जी चपलोत ने सभी विद्वानों को श्री नवचेतना समता युवा मंच की ओर से स्मृतिचिन्ह भेंट किया। संगोष्ठी के सभी सत्रों का सकुशल संयोजन एवं संचालन डॉ० सुरेश सिसोदिया ने किया।



### महाराष्ट्रप्रान्तीय जैन श्रावक संघों का शिविर सम्पन्न

मुम्बई ३० सितम्बर : श्रमणसंघीय महामंत्री श्री सौभाग्यमुनि 'कुमुद' के सानिध्य और जैन कान्फ्रेंस के उपाध्यक्ष श्री शांतिलाल जी छाजेड़ की अध्यक्षता में महाराष्ट्र प्रान्त के विभिन्न जैन श्रावक संघों के उच्च पदाधिकारियों का एक दिवसीय मार्गदर्शन शिविर पिछले दिनों नेमाडी बाड़ी, ठाकुरद्वार में सम्पन्न हुई। इस शिविर में बड़ी संख्या प्रत्येक जिले के जैन संघ के अध्यक्ष व मंत्री सम्मिलित हुए।

### देश की अखण्डता सन्तों पर निर्भर है-

आचार्य विमलसागर जी

टीकमगढ़: सुप्रसिद्ध विचारक, जैनाचार्य श्री विमलसागर जी ने पिछले दिनों पार्श्वसागर त्यागी व्रती भवन के प्रांगण में अपनी प्रवचनमाला के अन्तर्गत भारी संख्या में एकत्रित जनसमुदाय के बीच कहा कि देश की अखण्डता प्राचीन काल से ही सन्तों के ऊपर निर्भर रही है और आज भी उन्हीं पर है। उन्होंने कहा कि सन्तों द्वारा समय-समय व्यक्त पर किये गये सद्विचार ही हमारे जीवन में आदर्श बनकर अन्धकार से निकाल कर प्रकाश की ओर ले जाते हैं। देश की वर्तमान राजनीति की चर्चा करते हुए उन्होंने लोगों के नैतिक मूल्यहास पर अत्यन्त दुःख प्रकट किया और कहा कि विश्वशांति के लिए राजनीति में धर्म का प्रवेश और सन्तों का मार्गदर्शन राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिए अनिवार्य है।

### श्री ऋषिमंडल पूजाविधान सम्पन्न

कानपुर ३० सितम्बर : महानगर कानपुर में चातुर्मास कर रहे परमपूज्य उपाध्याय श्री विद्यासागर जी महाराज के सानिध्य में दि० २१ सितम्बर से २९ सितम्बर तक अष्टदिवसीय श्री ऋषिमंडल पूजाविधान सानन्द सम्पन्न हुआ।

### मुनिश्री सुमनकुमार जी महाराज की ४९ वीं दीक्षा जयन्ती सम्पन्न

चेन्नई ४ अक्टूबर : श्रमणसंघीय सलाहकार मुनिश्री सुमनकुमार जी की दीक्षा की ४९ वीं जयन्ती यहां सोल्लास मनायी गयी। इस अवसर पर श्री रिखबचन्द जी लोढ़ा, श्री किशनलाल जी वैताला, श्री भँवरलाल जी सांखला आदि विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों ने मुनिश्री के जीवन पर प्रकाश डाला और उनके दीर्घायु होने की कामना की। इस अवसर पर जरूरतमन्द लोगों को भोजन-वस्त्र आदि प्रदान किये गये। एक प्रस्ताव पास कर यह भी निर्णय लिया गया कि सम्पूर्ण तमिलनाडु में स्थित जैन स्थानकों की एक सूची का प्रकाशन और सम्पूर्ण राज्य में साधु-साध्वियों के विचरण की व्यवस्था की जाये।



## भगवान् ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन सम्पन्न

४-६ अक्टूबर : जम्बूद्वीप हस्तिनापुर में गणिनीप्रमुख आर्यिकारल श्री ज्ञानमती माता जी के सानिध्य में भगवान् ऋषभदेव राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन सम्पन्न हुआ जिसमें २० कुलपति/प्रतिकुलपति तथा देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के जैन विद्या विभागों, जैनपीठ तथा जैनधर्म-दर्शन के १०८ विद्वान् सम्मिलित हुए। तीन दिनों के ६ सत्रों में तिब्बती उच्च शिक्षा केन्द्र, वाराणसी के प्रो० एस० रिम्पोछे, जामिया हमदर्द विश्वविद्यालय, दिल्ली के कुलपति प्रो० अलादीन अहमद; महेशयोगी विश्वविद्यालय, जबलपुर के कुलपति प्रो० आद्याप्रसाद मिश्र, गुलवर्गा विश्वविद्यालय, गुलवर्गा के कुलपति प्रो० मुनियम्मा, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूर के कुलपति प्रो० एस० एन० हेगड़े, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र के कुलपति प्रो० एम० एस० रंगा आदि २० कुलपतियों ने भगवान् ऋषभदेव की शिक्षाओं, वैदिक ग्रन्थों में भगवान् ऋषभदेव के उल्लेखों, जैनधर्म का भारतीय संस्कृति पर प्रभाव, पर्यावरण-संरक्षण के सम्बन्ध में जैनधर्म की भूमिका और समाज व्यवस्था-राजनैतिक अवस्था आदि पर अपने विचार व्यक्त किये। इस पुण्य अवसर पर समागत विद्वानों द्वारा जम्बूद्वीप घोषणापत्र स्वीकार किया गया, जिसके अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से जैन अध्ययन केन्द्रों की स्थापना एवं तद्विषयक कार्यक्रमों को गति प्रदान करने का अनुरोध किया गया। इस सम्मेलन में विभिन्न प्रशासनिक प्रतियोगी परीक्षाओं में प्राकृत भाषा को भी स्थान देने की केन्द्र व राज्य सरकारों से मांग की गयी और विभिन्न विश्वविद्यालयों में वर्ष में एक दिन ऋषभदेव समारोह आयोजित करने तथा वर्तमान में जैनविद्या में कार्यरत अध्ययन केन्द्रों व शोधपीठों में प्राध्यापकों के समुचित पद स्वीकृत करने का अनुरोध किया गया।

इसी अवसर पर शरदपूर्णिमा के दिन आर्यिकारल श्री ज्ञानमती माता जी की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से ऋषभदेव राष्ट्रीय विद्वत् महासंघ की स्थापना भी की गयी। जैन विद्या के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान् प्रो० प्रेमसुमन जैन इसके प्रथम अध्यक्ष मनोनीत किये गये और डॉ० अनुपम जैन, डॉ० शेखरचन्द जैन को क्रमशः महामंत्री और कार्याध्यक्ष पद का कार्यभार दिया गया। इस संघ के परामर्श मंडल में प्रो० भागुचन्द जैन तथा ब्रह्मचारी रवीन्द्रकुमार को स्थान दिया गया।

आर्यिकारल श्री ज्ञानमती माता जी के जन्मदिन के अवसर पर दि० त्रिलोक शोध संस्थान के उदार सहयोग से गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ की भी स्थापना की गयी। विक्रमविश्वविद्यालय उज्जैन के पूर्व कुलपति प्रो० आर० आर० नादगांवकर इस



शोधपीठ के निदेशक नियुक्त किये गये। जैन विद्या के क्षेत्र में शोध करने के इच्छुक निम्नलिखित पते पर आवेदन करें।

गणिनी ज्ञानमती शोधपीठ

C/o दि० जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर - २५०४०४ (मेरठ),

उत्तर प्रदेश

### पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिसर का इन्दौर में शुभारम्भ

श्रीवर्धमान सेवा केन्द्र, इन्दौर के तत्त्वावधान में दिनांक १५ नवम्बर १९९८ को आचार्यसम्राट श्री देवेन्द्रमुनि जी महाराज की पावन निश्रा में आयोजित एक भव्य कार्यक्रम में पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी के इन्दौर परिसर का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर बोलते हुए आचार्यश्री ने कहा कि आध्यात्मिक शिक्षण द्वारा आत्मा का अंतर्वृत्तियों को शिक्षित किया जा सकता है। यह शिक्षा सदैव कल्याणकारी होता है क्योंकि यह महत्वाकांक्षा नहीं अपितु नम्रता लाता है; विनय और विवेक को जागृत करता है। आचार्यश्री ने आगे कहा कि ज्ञान ज्योति है और अज्ञान अन्धकार है। ज्ञान आत्मा का निजगुण है और उसे प्रकट करने के लिये ही पार्श्वनाथ विद्यापीठ की स्थापना हो रही है। पूज्यश्री शालिभद्रजी महाराज के मंगलाचरण से प्रारम्भ हुए समारोह में महासती श्रीकनकरेखा जी, महासती श्री शांतिकुंवर जी, महासती श्री ललितप्रभाजी, श्री गौतममुनि जी, श्री जगतचन्द्र विजय जी महाराज और श्री नरेशमुनि जी महाराज ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

समारोह के मुख्य अतिथि श्री दीपचन्द गाडीं एवं अध्यक्ष श्री इन्द्रभूति बरार थे। पद्मश्री श्री बाबूलाल पाटोदी, डॉ० प्रकाश बांगानी, श्री हीरालाल पारिख, श्री जोधराज लोढ़ा, श्री सुजानमल बोरा, श्री लक्ष्मीचंद मंडलिक, श्री शांतिलाल धाकड़, डॉ० एन० पी० जैन (पूर्व राजदूत) इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। श्री वर्धमान सेवा केन्द्र के अध्यक्ष श्री नेमनाथ जैन ने अतिथियों का स्वागत किया और बताया कि पार्श्वनाथ विद्यापीठ के इंदौर परिसर की पूरी योजना एक करोड़ रुपये की है तथा इसके लिए भवन निर्माण हेतु पृथक से उपयुक्त जमीन की तलाश की जा रही है। पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी में पिछले साठ वर्षों से संचालित है। इंदौर के परिसर के निदेशक होंगे डॉ० सागरमल जैन, जिन्होंने बीस वर्षों के अथक प्रयासों से विद्यापीठ को विश्वविख्यात बनाया। उनके मार्गदर्शन में जैन धर्म पर अब तक चालीस विद्यार्थी पी-एच० डी० प्राप्त कर चुके हैं। इंदौर में परिसर खुलने से यहां के विद्वानों



और जिज्ञासु विद्यार्थियों को भी आध्यात्मिक विषयों के अध्ययन और शोधकार्य की प्रेरणा मिलेगी ताकि वे जैन विद्या के विविध आयामों को उद्घाटित कर सकें।

आपने बताया कि इंदौर परिसर में फिलहाल आठ हजार दुर्लभ धर्मग्रंथों का पुस्तकालय है। इसमें शीघ्र ही तीन हजार पुस्तकें और आने वाली हैं। पत्रकार वार्ता में उपस्थित श्री शांतिलाल धाकड़, श्री जयंतीभाई संघवी एवं श्री एन० के० जैन ने बताया कि पी-एच० डी० और डी० लिट्० के लिए शोध कार्य के साथ इस विद्यापीठ में स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर अन्य विषयों के पाठ्यक्रम भी चलाये जाएंगे। ये हैं- जैन विद्या (धर्म, दर्शन, समाज एवं संस्कृति), प्राकृत भाषा एवं जैन साहित्य, तनाव प्रबंधन, 'नैदानिकी मनोविज्ञान, ध्यान एवं योग तथा अहिंसा, शांति शोध एवं मूल्य शिक्षा' इसके अतिरिक्त, विद्यापीठ जैन विद्या मनीषी और जैन विद्या वाचस्पति जैसी उपाधियों हेतु कक्षाएं भी संचालित करेगा। देश के लब्धप्रतिष्ठित जैन विद्वानों ने विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में आकर शोध-अध्ययन-संपादन को गतिशील बनाने के लिए अपनी स्वीकृति प्रदान की है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध समाजसेवी श्री शांतिलाल धाकड़ का श्री श्वेताम्बर जैन स्थानकवासी समाज की ओर से अभिनंदन किया गया। अभिनंदन का वाचन श्री जिनेश्वर जैन ने किया।

अभिनंदनपत्र श्री गार्डी, श्री नेमनाथ जैन, श्री पाटोदी और डॉ० प्रकाश बांगानी ने भेंट किया। श्री धाकड़ ने कहा कि मैं समाज में समन्वय, संगठन और विकास के लिए कार्य करता रहूंगा उन्होंने समाज के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर जैनियम इन ग्लोबल पर्सपेक्टिव, जैन कर्मोलॉजी और अपरिग्रह 'द ह्यूमन सोल्यूशन' पुस्तकों का विमोचन श्री गार्डी, डॉ० बांगानी और श्री पाटोदी ने किया। इस अवसर पर आचार्यश्री देवेन्द्र मुनिजी की पुस्तक श्रावकव्रत, आराधना एवं श्रावक के चौदह नियम पुस्तक का भी विमोचन किया गया। पार्श्वनाथ विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित नवीन पुस्तकों का सेट श्री इन्द्रभूति बरार द्वारा आचार्य देवेन्द्र मुनि के चरणों में अर्पित किया गया। पार्श्वनाथ विद्यापीठ, इन्दौर परिसर के निदेशक डॉ० सागरमल जैन ने विद्यापीठ की कार्ययोजना व उद्देश्य की विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। पार्श्वनाथ विद्यापीठ के प्रशासनिक अधिकारी, प्रसिद्ध विद्वान् डॉ० श्रीप्रकाश पाण्डेय भी इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मुख्य अतिथि श्री दीपचंद गार्डी ने बोलते हुए कहा कि हमें ज्ञान एवं ज्ञानियों की पूजा करनी चाहिए। उनका सम्मान करना चाहिए, ज्ञानियों के माध्यम से ही हमें ऐसे विद्यापीठ संचालित करने में सहयोग मिलता है। आज जैन धर्म का विशद अध्ययन आवश्यक है, इन्दौर में इसका शुभारम्भ एक सुखद संयोग है। इसके माध्यम



से समाज के सभी वर्ग, संत-सती एवं धर्म में रुचि रखने वालों की जिज्ञासा शांत होगी, वहीं इस कार्य द्वारा देश की सेवा भी होगी। पद्मश्री श्री पाटोदी ने भी इस अवसर अपनी शुभकामनाएं व्यक्त की। समारोह का संचालन श्री हस्तीमल झेलावत और आभार प्रदर्शन श्री अनिल भंडारी ने किया।

### सम्राट खारवेल स्मृति पुस्तकालय भवन का शिलान्यास सम्पन्न

नई दिल्ली १९ नवम्बर : कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली के परिसर में सम्राट खारवेल स्मृति पुस्तकालय भवन का उद्घाटन के मुख्यमंत्री माननीय श्री जानकी वल्लभ पटनायक के करकमलों द्वारा दिनांक २९ नवम्बर को आयोजित एक भव्य समारोह में शिलान्यास किया गया। पूज्य आचार्य श्री विद्यानन्द जी महाराज के सानिध्य में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता प्रसिद्ध उद्योगपति साहू श्री रमेशचन्द्र जैन ने की। इस समारोह में बड़ी संख्या में समाज के प्रबुद्ध वर्ग उपस्थित थे।

### जैनधर्म-दर्शन का शरदकालीन शिक्षण शिविर सम्पन्न

दिल्ली १६ अक्टूबर: भोगीलाल लहेरचन्द इस्टिट्यूट ऑफ इण्डोलाजी, दिल्ली में प्रथम बार १५ दिवसीय शरदकालीन विशेष शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। दि० ३ अक्टूबर से प्रारम्भ हुए इस शिविर का उद्घाटन टाइस ऑफ इण्डिया के प्रबन्ध सम्पादक साहू रमेशचन्द्र जैन ने किया। इस शिक्षण शिविर में देश भर से चुने हुए ३५ अध्येताओं ने भाग लिया। १६ अक्टूबर को आयोजित समापन समारोह के अवसर पर श्री के० पी० ए० मेनन, कुलाधिपति, श्री लालबहादुरशास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली, प्रो० वाचस्पति उपाध्याय, प्रखर चिन्तक प्रो० नामवर सिंह, प्राकृत भाषा एवं साहित्य के मूर्धन्य विद्वान् स्वनामधन्य प्रो० सत्यरंजन बनर्जी तथा भारत सरकार के कई उच्चपदाधिकारी उपस्थित थे। अपने उद्बोधन में वक्ताओं ने शिविर के आयोजकों की सराहना की और अपने सुझाव भी दिये।



### श्रीमती विनय जैन का अनुकरणीय प्रयास

अन्य भारतीय समाजों की भांति जैन समाज में भी बढ़ते हुए आडम्बरों, फिजूलखर्ची, त्योहारों पर उपहारों के आदान-प्रदान आदि को रोकने के लिए अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस की महिला शाखा की नवनिर्वाचित अध्यक्षा श्रीमती विनय जैन ने उक्त कुप्रथा के विरोध में समाचार पत्रों और सभी स्थानकों में इस्तहार लगवा कर एक अनुकरणीय कार्य किया है और इसमें बहुत अंशों



में उन्हें सफलता भी मिली है। श्रीमती जैन ने अपने इस प्रयास की सफलता से उत्साहित होकर अब दहेज विरोधी अभियान प्रारम्भ करने का निश्चय किया है और इस कार्य में समाज से आपेक्षित सहयोग की मांग की है।

## अखिल भारतीय श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस (महिला शाखा) का अधिवेशन सम्पन्न

लुधियाना २९ नवम्बर: श्री अखिल भारतीय श्वे० स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस (महिला शाखा) का एक दिवसीय अधिवेशन स्थानीय आत्मवल्लभ पब्लिक सीनियर हायर सेकेन्डरी स्कूल के विशाल प्रांगण में सोल्लास सम्पन्न हुआ, जिसमें समाज की प्रबुद्ध महिलाओं एवं पदाधिकारियों के साथ-साथ बड़ी संख्या में महिलाओं ने भाग लिया। इस अवसर पर पच्चीस लाख रूपयों की राशि से महिलाकल्याणकोष की भी स्थापना की गयी। इस कोष के ब्याज से अर्जित धनराशि का उपयोग महिला कल्याण के कार्यों में किया जायेगा।

### डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' पुरस्कृत



पार्श्वनाथ विद्यापीठ के पूर्व शोधछात्र और वर्तमान में सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के जैन दर्शन विभाग के अध्यक्ष डॉ० फूलचन्द जैन 'प्रेमी' को पिछले दिनों दि० जैन अतिशय क्षेत्र देहरा तिजारा (अलवर-राजस्थान) में उपाध्याय श्री ज्ञानसागर जी म० सा० के सानिध्य में श्रुत संवर्धन संस्थान, मेरठ की ओर से आयोजित समारोह में बिहार के राज्यपाल श्री सुन्दरसिंह भंडारी ने प्रशस्तिपत्र, अंग वस्त्र एवं जैनरत्न की मानद् उपाधि से विभूषित करते हुए वर्ष १९९८ के सुमतिसागर स्मृतिपुरस्कार से सम्मानित किया। इसी समारोह में श्री नरेन्द्रप्रकाश जैन एवं श्री चेतनप्रकाश पाटनी को भी इसी प्रकार सम्मानित कर पुरस्कृत किया गया। पार्श्वनाथ विद्यापीठ परिवार डॉ० प्रेमी की इस उपलब्धि पर उनका हार्दिक अभिनन्दन करता है।

## शोक समाचार



## डॉ० (श्रीमती) कमलप्रभा जैन के पिता की दुःखद मृत्यु

पार्श्वनाथ विद्यापीठ की पूर्व प्रवक्ता एवं डीजल रेल कारखाना, वाराणसी के पूर्व महाप्रबंधक श्री राजेन्द्र कुमार जैन की पत्नी डॉ० (श्रीमती) कमल प्रभा जैन के पिता जम्मू निवासी श्री बलवन्त राय जैन का दिनांक १६-१२-९८ को एक कार दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। आप सफल व्यवसायी, धर्म परायण एवं उदारमना सुश्रावक थे। धर्म और साधु सन्तों के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा थी। सामाजिक और धार्मिक प्रवृत्तियों में आप सदैव अग्रणी रहते थे। आप नारी शिक्षा के प्रति विशेष रूप से समर्पित थे। आप ने अपनी पुत्रियों को उच्च शिक्षा तो दी ही साथ ही समाज में भी लोगों को नारी शिक्षा के प्रति प्रेरित किया।

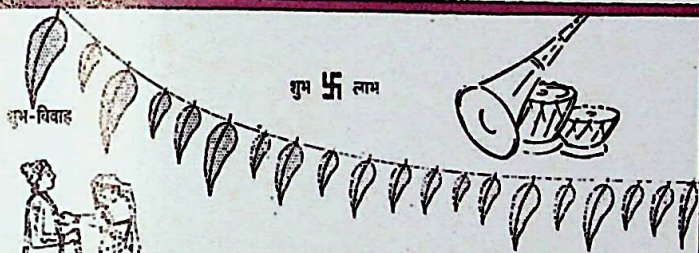
आप इतने सरल स्वभाव और साधुवृत्ति के थे कि दुर्घटना वाले दिन भी सुबह तीन बजे से अपनी धर्मपत्नी को उत्तराध्ययन सूत्र पढ़कर सुनाते रहे और संसार का मोह त्यागने की प्रेरणा देते रहे। आप अपने पीछे दो पुत्र, तीन पुत्रियाँ तथा नाती पोतों का भरापूर परिवार छोड़ गये हैं।

पार्श्वनाथ विद्यापीठ में आपकी दुःखद मृत्यु का समाचार सुनते ही एक शोक सभा आयोजित कर आपको भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी तथा मृतात्मा को शान्ति प्रदान करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना की गयी।

जैन भवन जम्मू में भी आपके शोक में एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी जिसमें समग्र जैन समाज के प्रतिनिधियों ने आपको भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।







तीज हो या त्यौहार, शादी हो या घरबार  
प्रेस्टीज निभायेगा  
भारतीय व्यंजन परम्परा को हरबार



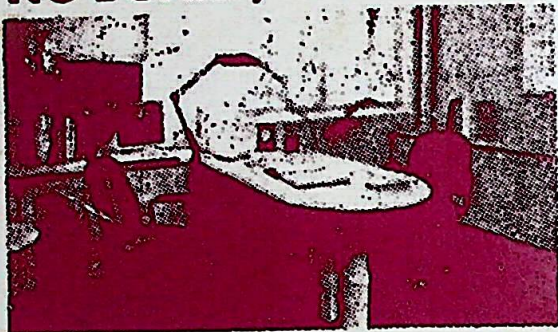
**प्रेस्टीज**

रिफाइन्ड ऑइल एवं वनस्पति

प्रेस्टीज फूड्स लिमिटेड, ३०, जगत: सम्प्रदाय, एम बाय एच रोड, इन्दौर, म.प्र. ४६१००१-२०५, ४६१००१-२०५, ४६१००१-२०५ (०३९) ४६६०९६



**NO PLY,  
NO BOARD, NO WOOD.**



**ONLY NUWUD.<sup>®</sup>**

**INTERNATIONALLY ACCLAIMED**

*Nuwud MDF is fast replacing ply, board and wood in offices, homes & industry. As ceilings.*

**DESIGN FLEXIBILITY**

*flooring, furniture, mouldings, panelling, doors, windows... an almost infinite variety of*

**VALUE FOR MONEY**

*woodwork. So, if you have woodwork in mind, just think NUWUD MDF.*

Arma Communications



E-48/12, Okhla Industrial Area,  
Phase II, New Delhi-110 020  
Phones: 632737, 633234,  
6827185, 6849679  
Tlx: 031-75102 NUWU IN  
Telefax: 91-11-6848748.



IS 12408



*The one word for  
all your woodwork*

**MARKETING OFFICES:** • AHMEDABAD: 440672, 469242 • BANGALORE: 2219219  
• BHOPAL: 552760 • BOMBAY: 8734433, 4937522, 4952648 • CALCUTTA: 270549  
• CHANDIGARH: 603771, 604463 • DELHI: 632737, 633234, 6827185, 6849679  
• HYDERABAD: 226807 • JAIPUR: 312636 • JALANDHAR: 52610, 221087  
• KATHMANDU: 225504, 224904 • MADRAS: 8257589, 8275121